इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BHDS-183

अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

खंड 1
अनुवाद का परिचय और साहित्यानुवाद 5

खंड 2
प्रशासनिक अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली 117

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. प्रो० कुलदीप चंद अग्निहोत्री
कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

प्रो. चंदन कुमार
प्रोफेसर हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. महेन्द्रपाल शर्मा
अवकाशप्राप्त प्रोफेसर, हिंदी विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रो. अनिल राय
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संकाय सदस्य
प्रो. सत्यकाम
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
प्रो. स्मिता चतुर्वेदी
प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

पाठ्यक्रम संयोजक एवं संपादक

प्रो. सत्यकाम,
हिंदी संकाय, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या	संपादन सहयोग
डॉ. ज्योति चावला सहायक प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	1, 2, 3, 5, 6	डॉ. शंभुनाथ मिश्र, परामर्शदाता (हिंदी) मानविकी विद्यापीठ, इग्नू
डॉ. हरीश कुमार सेठी सहायक प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	4, 8, 9 एवं 10	
प्रो.पूरनचंद टंडन हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	7	

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी. इग्नू, नई दिल्ली

श्रीमति सुमति नायर
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

नवम्बर, 2020

© इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN: ....

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंगः राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए भगवती विहार (नजदीक सेक्टर 2, द्वारका), उत्तम नगर नई दिल्ली–110059

मुद्रक : एजूकेशनल स्टोर्स, एस–5, बुलन्दशहर रोड़ इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट–1 गाजियाबाद (उ.प्र)–201009

पाठ्यक्रम परिचय

बी.ए. हिंदी (सामान्य/ऑनर्स) सीबीसीएस के विद्यार्थी के रूप में अब आप 'अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि' पाठ्यक्रम का अध्ययन करने जा रहे हैं। आप जानते हैं कि अनुवाद का ज्ञान आज के समय की आवश्यकता है। अनेक भाषाओं में संचित ज्ञान राशि को अनुवाद के माध्यम से अधिक से अधिक अन्य भाषा–भाषी अध्येताओं तक पहुंचाया जा सकता है। साहित्य, कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, प्रशासन, वाणिज्य आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से आप अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

'अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि' 4 क्रेडिट का पाठ्यक्रम है। अध्ययन की सुविधा के लिए इसे दो खंडों और दस इकाइयों में विभाजित किया गया है। प्रथम खंड 'अनुवाद का परिचय और साहित्यानुवाद' के अंतर्गत छः इकाइयां तथा द्वितीय खंड 'प्रशासनिक अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली' में चार इकाइयां शामिल हैं। पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार तैयार की गई है कि पहले आप अनुवाद के स्वरूप, संभावना और विस्तार क्षेत्र से परिचित हों, तत्पश्चात अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि का अध्ययन करें। इसके साथ ही प्रशासनिक और पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद का भी ज्ञान प्राप्त करें। दोनों खंडों की 10 इकाइयों के अध्ययन के पश्चात आप अनुवाद के सिद्धांत और उसकी प्रक्रिया को भली–भांति समझने में सक्षम होंगे। इस पाठ्यक्रम का विभाजन इस प्रकार किया गया है –

खंड –1

अनुवाद का परिचय और साहित्यानुवाद

इकाई 1 अनुवाद : स्वरूप और आयाम

इकाई 2 अनुवाद के प्रकार एवं क्षेत्र

इकाई 3 अनुवाद प्रक्रिया, साधन एवं पुनरीक्षण

इकाई 4 साहित्यानुवाद : एक परिचय

इकाई 5 गद्य साहित्य का अनुवाद

इकाई 6 पद्य साहित्य का अनुवाद

खंड 2

प्रशासनिक अनुवाद और पारिभाषिक शब्दावली

इकाई 7 प्रशासन की भाषा और अनुवाद

इकाई 8 पारिभाषिक शब्दावली : अवधारणा और अनुवाद

इकाई 9 प्रशासनिक पत्राचार

इकाई 10 विभिन्न विषयों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली और अभिव्यक्ति

आशा है यह पाठ्यक्रम आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं के साथ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BHDS-183

अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि

खंड

1

अनुवाद का परिचय और साहित्यानुवाद

इकाई 1
अनुवाद : स्वरूप और आयाम 7

इकाई 2
अनुवाद के प्रकार एवं क्षेत्र 19

इकाई 3
अनुवाद प्रक्रिया, साधन एवं पुनरीक्षण 39

इकाईः 4
साहित्यानुवाद : एक परिचय 55

इकाईः 5
गद्य साहित्य का अनुवाद 87

इकाई 6
पद्य साहित्य का अनुवाद 101

खंड 1 का परिचय

'अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि' पाठ्यक्रम का यह पहला खंड है। बी.ए. (सामान्य/ऑनर्स) सीबीसीएस के विद्यार्थियों के लिए यह एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम है। **'अनुवाद का परिचय और साहित्यानुवाद'** शीर्षक इस खंड में आपको अनुवाद का अर्थ, परिभाषा, विविध क्षेत्र और उपयोगिता के संबंध में विस्तार से बताया जाएगा, साथ ही वर्तमान समय में अनुवाद की स्थिति, आवश्यकता और अन्य आयामों पर भी प्रकाश डाला जाएगा। अनुवाद भिन्न भाषा–भाषियों के बीच संवाद स्थापित करने में एक सेतु का कार्य करता है। अनुवाद के ऐतिहासिक विकासक्रम को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव सभ्यता के विकास और विभिन्न भाषा–भाषी समुदायों के परस्पर मेल–जोल ने इसकी आवश्यकता को उत्पन्न किया। आज अनुवाद के विभिन्न क्षेत्र स्थापित हो चुके हैं और इसकी आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है।

साहित्य के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यिक अनुवाद दो भिन्न भाषा–भाषी समुदायों के विचार, रचनात्मकता और कलात्मक औदात्य को समझने का प्रमुख उपादान है। पाठ्यक्रम के इस खंड की इकाइयों की संरचना इस प्रकार तैयार की गई है कि आप अनुवाद के मूलभूत स्वरूप को सहजता से समझ सकेंगे। यह खंड 6 इकाइयों में विभाजित है –

इकाईः 1 'अनुवाद : स्वरूप और आयाम' में आप अनुवाद के अर्थ, परिभाषा और स्वरूप से परिचित होंगे। साथ ही अनुवाद के विभिन्न आयामों का परिचय प्राप्त करेंगे।

इकाईः 2 'अनुवाद के प्रकार एवं क्षेत्र' के अंतर्गत आप अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करेंगे। अनुवाद की आवश्यकता किन प्रमुख क्षेत्रों में पड़ती है, इसे भी आप इस इकाई में जान सकते हैं।

इकाईः 3 'अनुवाद : प्रक्रिया, साधन एवं पुनरीक्षण' अनुवाद की सैद्धांतिकी पर केंद्रित इकाई है। अनुवाद की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया होती है, जिसका ज्ञान अनुवादक को अवश्य होना चाहिए। इस इकाई में आप अनुवाद की प्रक्रिया, उसके साधन और पुनरीक्षण की आवश्यकता से परिचित होंगे।

इकाईः 4 'साहित्यानुवाद : एक परिचय' में आप अनुवाद के एक प्रमुख प्रकार 'साहित्यिक अनुवाद' का अध्ययन करेंगे।

इकाईः 5 'गद्य साहित्य का अनुवाद' के अंतर्गत गद्य साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि पर चर्चा की जाएगी।

इकाईः 6 इस खंड की अंतिम इकाई है। यह 'पद्य साहित्य' के अनुवाद पर केंद्रित है। गद्य की अपेक्षा पद्य का अनुवाद कठिन होता है। इस इकाई में इसकी प्रक्रिया और प्रविधि का सोदाहरण अध्ययन आपके लिए प्रस्तुत किया गया है।

हमें आशा है कि आप इन इकाइयों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करेंगे और अनुवाद के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक क्षेत्र का परिचय प्राप्त कर अपने अनुवाद कौशल का विकास कर सकेंगे।

इकाई 1 : अनुवाद : स्वरूप और आयाम

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा
1.2.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ
1.2.2 अनुवाद की परिभाषा
1.3 अनुवाद का स्वरूप
1.3.1 अनुवाद का व्यापक संदर्भ
1.3.2 अनुवाद का सीमित संदर्भ
1.4 अनुवाद का महत्व
1.5 अनुवाद कार्य की चुनौतियां
1.6 सारांश
1.7 बोध प्रश्न
1.8 अभ्यास के लिए प्रश्न
1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- अनुवाद के स्वरूप को विभिन्न संदर्भों में समझ पाएंगे
- प्रयोग के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व और उसकी उपयोगिता को समझ पाएंगे
- अनुवाद कार्य की चुनौतियों से अवगत हो पाएंगे, तथा
- यह समझ पाएंगे कि विविध क्षेत्रों में अनुवाद करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है।

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई इस पाठ्यक्रम की प्रथम इकाई है जिसमें सर्वप्रथम अनुवाद के स्वरूप और आयाम पर चर्चा की जाएगी। अनुवाद के अर्थ और स्वरूप पर चर्चा करते हुए ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व पर संक्षेप में चर्चा की जाएगी और साथ ही अनुवाद कार्य में अनुवादकों द्वारा अनुभव की जाने वाली विभिन्न चुनौतियों पर भी विस्तार से चर्चा होगी।

अनुवाद मानव जीवन के प्रारंभ से चली आ रही गतिविधि है। सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में भाषाओं का आदान–प्रदान एक महत्वपूर्ण परिघटना रही है।

भाषाओं में संचित ज्ञान के इस आदान–प्रदान में अनुवाद ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दृष्टि से अनुवाद का महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के स्वरूप और आयाम पर चर्चा करते हुए अनुवाद के अर्थ, महत्व, चुनौतियों आदि पर विचार किया जाएगा।

1.2 अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा

1.2.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

अनुवाद शब्द का प्रचलित अर्थ है एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना। सामान्य और व्यापक अर्थों में इसे ही अनुवाद समझा जाता है। अनुवाद शब्द के अर्थ को लेकर अलग–अलग भाषाविदों ने अपने विचार रखे हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार 'अनुवाद' शब्द का संबंध 'वद्' धातु से है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' अथवा 'कहना'। 'वद्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है और फिर उसमें 'अनु' शब्द जोड़ने से 'अनुवाद' शब्द बनता है। इस प्रकार अनुवाद शब्द का मूल अर्थ है 'पुनःकथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना'।

प्रो. हरिमोहन के अनुसार, शब्दार्थ चिंतामणि नामक कोश में अनुवाद का अर्थ दिया गया है – 'प्राप्तस्य पुनःकथने' (पहले कहे गए को फिर से कहना) या 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने' (ज्ञात अर्थ को प्रतिपादित करना)।

पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में अनुवाद शब्द का प्रयोग किसी ज्ञात बात को कहने के संदर्भ में किया है – अनुवादे चरणम्।

स्पष्ट है कि अनुवाद शब्द से तात्पर्य अनुकथन, कहे हुए को फिर से कहना, दोहराना, पुनःकथन से है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत में प्राचीन समय में गुरु द्वारा कहे गए कथन को दुहराकर स्मरण करने की परंपरा थी। ऐसा इसलिए था कि उस समय शिक्षा की मौखिक परंपरा थी।

आज के संदर्भ में और अनुवाद के अंग्रेजी पर्याय के समानांतर रखकर यदि इस शब्द को देखा जाए तो इसका अर्थ होगा एक भाषा में कहे गए कथन को दूसरी भाषा में कहना। इसे भाषांतर भी कहा जाता है। अंग्रेजी के शब्द translation की व्युत्पत्ति लैटिन के शब्द translatio से हुई है जिसका अर्थ होता है, – पार ले जाना। translation शब्द trans तथा ferre से मिलकर बना है। इस प्रकार translation शब्द का भी अर्थ हुआ – एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना।

1.2.2 अनुवाद की परिभाषा

विभिन्न अनुवाद चिंतकों ने अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। इन परिभाषाओं को अनुवाद के आधुनिक और उत्तर आधुनिक चिंतन की दृष्टि से बांटकर देखना होगा। अनुवाद का आधुनिक चिंतन अनुवाद को एक भाषिक गतिविधि मानता है जिसके अंतर्गत चिंतकों ने अनुवाद को एक भाषिक व्यवहार माना है। भाषिक गतिविधि के रूप में अनुवाद दो भाषाओं के बीच एक सेतु का काम करता है जिसकी सहायता से हम दो संस्कृतियों को जान पाते हैं। वहीं, अनुवाद का उत्तर आधुनिक या कहें कि उत्तर औपनिवेशिक चिंतन अनुवाद को भाषिक से अधिक एक सांस्कृतिक व्यवहार मानता है जिसके अंतर्गत अनुवाद क्यों किया जाता है, और उसके पीछे के कारण क्या हैं, आदि की खोज की जाती है। दोनों ही स्थितियों में चूंकि अनुवाद भाषा से होकर गुज़रता है, इसलिए हम यहां अनुवाद के दोनों ही प्रकार के प्रमुख चिंतकों की

परिभाषाएं यहां रख रहे हैं। इस क्रम में सबसे पहले हम उन चिंतकों की परिभाषाओं की चर्चा करेंगे जो अनुवाद को भाषिक गतिविधि मानते हैं –

- मूल भाषा के संदेश के समतुल्य संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। संदेशों की यह समतुल्यता पहले अर्थ के स्तर पर होती है और फिर शैली के स्तर पर।

  (नाइडा ई.ए. तथा टेबर आर. थ्योरी एंड प्रेक्टिस ऑफ ट्रांसलेशन, 1969. पृ.12)

- एक भाषा की पाठ्यसामग्री को दूसरी भाषा की समतुल्य पाठ्यसामग्री द्वारा प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।

  (कैटफर्ड जे.सी., ए लिंग्वस्टिक थ्योरी ऑफ ट्रांसलेशन : एन एस्से इन एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स, 1965, पृ.20)

- अनुवाद एक ऐसा शिल्प है जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

  (न्यूमार्क, पीटर, अ टेक्स्टबुक ऑफ ट्रांसलेशन, 1988)

- अनुवाद एक संबंध का नाम है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं।

  (हैलिडे, एम.ए., ट्रांसलेशन : द लिंग्विस्टिक साइंस एंड लेंग्वेज टीचिंग, 1964, पृ.124)

- भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम, समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन प्रक्रिया है।

  (तिवारी, भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान,1972, पृ. 18)

एक भाषिक गतिविधि के रूप में अनुवाद जहां दो भाषाओं और भाषाओं के माध्यम से दो संस्कृतियों के बीच संवाद है, वहीं उत्तर औपनिवेशिक अनुवाद चिंतन में अनुवाद की केंद्रीय इकाई संस्कृति है जिसके माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के बीच अनुवाद के मूलभूत कारणों की पड़ताल करने की कोशिश की गई है। इसके प्रमुख चिंतक हैं – सूसन बेसनेट, आंद्र लेफेवेर, मोना बेकर, हरीश त्रिवेदी, लॉरेंस वेनुटी, तेजस्विनी निरंजना, होमी भाभा, गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक आदि।

- एक समय तक हाशिये की गतिविधि माने जाने वाले अनुवाद को मानवीय आदान–प्रदान की मूलभूत क्रिया के रूप में देखा जाने लगा। (Once perceived as a marginal activity, translation began to be seen as a fundamental act of human exchange.)

  (Bassnett, Susan Translation Studies, 2002:pg 1)

- आयरिश चिंतक माइकल क्रॉनिन लिखते हैं– अनुवादक एक ऐसा यात्री है जो एक स्रोत से दूसरे स्रोत के बीच यात्रा कर रहा है। निश्चित रूप से 21वीं सदी केवल स्थानों ही नहीं अपितु समय के अंतराल के बीच यात्रा करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण सदी है। *(The translator is a traveller, someone engaged in a journey from one source to another. The twenty-first century surely promises to be the great age of travel, not only across space but also across time.)*

  (Bassnett, Susan: Translation Studies 2002: pg 1-2)

- इस आदान–प्रदान को शेरी साइमन *contact zone* कहती हैं। इसी contact zone को उसकी पारंपरिक परिभाषा की जड़ता से निकालकर शेरी साइमन नया आयाम देती है, *Traditionally a place where cultures met on unequal terms, the contact zone is now a space that is redefining itself, a space of multiplicity, exchange, renegotiation and discontinuities*. स्पष्ट है कि वे अनुवाद को विविधिता, परस्पर आदान–प्रदान, संवाद तथा असातत्य के लिए एक जगह के रूप में देखती हैं।

  *(*Bassnett, Susan and Trivedi, Harish : Post-Colonial Translation : Theory and Practice, Pg 14*)*

- सूसन बेसनेट अनुवाद को पुनर्लेखन के रूप में भी देखती है और उसके बारे में लिखती हैं– अनुवाद मूल पाठ का पुनर्लेखन है। *इसी संदर्भ में वे आगे लिखती हैं– सभी पुनर्लेखन, चाहे उनका उद्देश्य कुछ भी हो, एक विशेष विचारधारा तथा काव्यशास्त्र को द्योतित करती है और इस प्रकार किसी समाज में साहित्य के प्रभाव को एक खास तरीके से स्थापित करते हैं। पुनर्लेखन विशेष सत्ता द्वारा अपनाया जाने वाला हथकंडा है और अपने सकारात्मक प्रभाव में एक साहित्य तथा समाज के उद्भव में सहायक है।........अनुवाद का इतिहास साहित्यिक नवीनीकरण का इतिहास होने के साथ–साथ एक संस्कृति के दूसरी संस्कृति पर सत्ताकेंद्रण का इतिहास भी है।*

  Translation is a rewriting of an original text (pg.vii). All rewritings, whatever their intention, reflect a certain ideology and a poetics and as such manipulate literature to function in a given society in a given way. ----- history of translation is the history also of literary innovation, of the shaping power of one culture upon another.

  (Bassnett, Susan, Translation, Rewriting and the Manipulation of Literary Fame pg.vii)

- लॉरेंस वेनुटी के अनुसार – अनुवाद लक्ष्य–भाषा के पाठक की सुविधानुसार विदेशी पाठ के भाषाई और सांस्कृतिक अंतर का जबरन प्रतिस्थापन है।

  Translation is the forcible replacement of the linguistic and cultural difference of the foreign text with a text that will be intelligible to the target-language reader.

  (Weissbort, Daniel and Eysteinsson, Astradur (Ed.: Translation – theory and Practice: A Historical reader: Translation as Cultural Politics: Regimes of Domestication in English: Venuti, Lawrence: Oxford University Press; pg. no. 547)

- तेजस्विनी निरंजना के अनुसार – अनुवाद असमान शक्ति संबंध के लिए एक अतिरंजित रूपक है जो उपनिवेश की उपनिवेश अथवा उपनिवेशित की स्थिति को परिभाषित करता है।

  (Translation is an overarching metaphor for the unequal power relationship which defines the condition of the colonized.) (Niranjana T. *Siting Translation: History,Post-Structuralism and the Colonial Context,* Univ. of California Press.)

- वहीं होमी भाभा अपनी पुस्तक The Location of Culture में प्रकाशित अपने लेख How newness enters the world: Postmodern Space, Postcolonial Times and the Trials of Cultural Translation में अनुवाद की पूरी गतिविधि को औपनिवेशिक ढांचे से मुक्त कर उसके मायनों की ओर संकेत कर कहते हैं कि अनुवाद का काम कभी किसी एक भाषा अथवा संस्कृति की किसी दूसरी भाषा अथवा संस्कृति पर जीत स्थापित करना नही है। बल्कि यह एक ऐसी मिश्रित संस्कृति को जन्म देता है जहां दो संस्कृतियां आपस में मिलती हैं।

  (*Translation is never a site where one language-culture can claim complete victory over the other. Rather, it is a 'space of hybridity' where 'newness enters the world'.*: Baker, Mona and Saldanha, Gabriela: Routledge Encyclpedia of Translation Studies, Pg.202)

स्पष्ट है कि समय बदलने के साथ अनुवाद के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है। यद्यपि हम इस या आगे की इकाइयों में अनुवाद के भाषिक स्वरूप की ही चर्चा करेंगे किंतु शिक्षार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे अनुवाद के क्षेत्र में हो रहे विमर्श की भी जानकारी रखें। आगे हम अनुवाद के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा करेंगे जिसके अंतर्गत अनुवाद के व्यापक तथा सीमित – दोनों स्वरूपों की चर्चा होगी।

1.3 अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद के स्वरूप पर बात करते हुए उसे मूलतः दो संदर्भों में देखा गया है – व्यापक और सीमित। व्यापक संदर्भ में अनुवाद को प्रतीक सिद्धांत के रूप में देखा गया है। यानी अनुवाद मूलतः प्रतीकांतरण है। वहीं सीमित संदर्भ में अनुवाद को एक भाषिक क्रिया माना गया है जिसके अंतर्गत अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण यानी भाषांतरण है।

1.3.1 अनुवाद का व्यापक संदर्भ

चूंकि अनुवाद को यहां प्रतीक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में रखने की बात कही गई है इसलिए आइए पहले प्रतीक विज्ञान पर थोड़ी सी चर्चा कर लें।

प्रतीक विज्ञान की मूलभूत इकाई प्रतीक है। पीयर्स के मतानुसार प्रतीक वह वस्तु है जो किसी के लिए किसी अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। (A Sign…. is something that stands to some body for something else in some resepcet or capacity.) उदाहरण के लिए, यदि हम 'मेज' पर विचार करते हैं तो मेज शब्द स्वयं मेज न होकर मेज का प्रतीक मात्र है जिसका चयन हमने उस वस्तु विशेष को पहचानने के लिए किया।

प्रतीक सिद्धांत के आधार पर रोमन जैकबसन ने भाषिक पाठ के अंतरण को तीन आधारों पर देखने का प्रयास किया है।

- अंतःभाषिक अनुवाद (Intra lingual translation)
- अंतर्भाषिक अनुवाद (Inter lingual translation)
- अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद (Inter semiotic translation)

अंतःभाषिक अनुवाद से तात्पर्य है एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त पाठ को उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था में रखना अथवा प्रस्तुत करना। इसे अन्वयांतर भी कहा जाता है। स्पष्ट है कि यहां दोनों प्रतीक व्यवस्थाएं एक ही भाषा से

संबंधित होती हैं। संस्कृत में लिखी गई टीकाएं इसका उदाहरण हैं जहां जटिल संस्कृत में लिखे गए काव्य को सरल टीकाओं में व्यक्त किया गया है।

अंतर्भाषिक अनुवाद : एक भाषा के प्रतीकों में व्यक्त पाठ को दूसरी भाषा के प्रतीकों में अंतरण को अंतर्भाषिक अनुवाद कहते हैं। इसे भाषांतर भी कहा जाता है। स्पष्ट है कि अंतःभाषिक अनुवाद से अलग यह दो भाषाओं के अंतरण की क्रिया है। इस अनुवाद प्रकार में अनुवाद के लिए दो भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है। इसे ही अंग्रेजी में 'प्रॉपर ट्रांसलेशन' कहा जाता है। वर्तमान समय में अंतर्भाषिक अनुवाद के विशेष मांग है। विश्व भर में सर्जनात्मक तथा ज्ञानात्मक साहित्य के प्रसार का आधार यही है। चूंकि इसमें दोनों भाषाओं की सक्रिय भूमिका होती है इसलिए इसका महत्व और बढ जाता है।

अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद: जहां अंतःभाषिक और अंतर्भाषिक अनुवाद में प्रतीक 2 का भाषिक इकाई होना अनिवार्य है वहीं अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक 2 यानी लक्ष्य पाठ भाषिक न होकर भाषेतर होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इसमें भाषिक पाठ का अनुवाद भाषेतर इकाई में होता है। उदाहरण के लिए किसी उपन्यास या कहानी का फिल्म, नाटक या धारावाहिक में रूपांतरण। यहां अंतरण भाषिक न होकर रूपगत होता है। शरतचंद्र, प्रेमचंद, शेक्सपीयर, मन्नू भंडारी, रस्किन बॉण्ड, आदि की रचनाओं का फिल्म में रूपांतरण इसके उदाहरण हैं। प्रसिद्ध कविता का गीत में और गीत या कविता आदि का विज्ञापन के जिंगल में रूपांतरण भी अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद के उदाहरण हैं।

1.3.2 अनुवाद का सीमित संदर्भ

अनुवाद का सीमित संदर्भ अनुवाद को केवल एक भाषिक क्रिया मानता है जिसके अंतर्गत स्रोत भाषा के पाठ का लक्ष्य भाषा में अंतरण किया जाता है।

सीमित संदर्भ में अनुवाद के दो आयाम माने गए हैं:

- पाठधर्मी अनुवाद
- प्रभावधर्मी अनुवाद

पाठधर्मी अनुवाद से तात्पर्य है ऐसा अनुवाद जिसमें पाठ अर्थात स्रोत पाठ सर्वोपरि हो। ऐसे अनुवाद में अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह मूल पाठ के प्रति ईमानदार हो और अनुवाद करते समय मूल की आत्मा को बचाए रखने का सतत् प्रयास करे। अनुवादक को यहां अनुवाद प्रक्रिया में छूट लेने की सुविधा नहीं होती। अनुवादक यहां मूल पाठ के कथ्य और शिल्प दोनों के प्रति सचेत रहते हैं और उसे यथासंभव लक्ष्य भाषा में लाने का प्रयास करते हैं। कार्यालयी, विधि तथा किसी भी प्रकार के ज्ञानात्मक साहित्य के लिए पाठधर्मी अनुवाद ही बेहतर माध्यम है।

इसके विपरीत **प्रभावधर्मी अनुवाद** जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है पाठ के प्रभाव को केन्द्र में रखकर चलता है। स्रोत भाषा के पाठ का लक्ष्य भाषा के पाठक एवं समाज पर भी वैसा ही असर पड़े इसके लिए आवश्यक है कि उसे लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुसार बनाया जाए। यह तभी संभव है जब अनुवादक अनुवाद करते समय उसमें यथासंभव छूट ले। इसके लिए अनुवादक का दोनों संस्कृतियों का ज्ञान एवं समझ होना अपरिहार्य है। साहित्य के अनुवाद में विशेषतः कविता के अनुवाद में प्रभावधर्मी अनुवाद किया जाता है।

आगे अनुवाद के विभिन्न प्रकारों पर बात करते हुए हम उपर चर्चित प्रकारों को समेटते हुए और उसे और सुगम्य बनाते हुए विस्तार से वर्णन करेंगे।

1.4 अनुवाद का महत्व

मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही अनुवाद कार्य होता आया है। मनुष्य के मन में उठे विचारों की भाषा में प्रस्तुति एक तरह से अनुवाद ही है। व्यापक संदर्भ में देखा जाए तो भावों का संप्रेषण अनुवाद ही है। किंतु यदि यहां अनुवाद की इकाई अंतरभाषिक अनुवाद को माना जाए तो इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद का महत्व है। विशेष तौर पर भूमंडलीकृत विश्व की कल्पना अनुवाद के बिना लगभग असंभव सी है। विश्व के किसी भी कोने में घटित कोई भी घटना अथवा कोई भी नवाचार की जानकारी पूरे विश्व के लिए अपेक्षित है और इस पूरी प्रक्रिया में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। महत्व की दृष्टि से कुछेक क्षेत्रों की चर्चा यहां की जा रही है। अपनी समझ से इसी क्रम में अन्य क्षेत्रों को भी जोड़ा जा सकता है।

शिक्षा और अनुवाद

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का अत्यधिक महत्व है। विश्वभर में उपलब्ध ज्ञान और शोध को शिक्षार्थियों तक पहुँचाना आज बेहद आवश्यक है। अनुवाद के माध्यम से ही शिक्षार्थियों को नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाई जा सकती है। विद्यालयों में भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी एवं विश्व की अनेक भाषाएं पढ़ाई जा रही हैं। इन भाषाओं के ज्ञान से बच्चे न केवल ज्ञान की दृष्टि से समृद्ध हो रहे हैं, अपितु वे व्यापक स्तर पर विश्व नागरिक भी बन रहे हैं उनके लिए शिक्षा केवल उनके क्षेत्र अथवा राष्ट्र तक सीमित नहीं है अपितु वे ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न अनुभवों से भी परिचित हो पा रहे हैं। साथ ही, वे बेहद कम आयु में ही कई भाषाओं के बीच संवाद को न केवल समझ पाते हैं अपितु अनुवाद भी कर पाते हैं।

पर्यटन और अनुवाद

पिछले कुछ दशकों में पर्यटन एक बड़े व्यवसाय के रूप में उभरा है। दुनिया भर से जिज्ञासु लोग विभिन्न देशों एवं उनकी संस्कृतियों को जानने के लिए भ्रमण करते हैं। पर्यटन के क्षेत्र में इस हलचल के चलते अनुवाद का महत्व और अधिक बढ़ गया है। विभिन्न पर्यटन स्थलों के विषय में जानकारी लगभग सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में उपलब्ध है। सूचना पट्ट, ब्रोशर्स, पंफलेट, मार्गदर्शिका आदि आज विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होती है जिनकी सहायता से विभिन्न भाषा–भाषी पर्यटक अपनी मूल भाषा अथवा अंग्रेजी आदि में सूचना प्राप्त कर सकते हैं।

प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद

भारत के विभिन्न प्रदेशों की राजभाषा उनके क्षेत्र की प्रमुख भाषा है। हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने के बावजूद यह प्रावधान है कि जब तक सभी क्षेत्रों में हिंदी लागू नहीं हो जाती तब तक अंग्रेजी सह–राजभाषा के रूप में उपयोग में लाई जाती रहेगी। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भी प्रशासनिक स्तर पर द्वि भाषा की स्थिति बनी हुई है जिसके चलते प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का अत्यधिक महत्व है। इसी के परिणामस्वरूप नियम, कानून, आदेशादि मूलतः अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं और हिंदी की अनिवार्यता के चलते उनका हिंदी अनुवाद भी अनिवार्य है। स्थिति यह है कि प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी अनुवाद की भाषा बनकर रह गई है। किंतु यह भी सत्य है कि हिंदी की अनिवार्यता के चलते विभिन्न विभागों, अनुभागों, मंत्रालयों आदि में अनुवादकों की मांग लगातार बनी रहती है और बड़ी संख्या में वर्षभर अनुवादकों की भर्ती होती है।

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

जनसंचार माध्यमों में अनुवाद

जनसंचार का लगभग पूरा व्यवसाय अनुवाद पर केंद्रित है। 24 घंटे समाचार प्रस्तुति की मांग और समाचार–पत्रों के प्रकाशन के चलते यहां व्यापक स्तर पर अनुवाद कार्य होता है। पत्रकारिता, मुख्यधारा की इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक समाचारों और जानकारियों की मांग के चलते जनसंचार के क्षेत्र में अनुवाद और अनुवादकों की मांग अनवरत बनी रहती है। दुनिया–भर से आ रही सूचनाओं को देश के गांव, शहर और कस्बों तक पहुँचाने की चुनौती ने मीडिया के क्षेत्र में अपार संभावनाएं पैदा की हैं। मीडिया के अतिरिक्त विज्ञापन, कार्टून उद्योग, फिल्मों में डबिंग, सबटाइटलिंग, वॉयस ओवर आदि की मांग ने लिखित से लेकर मौखिक अनुवाद तथा आशु अनुवाद आदि के लिए मांग पैदा की है। आज जनसंचार माध्यम सर्वाधिक मांग में है। गीत से लेकर, विज्ञापन, वृत्तचित्र, फिल्में, समाचार आदि सभी क्षेत्रों में अद्यतन सूचना प्रदान करने तथा बाज़ार के तय लक्ष्यों को हासिल करने मे अनुवाद सक्रिय भूमिका अदा कर रहा है।

साहित्य और अनुवाद

साहित्य का मूल उद्देश्य मनुष्य को सहृदय बनाना अथवा बेहतर मनुष्य बनाना है। इस प्रक्रिया में यदि विश्व साहित्य को भी शामिल किया जा सके तो विपुल साहित्य के अध्ययन से एक विश्व संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय साहित्य के साथ–साथ फ्रांसीसी एवं रूसी साहित्य के अध्ययन का विशेष महत्व है। विश्व साहित्य पढ़कर हमने जाना कि दमनकारी शक्तियों से संघर्ष समय–समय पर विभिन्न देश और संस्कृतियां करते रहे हैं। उनके संघर्ष में अपने अनुभवों को मिलाकर एक नए साहित्य का उद्भव हुआ जिसके परिणामस्वरूप न केवल व्यापक जागरूकता का उदय हुआ अपितु साहित्य में भी विकास देखा गया। नाटक एवं उपन्यास के क्षेत्र में हुए परिवर्तनकारी कार्यों से इन क्षेत्रों में भी विकास देखा गया। आज विश्व–भर में विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो रहे हैं। साहित्य के माध्यम से हम किसी समाज को बेहतर जान पाते हैं। साहित्य की महान कृतियों के आधार पर बनी फिल्मों का इसमें विशेष योगदान है। बांग्ला, तमिल, मलयालम, पंजाबी आदि भाषाओं में तथा भाषाओं से लिए गए उत्कृष्ट साहित्य ने विभिन्न भाषी समाजों को लाभान्वित किया है। विश्व साहित्य और तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से हम किसी समाज की सोच की निर्माण पद्धति को बेहतर समझ पाते हैं और अपने समाज के सर्वांगीण विकास में योगदान दे पाते हैं। विभिन्न भाषाओं के साहित्य को पाठ्यक्रम में लगाने से छात्रों का दायरा भी विकसित होता है। निसंदेह इन सभी के पीछे अनुवाद की अनिवार्य भूमिका है।

सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद

जैसी कि पहले चर्चा की जा चुकी है कि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई क्रांति ने पूरे विश्व को सूचनाओं से भर दिया है। विभिन्न गेजेट्स के माध्यम से हम हर समय सूचनाओं से लबरेज रहते हैं। आज पूरे विश्व में व्यापक स्तर पर सूचनाओं का आदान–प्रदान चल रहा है जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर व्यापार, पर्यटन, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में नित नए शोध और ज्ञान के आयाम जुड़ रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व को एक गांव में बदल कर रख दिया है जहां बड़ी ही सुगमता से न केवल सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है अपितु प्रसार के नए आयाम भी खुलते हैं। विश्व में कितनी भाषिक विविधता के बावजूद यह काम आज उतना कठिन नहीं रह गया है जिसके मूल में निश्चित रूप से अनुवाद है।

यहां हमने शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए कुछेक क्षेत्रों की चर्चा की जहां अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व को भी रेखांकित किया जा सकता है।

1.5 अनुवाद कार्य की चुनौतियां

इस इकाई के पिछले भाग में यह चर्चा की जा चुकी है कि अनुवाद दो भाषाओं तथा दो संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। दो संस्कृतियों के बीच संवाद का यह कार्य जितना महत्वपूर्ण है उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। अनुवाद के संदर्भ में प्रायः कहा जाता है कि अनुवाद कार्य लगभग असंभव है। सर्जनात्मक साहित्य और उसमें भी कविता के अनुवाद में तो यह कथन लगभग सत्य ही है। किंतु इस लगभग असंभव कार्य को अनुवादक अपनी समझ, निष्ठा और प्रतिभा से संभव बना पाते हैं। प्रत्येक पाठ की प्रकृति, उसकी भाषा, पाठ की संस्कृति, कथ्य और शैली सभी के प्रति संवेदनशील होकर ही बेहतर अनुवाद संभव है। अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष अनेक चुनौतियां होती हैं जिनका सामना करते हुए उन्हें मूलभाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के प्रति न्याय करना होता है और पाठ की मूल आत्मा को बचाना होता है। अनुवाद कार्य के दौरान अनुवादक के समक्ष आने वाली चुनौतियां कुछ इस प्रकार हैं –

- अनुवादक को दो भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य है लेकिन उसके साथ–साथ उन्हें दोनों भाषाओं की संस्कृति का ज्ञान होना भी उतना ही आवश्यक है।
- अनुवाद में सहजता, स्पष्टता और भाषा में प्रवाह होना चाहिए।
- दो भाषाओं के ज्ञान के साथ–साथ दोनों भाषाओं की प्रकृति की भी समझ हो।
- भाषा तथा व्यवहार की विभिन्न बारीकियों की समझ अनुवाद के लिए बेहद ज़रूरी है। नाते–रिश्तेदारी के शब्द, विभिन्न अभिव्यक्तियों, भाषिक प्रयुक्तियों, मुहावरे–लोकोक्तियों आदि की समझ से भाषा की समझ पूरी होती है। अनुवादक के सामने यह एक बड़ी चुनौती होती है कि वे भाषा को समग्र में समझें और अनुवाद करते समय पूर्णतः न्याय कर सकें।
- कोई भी पाठ किसी कालखंड में लिखा जाता है। यह ज़रूरी नहीं कि उसी कालखंड में उसका अनुवाद भी हो रहा हो। अनुवादक के समक्ष यह एक चुनौती की तरह है कि अनुवाद करते समय वे किस कालखंड को ध्यान में रखते हुए पाठ का अनुवाद करे। ऐसे में अनुवाद की मांग को ध्यान में रखते हुए अनुवाद कार्य किया जाता हैं।
- कोई भी पाठ किसी विशेष शैली में लिखा जाता है चाहे वह सर्जनात्मक साहित्य हो या गैर–सर्जनात्मक साहित्य। अनुवाद करते समय तथा पाठ के प्रति निष्ठा को बचाए रखने और उसके प्रभाव को बनाए रखने के लिए पाठ की शैली के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए।
- अनुवादक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वे अपनी क्षमता और सीमा दोनों को पहचानें। केवल आर्थिक लाभ के लिए किसी भी पाठ का अनुवाद कर देना बेहद हानिकारक सिद्ध हो सकता है।
- विषय विशेष में अनुवाद करने से पहले यह आवश्यक है कि अनुवादक समय–समय पर विषय विशेष में उपलब्ध अद्यतन ज्ञान से परिचित हो।
- अनुवादक के लिए यह भी आवश्यक है कि विषय विशेष के अनुवाद में सहायक

उपकरण जैसे – कोश, पारिभाषिक शब्दावलियां आदि कौन–कौन सी हैं तथा वे कहां से उपलब्ध हो सकती हैं। साथ ही उन्हें इन क्षेत्रों में उपलब्ध अद्यतन सामग्री की भी जानकारी होनी चाहिए।

- साहित्यानुवाद हमेशा से अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। साहित्यानुवाद करने से पहले अनुवादक को अपनी पात्रता की निष्पक्ष जांच कर लेनी चाहिए।
- साहित्य के अनुवाद के लिए आवश्यक है कि अनुवादक भी उतना ही सहृदय हो। अन्यथा रचनाकार की मनःस्थिति तक पहुँचना कठिन हो जाता है। साथ ही, साहित्यानुवाद करते हुए यह भी आवश्यक है कि पाठ का गहन अध्ययन किया जाए तथा उसकी विभिन्न अर्थछवियों को पकड़ने का प्रयास किया जाए।
- अनुवादक अपने किए गए अनुवाद के प्रति तटस्थ तथा निरपेक्ष हो। तटस्थ होकर ही वे अपने अनुवाद का सही मूल्यांकन कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर पाठ के पुनरीक्षण में अनुवादक से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वे पुनरीक्षक के मत को न केवल सुनें, अपितु आवश्यक हो तो उसमें परिवर्तन भी स्वीकार करें।
- अनुवाद कार्य वास्तव में एक जटिल कार्य है। अनुवादक को अनुवाद के समय अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में यह भी आवश्यक है कि अनुवादक अपना संयम न खोएं और बेहतर अनूदित पाठ निर्माण में यथासंभव योगदान दें।

1.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने अनुवाद के स्वरूप और विविध आयामों के बारे में जानकारी प्राप्त की। किसी भी विकासशील समाज के लिए अनुवाद अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान परिस्थितियों में तो इस कथन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। बहुसांस्कृतिकता और बहुभाषिकता आज हमारी अनिवार्यता बन गई है जिसमें अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा से लेकर व्यापार, प्रशासन से लेकर पर्यटन, ज्ञान–विज्ञान, जनसंचार, कार्टून, विज्ञापन आदि कोई भी क्षेत्र अनुवाद से अछूता नहीं है। प्रतिस्पर्धा के इस समय में जहां पूरा विश्व आपकी ओर निगाहें उठाए देख रहा हो, वहां भाषा, संस्कृति, प्रौद्योगिकी, सूचना, कला, साहित्य किसी भी क्षेत्र में अद्यतन जानकारियों से लैस होना और समय की मांग के अनुसार स्वयं को बदलना हमारे समय का मूल तत्व बनता जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व के साथ–साथ रोज़गार के अवसर इस ओर संकेत करते हैं कि अनुवाद और अनुवाद अध्ययन का भविष्य स्वर्णिम है। मशीनी अनुवाद की शुरुआत ने इसके विकास को एक नया आयाम प्रदान किया है। लेकिन इस सबके साथ ही अनुवादक की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। चूंकि दो भाषाओं, दो संस्कृतियों तथा ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बीच संवाद का माध्यम अनुवाद है, इसलिए अनुवादक की जिम्मेदारी दोहरी हो जाती है और उसके समक्ष विभिन्न चुनौतियां भी हैं जिनका सामना करते हुए उन्हें निष्ठापूर्वक अपनी भूमिका का निर्वाह करना है। अनुवादक की सूझबूझ से ही यह तय होगा कि किस पाठ का अनुवाद किस शैली और किस प्रकार से होगा। अनुवादक की इसी भूमिका की ओर संकेत करते हुए इस क्रम में अगली इकाई है अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार जिसमें अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों और प्रकारों पर विस्तार से चर्चा की

जाएगी और इस पर भी चर्चा होगी कि पाठ विशेष का अनुवाद करते समय अनुवाद की कौन सी रणनीति अधिक उपयुक्त होगी।

1.7 बोध प्रश्न

1. अनुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ .... है। (पुनःकथन/पूर्वकथन)
2. अनुवाद को अंग्रेजी में .... कहा जाता है। (ट्रांसफर/ट्रांसलेशन)
3. अनुवादक के लिए आवश्यक है कि उन्हें दो भाषाओं के साथ दो .... का भी ज्ञान हो। (संस्कृतियों/परिभाषाओं)
4. ....अनुवाद के साधन/उपकरण हैं। (कोश/परिभाषाएं)
5. अनुवाद एक बेहद ....कार्य है। (सरल/चुनौतीपूर्ण)
6. अनुवाद दो भाषाओं के बीच .... का काम करता है। (समीक्षा/सेतु)
7. .... का काम पाठ की निष्पक्ष जांच करना एवं उसमें सुधार करना है। (मूल्यांकनकर्ता/पुनरीक्षक)

1.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद शब्द से क्या अभिप्राय है? अनुवाद के अर्थ पर प्रकाश डालिए।
2. विभिन्न चिंतकों द्वारा दी गई अनुवाद की परिभाषाओं की चर्चा कीजिए।
3. अनुवाद के स्वरूप से क्या तात्पर्य है?
4. अनुवाद के सीमित संदर्भ पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. 21वीं सदी में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
6. 'अनुवाद एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है।' इस कथन के आलोक में अपनी राय व्यक्त कीजिए।
7. 'साहित्यानुवाद एक बेहद जटिल कार्य है।' कथन की व्याख्या कीजिए।

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- प्रो. हरिमोहन, अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
- नवीन, देवशंकर, अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, प्रथम संस्करण 2016
- गुप्ता, नीता (संपा), अनुवाद शतक विशेषांक 100–101, भारतीय अनुवाद परिषद, अंक जुलाई–दिसंबर 1999
- गुप्ता, नीता (संपा), अनुवाद शतक विशेषांक 102–103, भारतीय अनुवाद परिषद, अंक जनवरी–जून 2000
- तिवारी, भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रविधि, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011

- Bassnett, Susan. (2004) : Translation Studies. Shanghai: Shanghai Foreign Language Education Press.
- Weissbort, Daniel and Eysteinsson, Astradur (Ed). (2006).: Translation – Theory and Practice: A Historical Reader. Oxford University Press
- Lefevere, Andre.(2004):Translation, Rewriting and the Manipulation of LiteraryFame.Shanghai: Shanghai Foreign Language Education Press.
- Venuti, Lawrence.(2004). The Translator's Invisibility : A History of Translation. Shanghai: Shanghai Foreign Language Education Press.
- Niranjana T. *(1992):Siting Translation:History,Post-Structuralism and the Colonial Context,* Univ. of California Press
- Baker, Mona and Saldanha, Gabriela (Ed.),(1998) : Routledge Encyclopedia of Translation Studies, Routledge. London and New York
- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (Ed.) : Post-Colonial Translation : Theory and Practice. Routledge.London and New York

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पुनःकथन
2. ट्रांसलेशन
3. संस्कृतियाँ
4. कोश
5. चुनौतीपूर्ण
6. सेतु
7. पुनरीक्षक

इकाई 2 : अनुवाद के प्रकार एवं क्षेत्र

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुवाद के प्रकार

2.2.1 विभिन्न अनुवाद चिंतकों के अनुसार अनुवाद के प्रकार

2.2.2 अनुवाद के विविध प्रकार

2.3 विविध क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता

2.4 अनुवाद के विविध क्षेत्र

2.4.1 प्रशासनिक साहित्य और अनुवाद

2.4.2 बैंकिंग और अनुवाद

2.4..3 विधि साहित्य और अनुवाद

2.4.4 मीडिया और अनुवाद

2.4.5 सर्जनात्मक साहित्य और अनुवाद

2.4.5.1 काव्यानुवाद

2.4.5.2 कथा साहित्य का अनुवाद

2.4.5.3 नाट्यानुवाद

2.4.5.4 मुहावरों, लोकोक्तियों का अनुवाद

2.4.6 तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद

2.4.7 पर्यटन और अनुवाद

2.4.8 शिक्षा और अनुवाद

2.5 सारांश

2.6 बोध प्रश्न

2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- अनुवाद के स्वरूप को समझ पाएंगे और इसके विभिन्न प्रकारों के विषय में जान पाएंगे
- अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त कर पाएंगे
- अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का प्रयोग किन–किन क्षेत्रों में होता है, यह समझ पाएंगे
- विविध क्षेत्रों में अनुवाद करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है, यह समझ सकेंगे,

2.1 प्रस्तावना

अनुवाद कर्म सदियों से चलता आ रहा है। यूं कहें कि अनुवाद की एक लम्बी परम्परा रही है। भारतीय संदर्भ में देखें तो भक्तिकाल में विशेष रूप से बड़ी मात्रा में अनुवाद हुए हैं। वर्तमान संदर्भ में अनुवाद से तात्पर्य ट्रांसलेशन प्रॉपर से हो जाता है किन्तु भारतीय साहित्य में अनुवाद के विभिन्न रूप प्रारंभ से देखे जा सकते हैं। इसी आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की बात कही गई है। प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद के विभिन्न प्रकारों पर विस्तार से चर्चा करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि अनुवाद के इन विभिन्न प्रकारों की किन–किन क्षेत्रों और स्थितियों में आवश्यकता पड़ती है।

यदि इस सदी को अनुवाद की सदी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत के संदर्भ में कहा जाए तो इसके पीछे कई कारण हैं। वर्तमान युग अत्यधिक तकनीकी विकास का युग है। जहां एक सूचना को विश्व के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचने में केवल कुछ क्षण लगते हैं वहां अनुवाद की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होगी इसका अंदाजा स्वयं लगाया जा सकता है। किंतु भारत के संदर्भ में इस तस्वीर का एक पहलू और भी है जिसका सीधा सम्बन्ध भारत की लम्बे समय तक चली पराधीनता से है। हम सभी जानते हैं कि भारत लम्बे समय तक अंग्रेजी उपनिवेश रहा है। उससे पूर्व भी मुगल शासनकाल में यहां की राजभाषा अरबी–फारसी रही है जिस कारण आम जन तक सूचना पहुँचाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता रहती आई है।

अंग्रेजी शासनकाल में भारत की कामकाज की भाषा अंग्रेजी उनके जाने के बाद आज भी चल रही है। आज भी अधिकांश कामकाज अंग्रेजी में होता है और फिर उसका अनुवाद किया जाता है। इस तरह हिंदी तथा अन्य भाषाएं अनुवाद की भाषा बनती जा रही हैं। मूल लेखन अंग्रेजी में होने और भारतीय भाषाओं को राजभाषा या क्षेत्रीय भाषा का दर्जा मिले रहने के कारण अनुवाद भारतीय संदर्भ में और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद के विविध प्रकारों और क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा करेंगे तथा जानने की कोशिश करेंगे कि इन क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता किस प्रकार है तथा अनुवाद करते समय क्या–क्या सावधानी बरते जाने की आवश्यकता होती है।

2.2 अनुवाद के प्रकार

2.2.1 विभिन्न अनुवाद चिंतकों के अनुसार अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के स्वरूप और प्रकारों पर बात करते हुए विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग तरीकों से वर्गीकरण किया है।

यूजीन नायडा के अनुसार अनुवाद के तीन प्रकार हैं:

1. शाब्दिक अनुवाद
2. भावानुवाद; और
3. पर्याय के आधार पर अनुवाद

इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाई में हम यह चर्चा कर चुकें हैं कि रोमन जैकबसन के अनुसार अनुवाद तीन प्रकार से हो सकता है :

1. अंतःभाषिक अनुवाद
2. अंतर्भाषिक अनुवाद
3. अंतर्प्रतीकात्मक अनुवाद

इसी तरह डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद का वर्गीकरण चार मुख्य आधारों पर किया है। ये हैं –

1. गद्यत्व–पद्यत्व
2. साहित्यिक विधा
3. विषय
4. अनुवाद की प्रकृति

इसी तरह डॉ. नगेन्द्र के अनुसार अनुवाद के प्रकार–भेदों के कई आधार हैं :

1. भाषिक क्षेत्र के अनुसार
2. विषय के अनुसार
3. विधा के अनुसार
4. पद्धति या प्रक्रिया के अनुसार
5. उद्देश्य अथवा प्रयोजन के अनुसार

2.2.2 अनुवाद के विविध प्रकार

विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण को आधार मानकर अनुवाद के निम्नलिखित प्रकार निश्चित किए जा सकते हैं :

शब्द–प्रति–शब्द अनुवाद

शब्द–प्रति–शब्द अनुवाद से तात्पर्य ऐसे अनुवाद से है जिसमें अनुवाद की इकाई वाक्य न होकर शब्द होता है। इस तरह के अनुवाद के संदर्भ बाइबिल के प्रारंभिक अनुवादों में मिल सकते हैं। बाइबिल के अनुवाद को लेकर पश्चिम में हुई बहस में कुछ लोग इस बात को कहते थे कि बाइबिल जैसी धार्मिक एवं पवित्र पुस्तक का अनुवाद करने में किसी भी प्रकार की छूट नहीं ली जा सकती। शब्द–प्रति–शब्द का एक उदाहरण यहां प्रस्तुत है :

Sohan is a good boy

सोहन है एक अच्छा लडका।

स्पष्ट है कि इस प्रकार का अनुवाद वास्तव में अनुवाद न होकर स्रोतभाषा के शब्द इसे अनुवाद चिंतन जगत के अनुवाद का प्रकार नहीं माना जाता क्योंकि इस आधार पर किया गया, अनुवाद निकृष्ट कोटि का होता है के स्थान पर लक्ष्यभाषा के शब्द को रख देना भर है।

शाब्दिक अनुवाद

शाब्दिक अनुवाद में अनुवाद की इकाई वाक्य होती है। शाब्दिक अनुवाद मूलतः अधिक मूलनिष्ठ होता है। इसमें यथासंभव मूलपाठ का अनुवाद कर दिया जाता है। अनुवाद करते समय अनुवादक मूलपाठ के प्रत्येक शब्द, उपवाक्य, वाक्य आदि का ध्यान रखते हैं। इस अनुवाद में मूल के किसी भी शब्द की उपेक्षा नहीं की जाती।

शाब्दिक अनुवाद का प्रयोग विज्ञान, तकनीकी, विधि, कार्यालयी आदि साहित्य के लिए होता है जहां सूचना का महत्व अधिक होता है।

शाब्दिक अनुवाद का प्रयोग साहित्य में भी होता है। किन्तु सर्जनात्मक साहित्य में यह अनुवाद पूर्णतः सफल नहीं होता। साहित्यिक अनुवाद में अभिधा से अधिक लक्षणा तथा व्यंजना शब्द शक्तियों का महत्व होता है। इसलिए वहां अनुवाद की इकाई वाक्य न होकर भाव होता है। शाब्दिक अनुवाद एकदम स्पष्ट तथा तर्कसंगत होता है। इस अनुवाद में अनेकार्थता की स्थिति नहीं होती। ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

उदाहरण :

- Please enclose a list of offficers.

  कृपया अधिकारियों की सूची संलग्न करें।

- The Chief guest inaugurated the programme.

  मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

भावानुवाद

जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है कि अनुवाद के इस प्रकार की इकाई भाव है। अनुवादक यहां भाव को केन्द्र में रखकर अनुवाद करते है। भाव का यह आधार वाक्य, पदबंध, अनुच्छेद अथवा पूरा पाठ कुछ भी हो सकता है। इस प्रकार के अनुवाद का प्रयोग साहित्यानुवाद के लिए होता है। अनुवादक यह प्रयास करते हैं कि साहित्यानुवाद करते समय वे मूल का सा आस्वाद अनुवाद में भी ला सकें। इसके लिए वे मूल से मिलते भावों को लक्ष्यभाषा तथा संस्कृति में खोजकर अनुवाद करने का प्रयास करते हैं।

अनुवाद की यह पद्धति अपेक्षतया जटिल है क्योंकि इसमें अनुवादक के लिए केवल दो भाषाओ का ज्ञान होना ही आवश्यक नहीं अपितु दोनों की संस्कृतियों की भी गहरी समझ होना आवश्यक है।

मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अनुवाद इसके उदाहरण हैं जिसमें अनुवादक शब्दों का अनुवाद न कर भावों के आधार पर लक्ष्यभाषा में उसके समतुल्य की तलाश करते हैं। उदाहरणस्वरूपः

- Empty vessels make much noise.

  समतुल्य–थोथा चना बाजे घना

- It was raining cats and dog.

  समतुल्य–बड़ी मूसलाधार बारिश हो रही थी।

- Make hay while the sun shines

  समतुल्य–बहती गंगा में हाथ धोना

छायानुवाद

छायानुवाद में मूल रचना की छाया के आधार पर एक नई रचना का सृजन किया जाता है। अनुवाद शब्द या वाक्य किसी इकाई से बंधे नहीं होते। अपितु वे मूल रचना का प्रभाव ग्रहण कर उसे अपने देश–काल, स्थिति अथवा रुचि के अनुसार रचते हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने शेक्सपीयर के नाटक मर्चेंट ऑफ वेनिस का अनुवाद करते

समय इसी तकनीक का अनुसरण किया था तथा पात्रों, स्थानों आदि के नामों का भारतीयकरण कर दिया था।

छायानुवाद पर बात करते समय एक दुविधा उत्पन्न होती है कि यह यदि छायानुवाद है तो रूपांतरण अथवा पुनःसृजन किसे कहा जाए। अनुवाद के इन प्रकारों पर बात करते हुए यह स्पष्ट करने की कोशिश की जाएगी कि इन सब में मूल अंतर क्या है।

रूपांतरण

रूपांतरण के अंतर्गत स्रोतभाषा के कथ्य को लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करते समय उसमें विधागत परिवर्तन किया जाता है। स्पष्ट है कि छायानुवाद में अनुवादक मूल की छाया लेकर स्वतंत्र रचना को आकार देते हैं किंतु विधागत परिवर्तन नहीं किया जाता जबकि रूपांतरण के अंतर्गत यह परिवर्तन विधागत यानी फॉर्म के आधार पर भी होता है। रूपांतरण के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। प्रसिद्ध उपन्यासों अथवा कहानी पर बनी फिल्में, उपन्यास अथवा कहानी की मंचीय प्रस्तुति अथवा उसका नाटकीयकरण कविता की पंक्तियों पर गीतों का सृजन वर्तमान विज्ञापन युग में तो कविताओं अथवा गीतों की प्रसिद्ध पंक्तियों को आधार बनाकर विज्ञापनों का भी सृजन हो रहा है। ये सभी रूपांतरण के उदाहरण हैं जहां अनुवादक अनुवाद के सीमित दायरे में न रहकर अधिक सृजनशील हो जाते हैं।

अनुसृजन अथवा पुनःसृजन

सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए अनुसृजन अथवा पुनःसृजन का प्रयोग किया जाता है। किन्तु कविता के अनुवाद के संदर्भ में कहा जाए तो यह अधिक सटीक बैठता है जहां अनुवादक अनुवाद करते समय उसमें इतना डूब जाते हैं कि अनुवाद के पश्चात लगभग एक नई कृति हमारे समक्ष होती है। इस प्रकार के अनुवाद के लिए अनुवादक का भाषा और संस्कृति से परिचय के अतिरिक्त विधा विशेष की गहरी समझ या सटीक शब्दों में कहें तो सहृदय होना आवश्यक है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध भक्तिकालीन साहित्य इसका उचित उदाहरण है। संस्कृत की कालजयी रचनाओं का विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध संस्करण पुनःसृजन के बेहतरीन उदाहरण हैं। वाल्मीकि कृत रामकथा पर पुनःसृजित विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध रचनाओं को अनुवाद नहीं अपितु मूल की ही श्रेणी में रखकर देखा जाता है। आदिकवि वाल्मीकि के अतिरिक्त वेदव्यास, कालिदास, बाणभट्ट, भवभूति, जयदेव आदि रचनाकारों का कालजयी साहित्य विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं की विरासत बना है। इन विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध रामकथा मूल की नकल या अनुसरण न होकर अपने देश–काल, समाज, परिवेश, संस्कृति और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रची गई हैं जिनका स्रोत तो एक ही है लेकिन निर्माण बिल्कुल भिन्न है। नरसी मेहता द्वारा गुजराती में, शंकरदेव द्वारा असमिया में, सरलादास द्वारा ओड़िया में, चंडीदास दास बांग्ला में, ज्ञानदेव द्वारा मराठी में महाभारत अथवा श्रीमद्भागवत् के कुछ अंशों का पुनर्सृजन किया। इसी तरह, विभिन्न भाषाओं में मिलने वाले रामकथा में पुनर्सृजन अथवा अनुसृजन तुलसीदासकृत रामचरितमानस, तेलगू में लिखित रंगनाथ रामायणम्, बांग्ला में कृतिवास रामायण, असमिया में सप्तकंद रामायण इसके उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

टीकानुवाद

टीकानुवाद का भारत में लम्बा इतिहास है। इसमें किसी ग्रंथ विशेष की उसी या अन्य भाषा में टीका या भाष्य लिखा जाता है। टीकानुवाद करने का प्रमुख उद्देश्य

स्रोतभाषा में उपलब्ध पाठ को उसके सरलतम रूप में उसी या किसी अन्य भाषा में रखा जाता है ताकि साधारण पाठक भी पाठ विशेष का मर्म प्राप्त कर सकें। इसे ही व्याख्यानुवाद भी कह सकते हैं। भारत में संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि में बडी मात्रा में टीकाएं लिखी गई हैं। गीता पर विभिन्न भाषाओं में लिखे गए भाष्य इसके उदाहरण हैं।

सारानुवाद

सारानुवाद में पूरे पाठ का अनुवाद न होकर केवल उसके सार का अनुवाद किया जाता है। यह एक जटिल एंव श्रमसाध्य प्रक्रिया है क्योंकि सारानुवाद की आवश्यकता समाचार एजेंसियों, कार्यालयी साहित्य, विधि साहित्य आदि में पड़ती है। विभिन्न सरकारी अथवा गैरसरकारी दफ्तरों में बनने वाली भारी भरकम रिपोर्ट को पूरा प्रस्तुत करना संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति में उसके सार मात्र का अनुवाद किया जाता है। किंतु इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को बेहद सावधानी बरतनी होती है क्योंकि अनुवाद करते समय उसे यह ध्यान रखना होता है कि पाठ का सार करते हुए कोई भी महत्वपूर्ण बिन्दु छूट न जाए।

आशु अनुवाद

आशु अनुवाद या भाषान्तरण से तात्पर्य उस अनुवाद से है जिसमें अनुवादक के पास अनुवाद करने के लिए अधिक समय नहीं होता। इस अनुवाद की आवश्यकता उस स्थिति में पड़ती है जब दो वक्ता आपस में बात कर रहें हों या करना चाहते हों लेकिन दोनों को एक–दूसरे की भाषा न आती हो। ऐसी स्थिति में दुभाषिये, जिन्हें दोनों भाषाओं का ज्ञान हो, मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। आशु अनुवादक यानी दुभाषिये की जरूरत तब पड़ती है जब दो देशों के प्रतिनिधि किन्हीं राजनीतिक मुद्दों पर आपस में बात करते हैं। इन्हें अंग्रेजी में *interpretor* कहा जाता है। आशु अनुवाद का आधार मौखिक भाषा होती है।

पुनःअनुवाद

पुनःअनुवाद में स्रोतभाषा के पाठ को पहले लक्ष्यभाषा में अनुवाद करवाकर किसी अन्य अनुवादक से पुनः स्रोतभाषा में अनुवाद करवाया जाता है। हम जानते ही हैं कि स्रोतपाठ और लक्ष्यपाठ कभी भी समान नहीं हो सकते। अनुवाद की प्रक्रिया में कुछ जुड़ता भी है और कुछ छूटता भी है। किंतु अनुवाद करके यदि हम स्रोतपाठ के ज्ञान को प्राप्त कर सकें तो वह अनुवाद सफल माना जाता है। स्रोतपाठ और लक्ष्यपाठ में जो अंतर आ जाते हैं उसकी जांच के लिए पुनःअनुवाद पद्धति का सहारा लिया जाता है। भावों की व्याख्या, शब्दों की अर्थ–संकल्पना, वाक्य–विन्यास, सांस्कृतिक प्रभाव आदि विभिन्न स्तरों पर ये अंतर देखने को मिलते हैं। पुनःअनुवाद करवाकर भी यदि मूल की आत्मा पर बहुत असर नहीं पड़ता तो उस अनुवाद को सफल अनुवाद माना जाता है।

लिप्यंकन

जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है लिप्यंकन यानी लिपि का अंकन। लिप्यंकन में उच्चारण को मुख्य आधार माना जाता है। लिप्यंकन अंग्रेजी के शब्द *Transcription* का हिंदी पर्याय है जिसमें उच्चरित ध्वनियों को लिपिबद्ध किया जाता है। टेपरिकॉर्डर के माध्यम से रिकॉर्ड किए गए भाषण आदि का विभिन्न उद्‌देश्यों के लिए लिप्यंकन किया जाता है। साक्षात्कार, वक्तव्य, गीत आदि में वक्ता के उच्चारण को आधार मानकर उसे लिपिबद्ध किया जाता है। इसमें स्रोतभाषा के उच्चारण के आधार पर लक्ष्यभाषा के

लिपिचिह्न निर्धारित किए जाते हैं। इसके लिए *IPA (Interanational Phonetic Alphabet)* अथवा किसी अन्य लिपिचिह्न व्यवस्था के आधार पर लिप्यंकन किया जाता है। विभिन्न भाषाविज्ञानी, समाजविज्ञानी तथा शोधकर्ता लुप्त होती भाषाओं में साहित्य के दस्तावेजीकरण में अनुवाद को इसी विधि का प्रयोग करते हैं।

लिप्यंतरण

लिप्यंतरण शब्द अंग्रेजी के *transliteration* का हिंदी पर्याय है। लिप्यंतरण मं स्रोतभाषा की वर्तनी में प्रयुक्त लिपिचिह्नों के स्थान पर लक्ष्यभाषा में प्राप्त लिपिचिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया के तीन चरण होते हैं:

सबसे पहले स्रोतभाषा के लिपि चिह्नों को उसी भाषा की स्वनिमिक इकाइयों में परिवर्तित किया जाता है। जैसेः

< R > = / R /

< Sh > = / Š /

इसके बाद स्रोतभाषा की स्वनिमिक इकाइयों को लक्ष्यभाषा की स्वनिमिक इकाइयों में परिवर्तित किया जाता है। जैसेः

/ R / = /र/

/ Š / = /श/

इसके बाद लक्ष्यभाषा की स्वनिमिक इकाइयों का उसी भाषा के लिपिचिह्नों में परिवर्तित किया जाता है। जैसेः

/र/ = < र >

/श/ = < श >

स्पष्ट है कि लिप्यंतरण में पहले स्रोतभाषा के लेखन रूप से मौखिक में और फिर स्रोतभाषा के मौखिक रूप को लक्ष्यभाषा के मौखिक रूप में परिवर्तित किया जाता है और फिर अंत में उसे लक्ष्यभाषा के लिपिचिह्नों के अनुरूप ढाला जाता है।

2.3 विविध क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता

जैसा कि चर्चा की जा चुकी है कि अनुवाद वर्तमान समय की सबसे बडी जरूरत है। किसी समाज, राष्ट्र अथवा संस्कृति को यदि विकास करना है तो उसका अन्य समाज एवं संस्कृति से संवाद अनिवार्य है और इस संवाद का एकमात्र साधन है अनुवाद। यह अनुवाद मौखिक, लिखित, संकेतात्मक, प्रतीकात्मक कुछ भी हो सकता है। अब हम यहां विविध क्षेत्रों में अनुवाद की उपयोगिता पर चर्चा करेंगे।

सभ्यता तथा संस्कृति के निर्माण में साहित्य की भूमिका सर्वोपरि है। हम सभी जानते हैं कि साहित्य जीवन को और अधिक जीवन तथा मनुष्य को और अधिक मनुष्य बनाता है। इस साहित्य में यदि सीमाएं मिट जाएं तो मनुष्य के विकास के रास्ते और अधिक उज्ज्वल हो जाते हैं। अनुवाद राह के उसी दीपक की तरह काम करता है जो अबूझे अनजाने ढूहों तक हमें पहुँचाता है।

विधि के क्षेत्र में अनुवाद बेहद महत्वपूर्ण है। भारत में आज भी न्यायालय की भाषा प्रायः अंग्रेजी ही है। निचली अदालतों में कागजात प्रादेशिक भाषाओं में होते हैं किंतु कामकाज की भाषा अंग्रेजी ही होती है। ऐसी स्थिति में दो भिन्न भाषी कार्यक्षेत्रों में संवाद बनाए रखने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। जैसे ही मामला सर्वोच्च

न्यायालय में पहुंचता है तब सारे दस्तावेजों का अंग्रेजी अनुवाद करवाया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में अनुवादकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

शिक्षा के क्षेत्र पर अंग्रेजी ने लगभग कब्जा कर रखा है। प्राथमिक शिक्षा में जहां मातृभाषाओं या क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व है लेकिन उच्च शिक्षा में यह भी अंग्रेजी तक सीमित होकर रह जाती है। मातृभाषाओं से छात्रों तक तथा विभिन्न भाषी छात्रों को अंग्रेजी तथा हिंदी जैसी अन्य केन्द्रीय भाषाओं से जोड़ने में अनुवाद की अहम भूमिका है।

मीडिया का क्षेत्र अनुवाद का एक अप्रतिम उदाहरण है। आज द्रुतगति से प्राप्त हो रही सूचनाओं के युग में क्या कभी आपने विचार किया है कि यह किस प्रकार तथा कितनी भाषायी समस्याओं से होकर हम तक पहुँचती हैं। हम सभी जानते हैं कि आज हर क्षेत्रीय भाषा में मीडिया उपलब्ध है। इन क्षेत्रीय चैनलों पर मिलने वाले समाचार एक पूरी भाषायी तथा अनुवादकीय प्रक्रिया से होकर गुजरते हैं जिसका अध्ययन–विश्लेषण हम इस इकाई के अगले भाग में करेंगे।

कार्यालयी साहित्य के अनुवाद में तो रोजगार की भरपूर संभावनाएं हैं। ये रोजगार सरकारी स्तर पर अधिक संख्या में देखे जा सकते हैं। प्रत्येक सरकारी कार्यालय में हिंदी में काम करना तथा प्रत्येक दस्तावेज का हिंदी में तथा क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जाना हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिए किया गया सरकारी उपक्रम है जिसके तहत वहां अनुवादकों तथा हिंदी अधिकारियों आदि की भर्ती की जाती है।

इसी तरह बैंकिंग साहित्य, बालसाहित्य – कार्टून फिल्म, लिखित साहित्य, विज्ञापन आदि के अनुवाद की कदम–कदम पर आवश्यकता पड़ती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद एक ऐसा सूत्र है जो उसे देश के अन्य सुदूर कोनों तक जोड़ता है। भारतेतर भाषाओं और समाजों, सभ्यताओं से जोड़ने का माध्यम अनुवाद आज और अधिक प्रासंगिक हो उठा है।

2.4 अनुवाद के विविध क्षेत्र

इकाई के इस भाग में हम अनुवाद के विविध क्षेत्र और उनके विभिन्न आयामों की सिलसिलेवार विस्तार से चर्चा करेंगे।

2.4.1 प्रशासनिक साहित्य और अनुवाद

सबसे पहले यहां यह समझा जाना आवश्यक है कि प्रशासन किसे कहते हैं। प्रशासन से तात्पर्य सरकारी कामकाज से है। चूंकि इसका दायरा बेहद विस्तृत है इसलिए यहां हम केंद्र और राज्य के कार्यक्षेत्र में आने वाले विभाग, अधीनस्थ विभाग, मंत्रालय, सरकारी बैंक, अर्धसरकारी बैंक, संबद्ध कार्यालय, स्वशासी निकाय, आयोग, समितियां, सहकारी बैंक तथा इनके अधीन आने वाले अन्य विभाग आते हैं।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार निम्नलिखित के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाएं प्रयोग में लाई जाएंगीं –

1. संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेसविज्ञप्तियों के लिए जो केंद्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण में किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं।

2. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज–पत्रों के लिए।

3. केंद्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से केंद्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के किसी निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा प्रारूपों के लिए।

इन सबके अनुवाद के लिए प्राधिकृत हिंदी अनुवाद की व्यवस्था की गई है।

प्रशासनिक साहित्य की भाषा : प्रशासनिक साहित्य की भाषा का अपना एक सौंदर्यशास्त्र है। साहित्य की भाषा से एकदम अलग प्रशासनिक भाषा का केंद्रीय तत्व संप्रेषणीयता है। इसके लिए कुछ विशेषताएं निर्धारित की गई हैं जिनके अनुसार प्रशासन की भाषा बोधगम्य हो, सरल– सुव्यवस्थित हो, संप्रेषणीयता को केंद्र में रखते हुए एकार्थता को अधिक महत्व दिया गया है।

प्रशासनिक भाषा का एक अन्य बेहद महत्वपूर्ण तत्व है : निर्वैयक्तिकता। इसका तात्पर्य यह है कि यहां प्रयोग होने वाली भाषा का व्यक्तिविशेष से कोई सम्बन्ध नहीं होता। यहां दिए जाने वाले आदेश व निर्देश व्यक्ति द्वारा न दिए जाकर पद द्वारा दिए जाते हैं। यही कारण है प्रशासनिक भाषा में कर्तृवाच्य की प्रधानता रहती है कर्मवाच्य की नहीं। उदाहरण स्वरूप –

Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत
This may please be approved	कृपया इसका अनुमोदन करें
Matter is under consideration	विषय विचाराधीन है।
Should be given top priority	सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।
Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत

प्रशासनिक साहित्य की भाषा औपचारिकता से परिपूर्ण होती है। इसमें अनेकार्थता की कोई संभावना नहीं होती। भाषा सरल एवं बोधगम्य होती है। इसमें प्रयोग किए जाने वाले शब्दों की अपनी एक तय शब्दावली होती है जिनका संबंध सीधा प्रशासन तथा सरकारी कार्यालय में प्रचलित कार्य प्रणाली से होता है। यह भाषा आम भाषा से अलग अपने तय अर्थ रखती है जिसमें अर्थविचलन की कोई संभावना नहीं होती। इसलिए अनुवादक को भी अनुवाद करते समय कुछ खास बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

प्रशासनिक साहित्य के अनुवाद के लिए भारत सरकार द्वारा अनुवाद प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। इसके अंतर्गत 1971 से अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अतंर्गत काम कर रहे केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया जिसके तहत सरकारी कार्यालयों में काम कर रहे कर्मचारियों को समय–समय पर अनुवाद की प्रक्रिया और सिद्धांत से अवगत करवाया जाता है।

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा अनुवाद प्रशिक्षण केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों के अनुवाद कार्य से संबंधित सभी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य है। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद प्रशिक्षण के लिए त्रैमासिक, इक्कीस दिवसीय, पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण जैसे कई कार्यक्रम चलाता है। इस प्रशिक्षणों की सहायता से विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे अनुवादक अनुवाद के विभिन्न आयामों से समय–समय पर जागरूक होते रहते हैं तथा अपने अनुवाद कौशल को संवारते रहते हैं।

2.4.2 बैंकिंग और अनुवाद

यद्यपि पूंजी के लेन–देन को लेकर एक परंपरागत बैंकिंग व्यवस्था का अपना एक लम्बा इतिहास है किंतु भारत को आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था अंग्रेजों की देन है। इसी के परिणामस्वरूप हम देख सकते हैं कि भारतीय बैंकिंग व्यवस्था पर पश्चिम का प्रभाव है। आज भी भारतीय बैंकों में मूल लेखनत्र फॉर्म, प्रचार सामग्री, दस्तावेज आदि मूलतः अंग्रेजी में ही तैयार किए जाते हैं। राजभाषा सम्बन्धी सांविधानिक–विधिक प्रावधानों के कारण बैंक भी राजभाषा प्रयोग के दायरे में आ जाते हैं जिसके कारण उनके कार्यों में अनुवाद को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बैंकिंग का सम्बन्ध आम जन और उसकी पूंजी से है इसलिए आमजन की भाषा में बैंकिंग की कार्यप्रणाली को समझाना और पत्र–व्यवहार भारतीय बैंक व्यवस्था के लिए अनिवार्य है। बैंकिंग के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग मूलतः दो स्तरों पर होता है –

- राजभाषा के स्तर पर; और
- जनभाषा के स्तर पर

द्विभाषिकता की नीति के अनुसार प्रशासन आदि विविध क्षेत्रों के साथ बैंकिंग में व्यवहार में हिंदी में मूल लेखन का चलन नहीं हो जाता तब तक अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है। राजभाषा के रूप में सभी केंद्रीय कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमो के समान बैंकिंग सम्बन्धी तकनीकी और गैरतकनीकी प्रलेख दोनों भाषाओं में जारी किए जाएं। मूल रूप से अंग्रेजी में लेखन होने के कारण अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द, पदबंध, वाक्य विन्यास आदि अधिक उपयुक्त और संप्रेषणीय जान पड़ते हैं। ऐसे में अनुवादक के समक्ष चुनौती और बडी हो जाती है कि हिंदी जो प्रशासनिक क्षेत्रों में मात्र अनुवाद की भाषा बन कर रह गई है वहां अंग्रेजी के सटीक प्रयोगों के समक्ष किस तरह अधिक विश्वसनीय और संप्रेषणीय प्रयोग गढ़े। ऐसी स्थिति में अनुवादक से निम्नलिखित अपेक्षाएं की जाती हैं

कथ्य का ज्ञान : बैंकिंग साहित्य के अनुवादक से अन्य किसी विषय के अनुवादक की तरह यह अपेक्षा की जाती है कि उसे कथ्य का ज्ञान हो। यानी मूल पाठ के संदर्भ की समझ उसे हो। बैंकिंग के क्षेत्र की कार्यप्रणाली कैसी है, उसका भाषा प्रयोग कैसा है, उसमें किस तरह का पत्र–व्यवहार होता है, बैंकिंग के संबंधित अन्य क्षेत्र कौन से हैं, उसके अंतर्गत कितने विभाग हैं, उसमें किस–किस तरह की योजनाएं हैं तथा कौन–कौन सी नई योजनाएं आ रही हैं आदि का सम्यक ज्ञान अनुवादक के लिए अपेक्षित है।

अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है उसे सम्बद्ध भाषा प्रयोग के मुहावरे की समझ हो, सही शब्दों के चयन में वह सावधानी बरते और संदर्भ की समझ हो ताकि वह मूल भाषा के लिए निकट समतुल्य खोज सके। ऐसा तभी होगा जब अनुवादक को कथ्य की अच्छी समझ हो।

यदि अनुवादक को कथ्य और संदर्भ की सही समझ नहीं होगी तो वे गलतियां कर सकते हैं जैसे hard cash के लिए ठोस नकदी, speed money के लिए गति मुद्रा dead money के लिए मृत मुद्रा आदि।

स्रोत और लक्ष्य भाषा का ज्ञान

स्रोत और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना किसी भी क्षेत्र के अनुवादक के लिए अनिवार्य अर्हता है। किंतु जैसे ही हम क्षेत्र विशेष या कहें कि प्रयोजनमूलक भाषा की बात करते

हैं तो अनुवादक की जिम्मेदारी और बढ जाती है। चूंकि प्रयोजनमूलक भाषा हमें स्वतः ही प्राप्त नहीं हो जाती उसके लिए अनुवादक को विशेष योग्यता तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस प्रशिक्षण के तहत अनुवादकों को प्रयोजन विशेष की भाषा के क्षेत्र में उचित ज्ञान दिया जाता है, उन्हें संबंधित एजेंसियों, शब्दकोशों, पारिभाषिक शब्दावली आदि तथा व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है जिनके माध्यम से वे सम्बद्ध भाषा में काम कर सकते हैं।

इसी के परिणामस्वरूप अनुवादक में सही शब्दों के सही चयन की समझ विकसित हो पाती है। उदाहरण के लिए loan, advance, credit और debit के अर्थ की सूक्ष्म भिन्नता को समझना जितना कठिन है उतना ही आवश्यक भी है। ऐसी स्थिति में या तो अनुवादक अपने अनुभव के आधार पर शब्द चयन करेंगे, या पारिभाषिक शब्दावली पर निर्भर करेंगे या प्रयोग के आधार पर मूल शब्दों का ही प्रयोग करेंगे। इसी तरह subsidy शब्द के लिए अनुदान, उपदान, परिदान, आर्थिक सहायता आदि शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है।

सटीक तथा सहज भाषा में अनुवाद : प्रयोजनमूलक भाषाओं की सबसे बडी विशेषता यह होती है कि ये अभिधात्मक होती हैं तथा इनकी अपनी एक पारिभाषिक शब्दावली होती है जिसके आधार पर इनका अनुवाद किया जाता है। किंतु बैंकिंग हिंदी में शब्दों के चयन और निर्माण का कोई सर्वसम्मत आधार नहीं है। हालांकि रिजर्व बैंक ने बैंकिंग हिंदी के लिए विशिष्ट अभिव्यक्तियों तथा शब्दावली तथा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोाग ने पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करवाया है किंतु फिर भी सही पर्याय की समस्या बनी रहती है। ऐसे में अनुवादक की जिम्मेदारी दोहरी हो जाती है कि वे किस प्रकार सही अभिव्यक्ति तथा पयायों का चयन करे।

अंग्रेजी के अनेक शब्द आज बैंकिंग में आ गए हैं जिन्हें मूल स्वरूप में ही स्वीकार कर लिया गया है जैसे चेक, ड्राफ्ट, बजट, कमीशन, नोट, लॉकर, बिल आदि।

बैंकिंग शब्दावली में अंग्रेजी शब्दों के शब्दानुवाद भी मिलते हैं जैसे मुक्त अर्थव्यवस्था, कुल भार, समान वितरण आदि। साथ ही इसमें संकर शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है जैसे खाताधारक, शेष–बाकी आदि।

आपने देखा कि बैंकिंग साहित्य के अनुवाद में कई प्रकार की समस्याएं हैं जिनके समाधान के लिए इस क्षेत्र में और काम किए जाने की आवश्यकता है। अच्छे अनुवादक की समझदारी तथा विषय का ज्ञान सही पर्याय, वाक्य–विन्यास, प्रयोग के चयन में सहायक हो सकते हैं।

2.4.3 विधि साहित्य और अनुवाद

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने अपने संविधान में शासन–प्रशासन और विधि के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के लिए भाषा योजना की संकल्पना रखी। भाषा योजना के कुल चार चरण होते हैं – चयन, संहिताकरण, विशदीकरण और अनुपालन। इसकी स्थापना के पीछे का उद्देश्य शासन–प्रशासन तथा विधि आदि क्षेत्रों के लिए मानक भाषा और पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करना था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधान निर्माण के दौरान ही यह उपबंध किया गया था कि एक राजभाषा आयोग की स्थापना की जाएगी जो राष्ट्रपति को संघ की राजकीय प्रयोजनों के लिए भाषा के बारे में सिफारिश करेगा। 1955 में राजभाषा आयोग का गठन किया गया जिसके तहत आयोग ने अपनी रिपोर्ट में यह सुझाव दिया कि विधि के क्षेत्र में हिंदी में समान

रूप से काम करने के लिए दो कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं – (1) विधि शब्दावली का विकास; और (2) समस्त अधिनियमों का हिंदी में पुनः अधिनियमन

अपनी रिपोर्ट में राजभाषा आयोग ने विधि शब्दावली के निर्माण के साथ हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली के विकास के लिए केंद्र और राज्यों में हो रहे प्रयासों में समन्वय स्थापित करने के लिए समुचित प्रयास किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। परिणामस्वरूप तत्कालीन राष्ट्रपति ने 1960 में विधि विशेषज्ञों का एक स्थायी आयोग बनाने का आदेश पारित किया और तदनुसार 1961 में संघ ने राजभाषा (विधायी) आयोग की स्थापना की। आयोग ने यह निर्णय लिया कि मानक विधि शब्दावली की तैयारी को हिंदी में अधिनियमों के संग्रह के पुनः अधिनियमन के कार्य से अलग न किया जाए। इस प्रकार अधिनियमों का अनुवाद और मानक विधि शब्दावली का निर्माण साथ–साथ चलता रहा।

आयोग ने 1970 में विधि शब्दावली का प्रथम संस्करण तैयार किया जिसमें लगभग 10,000 प्रविष्टियां थीं। आगे चलकर राजभाषा (विधायी) आयोग का कार्य विधि मंत्रालय के विधायी विभाग में स्थापित राजभाषा खंड को सौंप दिया गया जिसने 1979 में इस शब्दावली का परिवर्धित संस्करण जारी किया। इसके पश्चात आज तक इसके कुल छः संस्करण आ चुके हैं जिसमें कुल प्रविष्टियों की संख्या बढकर लगभग 50,000 हो चुकी है।

इस तरह हमने देखा कि राजभाषा आयोग से प्रारंभ हुआ यह कार्य आज काफी ऊंचाई तक पहुँच चुका है। विधि साहित्य के अनुवाद को लेकर कुछ समस्याएं आती हैं उन पर विचार किया जाना यहां आवश्यक है–

अच्छे अनुवादकों का अभाव : प्रयोजनमूलक साहित्य के अनुवाद को लेकर यह समस्या अक्सर महसूस की जाती है कि उसके लिए अच्छे अनुवादक कहां से लाए जाएं। ऐसे अनुवादको के लिए भाषा की विशेष समझ के साथ विषय और संदर्भ की गहरी समझ भी उतनी ही आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी–गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा अनुवादको को प्रशिक्षण दिया जाए तथा अधिक से अधिक लोगों को इस काम के लिए आकर्षित किया जाए।

अनुवाद को लेकर नकारात्मक रवैया : अनुवाद के प्रति नकारात्मक व्यवहार भी एक गंभीर समस्या है। चूंकि विधि के क्षेत्र में मूल लेखन अंग्रेजी में होता है और उसे लक्ष्यभाषा में उसी प्रभाव के साथ लाना तथा अनेकार्थता की संभावना से बचाना आदि कई तत्व मिलकर अनुवाद कार्य को जटिल बना देते हैं। अनुवाद में अरुचि तथा सही मानदेय का अभाव उसके प्रति नकारात्मक भाव पैदा करते हैं।

भाषायी विविधता : जैसा कि हम जानते हैं कि विधिक साहित्य का निर्माण मूलतः अंग्रेजी में होता है और राजभाषा अधिनियम के अनुसार उसका हिंदी में अनुवाद होना भी उतना ही आवश्यक है। विधि साहित्य की भाषा मूलतः कर्तृवाच्य प्रधान होती है। किंतु अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष यह समस्या आती है कि अंग्रेजी में कर्मवाच्य के प्रयोग की प्रवृत्ति अधिक है जबकि हिंदी में कर्तृवाच्य प्रधान भाषा का प्रयोग विधि साहित्य मे होता है ऐसे में अनुवादक के लिए स्रोत पाठ का अनुवाद एक बडी चुनौती बन जाता है। उसके लिए यह सावधानी बरतना अत्यधिक आवश्यक है ताकि अनुवाद पर मूल का प्रभाव न दिखे।

इसी तरह ऐसी कई समस्याएं हैं जिनसे विधि साहित्य के अनुवादक को जूझना पड़ता है।

2.4.4 मीडिया और अनुवाद

तकनीकी विकास के साथ मीडिया का दायरा भी लगातार बढ़ता जा रहा है। मीडिया के अंतर्गत प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ अब अब एक नया माध्यम सोशल

मीडिया भी आकर जुड़ गया है। अब बहुत सारी खबरों से हम सोशल मीडिया के माध्यम से परिचित होते हैं। सोशल मीडिया के अंतर्गत फेसबुक, ट्विटर, वॉट्सएप आदि विभिन्न पोर्टल आते हैं जो हमें देश–विदेश तथा विभिन्न विषयों की छोटी–बडी खबरों से रूबरू करवाते हैं।

विभिन्न देशों एवं समाजों में बडे–बडे राजनेता, फिल्मी हस्तियां आदि आज प्रचार–प्रसार के लिए इन माध्यमों को अपना रहे हैं। ऐसी स्थिति में अब हमारे समक्ष मीडिया की एक बिल्कुल नई भाषा आ खड़ी हुई है जो अनुवादकों के समक्ष एक नई चुनौती है।

प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की बात करें तो इसमें भी विविधता देखी जा सकती है। राजनीतिक, सामाजिक, खेल, मनोरंजन, बाजार आदि विभिन्न भाषाओं के नमूने यहां उपलब्ध हैं। यह तो तय है कि मीडिया के विस्तृत दायरे को देखकर किसी एक पारिभाषिक शब्दावली या कोश काफी नहीं है।

मीडिया की भाषा और अनुवाद : हम जानते हैं कि मीडिया की भाषा का एक विशिष्ट स्वरूप होता है किंतु वह विज्ञान, प्रशासन आदि की भाषा की तरह तकनीकी नहीं होती। इसकी भाषा का अपना एक आस्वाद होता है जिसे ध्यान में रखते हुए अनुवाद किया जाना चाहिए।

- **विभिन्न पत्रों की अपनी भाषा**

  यदि आपने विभिन्न समाचार पत्रों की भाषा पर गौर किया हो तो पाएंगे कि विभिन्न ग्रुपों से निकलने वाले समाचार पत्रों की अपनी एक निश्चित भाषा है जो उसकी अपनी एक अलग पहचान बनाती है। इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स आदि के मूल लेखन तथा अनुवाद की अपनी एक शैली है जिसका वे पालन करते हैं। उनके अनुवादक भी उस शैली विशेष से परिचित रहते हैं तथा उसके अनुसार ही अनुवाद करते हैं।

- **संप्रेषणीयता पर बल**

  मीडिया का प्रत्येक माध्यम खबर को अधिक से अधिक संप्रेषणीय बनाने पर केंद्रित होता है। इसी को ध्यान में रखते हुए वे वाक्यों को छोटा रखते हैं, जल्दी जल्दी पैरा बदलते हैं, मुख्य समाचार में ध्यान वाक्य संरचना पर न रख संप्रेषणीयता पर रखते हैं जिसके कारण ही मीडिया में अधूरे वाक्यों की भरमार देखी जा सकती है।

- **विभिन्न विधाओं के अनुसार भाषा**

  मीडिया में काम करने वाले भाषा के प्रति अधिक शुद्धतावादी नहीं होते। वे मानते हैं कि विभिन्न विधाओं के लिए भाषा के विभिन्न स्वरूपों की आवश्यकता होती है। खेल समाचार लिखते समय भाषा की बानगी अलग होती है और बाजार भाव से जुड़े समाचार की भाषा उससे बिल्कुल भिन्न होती है। मनोरंजन की भाषा राजनीतिक खबरों की भाषा से अलग होती है। मीडिया के अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वे इस भाषायी विविधता को समझ सकें तथा उसके अनुसार शब्दों, मुहावरों और अभिव्यक्तियों का सही चयन कर सकें।

- **सोशल मीडिया की भाषा**

  मीडिया के इस नए माध्यम की शुरुआत इसी समय की देन है। सोशल मीडिया का प्रयोग अक्सर प्रचार–प्रसार आदि के लिए किया जाता है। विज्ञापन एजेंसियां इसे एक जरूरी माध्यम के रूप में देख रही है। आज बाजार से

लेकर राजनीति तक अपने विचारों के प्रसार के लिए इन माध्यमों का प्रयोग कर रहे है। इन माध्यमों ने अपनी एक नई भाषा गढ़ी है जिसे समझने की जरूरत है। चूंकि यह अत्यंत नया माध्यम है इसलिए इसके अनुवाद की अभी कोई सैद्धांतिकी तैयार नहीं हो पाई है। ऐसे में अनुवादक की समझ तथा संचार माध्यम की मांग को ध्यान में रखकर इसका अनुवाद किया जा सकता है।

- **विज्ञापन की भाषा**

मीडिया के क्षेत्र में एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र विज्ञापन है। प्रिंट से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सभी जगह विज्ञापनों की मांग है। विज्ञापन दो प्रकार के होते हैं–

(1) सूचना प्रधान विज्ञापन

(2) व्यावसायिक विज्ञापन

सूचना प्रधान विज्ञापन के अंतर्गत सरकारी विज्ञापन–घोषणाओं, रोजगार, जागरूकता, स्वच्छता आदि संबंधी विज्ञापन आते हैं। व्यावसायिक विज्ञापन ऐसे विज्ञापनों को कहते हैं, जिसके अंतर्गत विभिन्न उत्पादों का प्रचार प्रसार किया जाता है। इन दोनों ही तरह के विज्ञापनों की अपनी विशेष भाषा है। जहाँ सूचना प्रधान विज्ञापन जहाँ सूचना प्रधान विज्ञापन की भाषा एकात्मक तथा अभिधात्मक होती है, वहीं व्यावसायिक विज्ञापनों की भाषा में सर्जनात्मकता, चुटीलापन, आकर्षण आदि गुण होते हैं।

विज्ञापनों के अनुवाद में अनुवादकों से अपेक्षा की जाती है कि वे दोनों ही प्रकार की भाषाओं से परिचित हों तथा मांग के अनुसार विज्ञापनों को उसी प्रभावोत्पादकता के साथ अनुवाद कर सकें।

2.4.5 सर्जनात्मक साहित्य और अनुवाद

सर्जनात्मक साहित्य का दायरा काफी विस्तृत है इसमें उपन्यास, कहानी ,कविता, नाटक, गीत, गीतिनाटक आदि सब आ जाते है। इन सबके अनुवाद के लिए अनुवादक को कुछ विशेष योग्यताओं की आवश्यकता होती है। यहां हम सभी विधाओं की चर्चा न करके मुख्यतः काव्यानुवाद, कथा साहित्य का अनुवाद तथा नाट्यानुवाद की चर्चा करेंगे तथा इसके साथ ही सृजनात्मक साहित्य के अभिन्न अंग मुहावरे–लोकोक्तियों के अनुवाद और उनमें आने वाली समस्याओं पर बात करेंगे।

काव्यानुवाद

कविता का अनुवाद वास्तव में सबसे जटिल कार्य है। किसी भी अन्य विधा के अनुवाद की तुलना में कविता का अनुवाद अधिक चुनौतीपूर्ण है। चूंकि कविता के अनुवाद में अर्थ, आशय, शब्द योजना छंद, लय, संस्कृति, काव्य सौंदर्य आदि सबका अनुवाद किया जाना अपेक्षित होता है इसलिए यह लगभग असंभव प्रतीत होता है। कविता का अनुवाद वास्तव में लक्ष्यभाषा में उसकी पुनर्रचना ही है। कविता के अनुवाद के लिए अनुवादक को कविता की गहरी समझ होनी चाहिए। कविता का अनुवाद यदि कोई कवि ही करे तो बेहतर होगा क्योंकि इसके लिए मूल कविता और उसके भाव को आत्मसात् करके उसे पुनर्जीवन दिया जाता हैं।

कविता के अनुवादक का सहृदय होना आवश्यक है चूंकि यहां अनुवाद केवल भाषा और भाषा में निहित भावों का ही नहीं अपितु संकेतो–बिम्बों–प्रतीकों के साथ पंक्तियों के बीच की चुप्पी का भी होता है। साहित्य और उसमें भी कविता के गूढ़ पाठक होना इसकी योग्यता है।

कथा साहित्य का अनुवाद

कथा साहित्य का अनुवाद भी एक जटिल कार्य है। सर्जनात्मक साहित्य की प्रमुख विधाएं – कहानी तथा उपन्यास दोनों ही कथा साहित्य के अंतर्गत आती हैं। सर्जनात्मक साहित्य की भाषा अपने आप में बेहद लक्षणात्मक होती है। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध यह भाषा अपने समाज से प्राणतत्व प्रदान करती है। अपने समाज में गहरी रची–बसी होने के कारण कथा साहित्य में मुहावरे, लोकोक्तियां, भाषा की क्षेत्रीयता आदि अनेक ऐसे तत्व होते हैं जो किसी भी अनुवादक के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकते हैं। कथा साहित्य में कविता के अन्य गुणों के साथ एक कथातत्व भी होता है जो समाज विशेष की अंतरंग छवि को प्रस्तुत करता है। फणीश्वर नाथ रेणु का मैला आंचल, श्रीलाल शुक्ल का राग दरबारी, राही मासूम रज़ा का आधा गांव, यशपाल का झूठा सच, भीष्म साहनी का तमस, कृष्णा सोबती का मित्रो मरजानी तथा ज़िंदगीनामा, कृष्ण बलदेव वैद का उसका बचपन, मैत्रेयी पुष्पा का चाक, राकेश कुमार सिंह का पठार पर कोहरा – ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो इस बात का प्रमाण हैं कि कथा साहित्य में रचनाकार न केवल विषय की गहराई में उतरते हैं अपितु उनका अपना परिवेश, भाषा, संस्कृति तथा समाज भी रचना में परिलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक के सामने भाषा से भी बड़ी चुनौती लेखक अथवा रचना का परिवेश होता है जिसका अनुवाद एक बेहद जटिल कार्य हो जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि सर्जनात्मक साहित्य के अनुवादक के लिए न केवल भाषा अपितु भाषाा की संस्कृति और प्रवेश की समझ होना भी अनिवार्य है।

नाट्यानुवाद

साहित्य की अन्य विधाओं से अलग नाटक दृश्य काव्य है। दृश्य काव्य होते ही यह साहित्य की अन्य विधाओं से कुछ स्तरों पर अलग खडा हो जाता है। नाट्यसाहित्य की विशेषता है उसका प्रस्तुतीकरण तथा उसके संवाद। यही दो बिन्दु उसे अधिक जीवंत बनाते हैं इसलिए नाटक रचते समय नाटककार, उसका मंचन करते समय निर्देशक तथा अनुवाद करते समय अनुवादक को विशेष सतर्कता बरतनी होती है।

नाट्यानुवादक को दोनों भाषाओं के ज्ञान के साथ, साहित्यिक रुचि, कथ्य की समझ तथा रंगमंचीय विशिष्टताओं का भी ज्ञान होना चाहिए। उसे स्रोतभाषा की नाट्य परंपरा के साथ–साथ लक्ष्यभाषा की रंगमंचीय परंपरा एवं विशेषताओं का भी ज्ञान आवश्यक है।

सर्जनात्मक साहित्य की अन्य विधाओं में कथ्य के साथ उसकी अभिव्यक्ति भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। ठीक उसी प्रकार नाटक की अभिव्यंजना पद्धति के बारे में कहा जा सकता है। किंतु यहां इसके साथ एक अन्य तत्व जुड़ जाता है और वह है इसकी दृश्यता। कहानी आदि अन्य साहित्यिक रचना को थोड़ा पढ़कर बीच में छोडा जा सकता है लेकिन नाटक का मंचन एक साथ होता है इसलिए यह आवश्यक है कि इसका अनुवाद करते समय अनुवादक को इसकी प्रस्तुति तथा संवाद शैली के साथ न्याय करना होगा ताकि दर्शक अंत तक उससे जुड़े रह सकें।

मुहावरों, लोकोक्तियों का अनुवाद

मुहावरे और लोकोक्तियों के निर्माण के पीछे संस्कृति, समाज तथा मनुष्य के विभिन्न अनुभव रहते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों की भाषा सीधी सपाट न होकर लक्षणा तथा व्यंजना शब्दशक्ति से समृद्ध होती है। इसलिए इनके अनुवाद में भी अनुवादक को ऐसी समस्याओं से जूझना पड़ता है। मुहावरे, लोकोक्तियों तथा कहावतों आदि का प्रयोग आम बोलचाल तथा सर्जनात्मक साहित्य में अधिक होता है। कोई भी समाज

अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिए इनका सहारा लेता है। लोकोक्ति का तो अर्थ ही है लोक की उक्ति। अर्थात सामान्य लोक द्वारा प्रयोग की गई उक्ति। इसलिए इनका संदर्भ बेहद व्यापक होता है। इनका अनुवाद करने के लिए अनुवादक को बहुत सतर्कता बरतने की आवश्यकता होती है। इसके लिए अनुवादक का स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा का ज्ञान ही आवश्यक नहीं अपितु इसके साथ उस भाषा और संस्कृति के विकास की गहरी समझ का होना भी जरूरी है। उदाहरण :

खुली छूट देना	To give blank cheque
एक पंथ दो काज	Killing two birds with one stone
पानी में रहकर मगर से बैर	To quarrel with Pope while in Rome
ऊँट के मुंह में जीरा	A drop in the ocean

यहां अनुवादक ने अनुवाद करते समय अपितु उसके निकट समतुल्यों को लक्ष्यभाषा से खोजा है। मुहावरे–लोकोक्ति के अनुवाद में कई बार ऐसी समस्या भी आती है जब अनुवादक को लक्ष्यभाषा में उसका समतुल्य नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि वे भावानुवाद करके मूल अर्थ तक पाठक को पहुँचाएं।

तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद – 'तुलनात्मक साहित्य' एक स्वतंत्र अनुशासन है, जिसके अंतर्गत एक से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। चूंकि तुलनात्मक साहित्य के मूल में ही दो भाषाओं में लिखित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन है, इसलिए अनुवाद इसका अनिवार्य अंग है। इस अध्ययन के अंतर्गत दो भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अनके बीच समानता–असमानता के अनेक बिंदुओं, जैसे–विधा, विषय–वस्तु, प्रभाव, सामाजिकता, परंपरा, कालखंड आदि की तुलना की जाती है। विश्वभर के साहित्य में इस प्रकार के अध्ययन किए जाते हैं जिससे राष्ट्र विशेष अथवा समाज विशेष में लिखित साहित्य के विभिन्न कारणों तथा उन पर पड़े प्रभाव आदि का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। जैसे–प्रेमचंद और गोर्की, रोमांटिसिज्म तथा छायावाद की तुलना, न्यू वर्स तथा नई कविता में तुलना आदि।

शिक्षा और अनुवाद – मानव जीवन के विकास में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। शिक्षा से तात्पर्य एक ऐसी प्रणाली से है, जिसकी सहायता से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इसके साथ ही, शिक्षा मनुष्य को ज्ञान संपन्न, व्यवहार कुशल तथा जीवोकोपार्जन योग्य बनाती है। शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है तथा मनुष्य शिक्षित होने के लिए ज्ञान के विभिन्न स्रोतों की सहायता लेता है। ज्ञान के ये विभिन्न स्रोत विभिन्न भाषाओं और समाजों में बिखर पड़े हैं। अनुवाद वह माध्यम है, जिसकी सहायता से विश्वभर का ज्ञान हमें हमारी परिचित भाषाओं में उपलब्ध हो पाता है। ज्ञान–विज्ञान का साहित्य, विश्व साहित्य, सूचना–प्रौद्योगिकी से संबंधित साहित्य आदि को समेटकर हमारी भाषाओं में उपलब्ध करवाने का महती दायित्व अनुवाद पर है। बच्चों में शिक्षा के प्रथम सोपान पर ही उसे मातृभाषा में शिक्षण देने की व्यवस्था की जाती है। इसके बाद औपचारिक शिक्षा प्राप्ति में उन्हें दूसरी भाषा में शिक्षित किया जाता है। भारत के अधिकांश विद्यालयों में शिक्षार्थियों की राजभाषा में शिक्षित किया जाता है तथा साथ ही अंग्रेजी भाषा में शिक्षा का भी प्रावधान है।

पर्यटन और अनुवाद – भूमंडलीकृत समय में पर्यटन एक उद्योग बनकर उभरा है। विश्व में अधिकांश देश राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के लिए सैलानियों को

आकर्षित करने का काम कर रहे हैं। अमेरिकी तथा यूरोप के विभिन्न देश – फ्रांस, इटली आदि पर्यटन उद्योग में काफी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। भारत की बात की जाए तो भारत जैसे बहुरंगी व बहुसांस्कृतिक राष्ट्र में भी पर्यटन की अनेक संभावनाएँ हैं तथा भारत राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास भी कर रहा है। ऐसे में, विश्व के सभी देशों में पर्यटन एक लाभकारी व्यवसाय बनकर उभर रहा है। भूमंडलीकरण तथा सूचना क्रांति के विस्फोट ने भी लोगों में विभिन्न देशों व संस्कृतियों को जानने की रुचि पैदा की है। अनुवाद की दृष्टि से भी इस क्षेत्र में अपार संभावनाएँ हैं। पर्यटन में अनुवाद के दोनों ही रूपों–लिखित तथा मौखिक का महत्व है। लिखित अनुवाद जहाँ पर्यटन संबंधी विभिन्न जानकारियाँ, विभिन्न संस्कृतियाँ के इतिहास, भूगोल, धर्म, दर्शन आदि संबंधी, जानकारियों के अनुवाद के लिए आवश्यक है, वहीं टूरिस्ट गाइड, होटल, पर्यटन स्थलों आदि पर मौखिक अनुवाद अथवा आशु अनुवाद की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही, विभिन्न उद्देश्यों से की गई यात्राओं में पर्यटकों को महत्वपूर्ण यात्राओं, मेलों, संगीत समारोहों सम्मेलन तथा बैठकों आदि में भी आशु अनुवाद के माध्यम से सूचनाएँ प्रदान की जाती है।

अपनी भाषा में जानकारी तथा सूचनाएँ उपलब्ध होने से न केवल हम अधिक सहज महसूस करते हैं, अपितु पर्यटन तथा स्थान विशेष के प्रति अधिक रुचि भी उत्पन्न होती है।

इन भाषाओं में व्यवहार के लिए अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है साथ ही हमारी पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त ज्ञान को हमारी परिचित भाषा में उपलब्ध करवाने में भी अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है।

2.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में हमने विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए अनुवाद के वर्गीकरण के विषय में जानकारी प्राप्त की और उसके पश्चात उनके द्वारा सुझाए गए अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की। अनुवाद के इन प्रकारों पर चर्चा करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में इनके प्रयोग, उपयोगिता और महत्व की भी विस्तार से चर्चा की गई है। वस्तुतः अनुवाद करते समय पाठ और अन्य स्थितियों जैसे उसकी उपयोगिता आदि को ध्यान में रखकर अनुवादक या अनुवाद एजेंसियां पाठ का अनुवाद करवाती हैं। तभी यह तय हो पाता है कि प्रस्तुत पाठ का अनुवाद करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में इन महत्वपूर्ण बातों पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस इकाई को पढ़कर आप निश्चय ही अनुवाद के विभिन्न प्रकारों और विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपयोगिता को समझ गए होंगे।

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के विविध क्षेत्रों और उनमें अनुवाद की संभावनाओं, उपयोगिता, समस्याओं आदि के विषय में विस्तार से पढ़ा। यहां हम अनुवाद के विविध क्षेत्रों में से केवल प्रशासनिक क्षेत्र, बैंकिंग, विधि, मीडिया और साहित्य की ही चर्चा कर सके। इसके अतिरिक्त अनेक क्षेत्र हैं जहां आज अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है जिनमें प्रमुख हैं शिक्षा के क्षेत्र में, पर्यटन के क्षेत्र में, विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में आदि। इक्कीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा जाता है। आज हम विश्व के किसी भी कोने में बैठकर देश–विदेश में उपलब्ध ज्ञान तथा सूचनाओं को बडी

सरलता से आदान–प्रदान कर सकते हैं। इस सबके मूल में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। बाल साहित्य विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक साहित्य में अनुवाद की भूमिका को आप बडी आसानी से अपने टेलीविजन पर देख सकते है। हमारे टीवी सेट पर आ रहे कार्टून चैनल पर एक साथ कई भाषाओं के विकल्प उपलब्ध है। आज अनुवाद एक विस्तृत उद्योग बनकर उभर रहा है। इसलिए इसके प्रयोग क्षेत्रों की एक निश्चित सीमा तय नहीं की जा सकती।

2.6 बोध प्रश्न

1. एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को .... कहते हैं। (अन्वयांतर/भाषांतर)
2. यूजीन नायडा के अनुसार अनुवाद के तीन प्रकार हैंः शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद और..........। (पर्याय के आधार पर अनुवाद/टीकानुवाद)
3. एक ही भाषा की किसी प्रतीक व्यवस्था से उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था में किए गए अनुवाद को...................... कहते हैं। (अंतःभाषिक/अंतरप्रतीकात्मक/अंतर्भाषिक)
4. आशु अनुवाद का आधार ....भाषा होती है। (मौखिक/लिखित)
5. स्वतंत्रता के बाद .... को राजभाषा का दर्जा दिया गया। (हिंदी/अंग्रेजी)
6. सभ्यता तथा संस्कृति के निर्माण में .... की भूमिका सर्वोपरि है। (विज्ञापन/साहित्य)
7. मीडिया का क्षेत्र .... का एक अप्रतिम उदाहरण है।(अनुवाद/साहित्य)
8. साहित्य की अन्य विधाओं से अलग नाटक .... काव्य है। (श्रव्य/दृश्य)
9. प्रशासनिक साहित्य की भाषा मूलतः............प्रधान होती है।(कर्तृवाच्य/कर्मवाच्य)
10. कविता का अनुवाद बेहद .... कार्य है। (सरल/जटिल)

2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद के विभिन्न प्रकार कौन–कौन से हैं? विस्तार से समझाइए।
2. क्या रूपांतरण और छायानुवाद एक ही हैं? यदि नहीं तो क्यों? उदाहरण सहित समझाइए।
3. विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए अनुवाद के वर्गीकरण के विषय में बताइए।
4. शब्द–प्रति–शब्द अनुवाद तथा शाब्दिक अनुवाद में क्या अंतर है? समझाइए।
5. भावानुवाद से आपका क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित समझाइए।
6. सारानुवाद तथा आशु अनुवाद में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. लिप्यंतरण और लिप्यंकन में क्या अंतर है? समझाइए।
8. अनुवाद के विविध क्षेत्रों से आपका क्या अभिप्राय है?
9. प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को क्या–क्या सावधानियां बरतनी चाहिएं?

10. भारत में बैंकिंग साहित्य के अनुवाद की शुरुआत कब से हुई और इसके पीछे क्या कारण थे?
11. विधि साहित्य के अनुवाद में किस–किस प्रकार की समस्याएं आती हैं? समझाइए।
12. साहित्य के अनुवादक में कौन–कौन से गुण होने चाहिए? विस्तार से समझाइए।

2.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- श्रीवास्तव, डॉ. रवीन्द्रनाथ एवं गोस्वामी, डॉ. कृष्ण कुमार (संपा): अनुवाद सिद्धान्त और समस्याएंः आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
- तिवारी, डॉ. भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली।
- भाटिया, डॉ. कैलाश चन्द्र, अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
- अय्यर, एन.ई. विश्वनाथ, अनुवाद कला, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
- डॉ. नगेन्द्र (संपा.), अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- तिवारी, डॉ. भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रविधि, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषांतर
2. पर्याय के आधार पर अनुवाद
3. अंतरप्रतीकात्मक
4. मौखिक
5. हिंदी
6. साहित्य
7. अनुवाद
8. दृश्य
9. कर्मवाच्य
10. जटिल

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 : अनुवाद प्रक्रिया, साधन एवं पुनरीक्षण

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 अनुवाद प्रक्रिया

3.3 अनुवाद प्रकिया का महत्व

3.4 अनुवाद के विविध साधन

3.5 अनुवाद में विविध साधनों की उपयोगिता

3.6 अनुवाद पुनरीक्षण

3.7 अनुवाद पुनरीक्षण की प्रक्रिया

3.8 अनुवाद पुनरीक्षक का महत्व

3.9 अनुवाद पुनरीक्षक से अपेक्षाएं

3.10 सारांश

3.11 बोध प्रश्न

3.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

3.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- अनुवाद की प्रक्रिया और उसके विभिन्न चरणों के विषय में जान सकेंगे।
- अनुवाद के विविध साधनों और अनुवाद में इन के प्रयोग एवं उपयोगिता को समझ सकेंगे।
- अनुवाद की प्रक्रिया में पुनरीक्षण से क्या अभिप्राय है, यह जान सकेंगे।
- अनुवाद पुनरीक्षण की प्रक्रिया तथा महत्व तथा को समझ सकेंगे।
- अनुवाद पुनरीक्षक से क्या–क्या अपेक्षाएं होती हैं, यह जान सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आपने अनुवाद के विषय में अलग–अलग तरह की जानकारी प्राप्त की होगी। इस इकाई में हम अनुवाद की प्रक्रिया, साधनों, उनकी उपयोगिता तथा महत्व एवं विभिन्न क्षेत्रों में उनके प्रयोग के साथ अनुवाद कर्म में पुनरीक्षण के महत्व पर विस्तार से बात करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात अनुवाद करते समय आने वाली समस्याओं – चाहे वे भाषिक हों या पारिभाषिक या फिर अवधारणात्मक आदि, इनसे जूझने के लिए क्या करना चाहिए, किन–किन साधनों व उपकरणों की मदद लेनी चाहिए, इन सबके विषय में विस्तार से समझ पाएंगे। साथ ही, यह भी जान पाएंगे कि

कोई भी अनुवाद तभी पूर्ण हो पाता है जब वह पुनरीक्षण की प्रक्रिया से गुज़रता है। पाठ के पुनरीक्षण के माध्यम से ही हम यह जान पाते हैं कि अनुवाद की दृष्टि से पाठ कितना संप्रेषणीय बन पाया है। पुनरीक्षण की यह प्रक्रिया अनुवाद के दौरान अनायास हुई भूलों को पहचानने और उन्हें सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

अनुवाद मूलतः स्रोतपाठ का लक्ष्यपाठ में अंतरण है। इस प्रक्रिया के दौरान अनुवादक को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अंतरण की इस पूरी प्रक्रिया में कभी उसके समक्ष भाषिक अड़चनें आती हैं तो कभी सामाजिक–सांस्कृतिक। इस इकाई में अनुवाद की इस प्रक्रिया में अनुवादों के साधनों के विभिन्न प्रकारों तथा पुनरीक्षण की प्रक्रिया तथा उसके विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

3.2 अनुवाद प्रक्रिया

अनुवाद प्रक्रिया में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का उचित ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। अच्छे अनुवादक के लिए इन दोनों का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। साहित्यानुवाद में अनुवादक से अपेक्षाएं और अधिक बढ़ जाती हैं। साहित्यानुवाद में अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के साथ–साथ दोनों भाषाओं की संस्कृति का ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि किसी जर्मन पाठ का हिंदी में अनुवाद करना है तो अनुवादक के लिए इन दो भाषाओं के ज्ञान के अलावा जिस चीज की आवश्यकता है वह है इन दोनों की संस्कृतियों का ज्ञान। और यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह ज्ञान फौरी या सतही किस्म का न हो अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाने की संभावना होती है।

अनुवाद प्रक्रिया पर विभिन्न अनुवाद चिंतकों ने चर्चा की है। यूजीन नायडा अनुवाद के मूलतः तीन चरणों की बात करते हैं। ये तीन चरण हैं – पाठ विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन।

न्यूमार्क के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण हैं – बोधन, अभिव्यक्तिकरण और पाठ निर्माण।

न्यूमार्क द्वारा बताए गए अनुवाद प्रक्रिया के ये तीन चरण नायडा द्वारा बताए गए तीन चरणों से मिलते–जुलते ही हैं।

अनुवाद की संज्ञानात्मक प्रक्रिया (cognitive process) में व्याख्यात्मक प्रारूप (interpretive model) के प्रवर्तक डेनिका सेलेस्कोविच तथा मरियाने लेडरर संगोष्ठी निर्वचन के संदर्भ में अनुवाद प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण चरण बताते हैं – पठन तथा बोधन, डिवर्बलाइज़ेशन अथवा मौखिकीकरण और पुनःप्रस्तुतीकरण। जीन डेलिसेल अनुवादक द्वारा अनूदित पाठ को पुनः पढ़ने तथा उसके मूल्यांकन के संदर्भ में एक अन्य चरण की भी चर्चा करते हैं जिसे वे वेरिफिकेशन अथवा प्रमाणीकरण कहते हैं। (संदर्भ : Munday, Jeremy (2001) Introducing Translation Studies : Theories and applications,Routlege, London and Newyork, pg.63)

डॉ भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक *अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रविधि* में अनुवाद प्रक्रिया के पांच चरणों की चर्चा की है। उनके अनुसार पाठ विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन के बाद अनूदित पाठ का समायोजन और मूल पाठ से तुलना भी आवश्यक है। तभी अनुवाद की प्रक्रिया संपूर्ण हो पाती है। उनके अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के ये

पांच चरण हैं – पाठ–पठन, पाठ–विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन एवं मूल से तुलना।

अनुवाद की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों पर चर्चा करते हुए हमने यह अनुभव किया कि विभिन्न अनुवाद चिंतकों द्वारा बताए गए अनुवाद प्रक्रिया के चरणों में काफी हद तक समानता है। इसी क्रम में जिसकी चर्चा जीन डेलिसेल करते हैं, अनुवाद प्रक्रिया के बाहर भी कुछ महत्वपूर्ण चरणों की चर्चा की जाती है जैसे – पुनरीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा। अनुवाद प्रक्रिया के इन बाह्य चरणों में से पुनरीक्षण की विस्तृत चर्चा इस इकाई में भी की जाएगी।

समायोजित रूप से कहें तो अनुवाद प्रक्रिया के ये चरण निम्न प्रकार हैं :

- पाठ अध्ययन
- पाठ विश्लेषण
- भाषांतरण
- प्रतिस्थापन
- तुलनात्मक विश्लेषण

पाठ अध्ययन : अनुवाद करते समय इन सभी चरणों पर अनुवादक को विचार करना होता है। सर्वप्रथम मूल पाठ को समग्रता से पढ़ा जाता है। इस समग्रता के भीतर अनुवादक मूल पाठ की वस्तु, उसकी प्रकृति, उद्देश्य आदि को समझने का प्रयत्न करते हैं। यहां यह ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि सर्जनात्मक साहित्य की भाषा गैर सर्जनात्मक भाषा से पूर्णतः भिन्न और गहन अर्थ सम्पन्न होती है। तात्पर्य यह कि यहां विचार के साथ भावों का भी सामंजस्य होता है। इसलिए अनुवादक के लिए बहुत गंभीरता से इसका अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। यह भी संभव है कि अर्थ के जितने स्तर मूल रचनाकार ने दिए हों उतना जतन करने पर भी अनुवादक उन अर्थ स्तरों तक न पहुँच पाए। और संभव यह भी है कि वह लेखक से भी बेहतर अर्थच्छायाओं को ढूंढ निकाले। ऐसी स्थिति में कई बार अनुवाद मूल से भी बेहतर बन पड़ता है। किंतु ऐसा करते समय अनुवादक को अपनी सीमाओं का भी ध्यान रखना चाहिए। पूरे ध्यान से पढ़ने के बाद अनुवादक पाठ का विश्लेषण करते हैं।

पाठ विश्लेषण के चरण में अनुवादक अनुवाद की प्रक्रिया को तय करते हैं। यह पूरी प्रक्रिया आंतरिक होती है जिसमें अनुवादक एक मनःस्थिति तक पहुँच जाते हैं। इसी चरण के अंतर्गत अनुवादक को यह भी तय करना होता है कि अनुवाद की भाषा क्या हो। अर्थात अनुवादक के लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि वे किसके लिए अनुवाद कर रहे हैं। यानी उस अनुवादक का ग्राहक कौन है। और स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह कि यदि अनुवादक शेक्सपीयर का अनुवाद कर रहे हैं या फिर कालिदास की किसी रचना का अनुवाद कर रहे हैं तो उसकी भाषा क्या होगी। क्या वह वैसी ही शास्त्रसम्मत भाषा होगी या फिर उसे समयानुसार बदलना होगा। पाठक की आयु, उसकी क्षमता, उसकी आवश्यकता आदि सभी बिन्दुओं पर यहीं विचार किया जाना आवश्यक है। इसी के अंतर्गत पाठानुवाद के उद्देश्य की भी चर्चा होगी। कई बार अनुवाद करने का उद्देश्य केवल वस्तु तक सीमित होता है। और कई बार यह और विस्तृत होकर उसके शिल्प, उसकी भाषा के प्रति भी उतना ही गंभीर होता है। यहीं अनुवादक को यह भी तय करना होता है कि अनूद्य कृति की विधा के प्रति उसका क्या दृष्टिकोण है। उसके अनुसार ही उन्हें अनुवाद की नीति तय करनी होती है।

तीसरा चरण **भाषांतरण** है जिसमें अनुवादक मूल भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा में अंतरित करते हैं। यह विश्लेषण के ठीक बाद का चरण है जिसके तहत अनुवादक तय रणनीति के अनुसार पाठ का भाषांतरण करते हैं। इस प्रक्रिया के तहत सही भाषा का चयन, सही वाक्य संरचना, भाषा का अपना मुहावरा, कथ्य के साथ न्याय आदि विभिन्न बिन्दुओं का ध्यान रखा जाता है। यह वास्तव में एक जटिल चरण है जिसमें अनुवादक भाषा, प्रतीकों, संवेदनाओं, अर्थच्छायाओं आदि के सही प्रयोग की समस्या से जूझते रहते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार यह अंतरण मुख्यतः तीन प्रकार का हो सकता है – (क) किसी इकाई का समान इकाई में, जिसे शब्द–शब्द, पदबंध–पदबंध, उपवाक्य–उपवाक्य, वाक्य–वाक्य, वाक्यबंध–वाक्यबंध अंतरण कह सकते हैं। (ख) बड़ी इकाई छोटी इकाई (जैसे उपवाक्य–पदबंध): (ग) छोटी इकाई–बड़ी इकाई (जैसे पदबंध उपवाक्य)।

इस प्रक्रिया का अगला चरण है **प्रतिस्थापन**। यह भाषांतरण के बाद और कहें तो लगभग साथ की ही प्रक्रिया है जिसके तहत अनुवादक स्रोत भाषा की वाक्य संरचना, पदबंध, प्रवाह, अर्थच्छाया, शब्द संगति आदि को लक्ष्य भाषा के पाठ में रखकर तो देखते हैं ही, साथ ही दोनों भाषाओं की संस्कृतियों के साथ न्याय हो पाया है या नहीं, यह भी देखना यहां आवश्यक हो जाता है। दरअसल सर्जनात्मक साहित्य और गैर सर्जनात्मक साहित्य के बीच यही मूलभूत बिन्दु है जहां आकर दोनों के अनुवाद की प्रक्रिया में अंतर आ जाता है। जहां गैर सर्जनात्मक साहित्य विचार के सम्प्रेषण के साथ ही सम्पन्न हो जाता है वहीं सर्जनात्मक साहित्य इस बिन्दु पर केवल एक आयाम तक ही पहुँच पाता है। इसके बाद के चरण में अनुवादक को दोनों संस्कृतियों के बीच के तालमेल का भी खासा ध्यान रखना पड़ता है। अनुवाद पढ़ते समय उसमें मूल की सी गति हो इसके लिए आवश्यक है कि वह लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल हो। उसमें मूल पाठ में कही गई बात पूरी तरह से आ सके।

तुलनात्मक विश्लेषण या कि मूल्यांकन साहित्य के अनुवाद का अंतिम तथा सबसे कठिन चरण है जिसके तहत दोनों पाठों को आमने–सामने रखकर न केवल भाषिक और पाठगत आधार पर तुलना करते हैं अपितु इस तुलना का एक अन्य महत्वपूर्ण आधार होता है सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों का मिलान। मूल्यांकनकर्ता पाठ के प्रकाशन से पूर्व तथा उपरांत मूलपाठ तथा अनूदित पाठ का मिलान कर अपनी टिप्पणी देते हैं जिसकी सहायता से अनुवाद को यथासंभव सुधारा जा सकता है। तुलनात्मक विश्लेषण में मूल्यांकनकर्ता विभिन्न आधारों पर मूल्यांकन करते हैं जिसके अंतर्गत मूल्यांकन का आधार कभी मूलपाठ होता है, तो कभी लक्ष्य समाज यह मूल्यांकन भाषा से लेकर संदर्भ सभी आधारों पर किया जाता है। इसमें उत्तम अनुवाद से तुलना भी एवं आधार है।

3.3 अनुवाद प्रक्रिया का महत्व

अनुवाद कार्य स्वयं में एक जटिल तथा श्रमसाध्य क्रिया है। अनुवाद करते समय अनुवादक को परकाया प्रवेश करना होता है। किसी पाठ को पाठक की तरह पढ़ना तथा अनुवादक की तरह पढ़ना में बहुत अंतर है। पाठ पढ़ते हुए आप उसका सतत आनंद ले सकते हैं लेकिन अनुवाद करते समय प्रत्येक पंक्ति पर रुकना, प्रत्येक शब्द के लिए सही पर्याय खोजना, प्रत्येक अभिव्यक्ति को उचित तरीके से पुनःप्रस्तुत करना बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य हैं।

अनुवाद प्रक्रिया को बेहद सरल उदाहरण से समझा जा सकता है। आप सभी फिल्म, धारावाहिक आदि देखते होंगे। किसी फिल्म या धारावाहिक को देखते हुए क्या आपने कभी उसकी निर्माण प्रक्रिया पर विचार किया है? आपके सामने प्रस्तुत दृश्य के निर्माण में फिल्म निर्देशक से लेकर पूरी टीम को कितना श्रम करना पड़ा होगा, इसकी कल्पना करना भी मुश्किल है क्योंकि आपके सामने प्रस्तुत दृश्य को उन्होंने समूचे दृश्य के रूप में नहीं देखा होगा। दृश्य निर्माण के समय वे उसके विभिन्न तकनीकी दृष्टिकोणों पर विचार कर रहे होंगे। उनके इन प्रयासों के माध्यम से ही एक खूबसूरत फिल्म, धारावाहिक, गीत आदि आपके सामने प्रस्तुत होते हैं। ठीक इसी तरह अनुवादक को भी किसी पाठ के अनुवाद में इतनी ही तकनीकी समस्याओं से उलझना पड़ता है। तब कहीं जाकर एक मुकम्मल पाठ हमारे सामने आ पाता है।

अनुवाद की यह पूरी प्रक्रिया अनुवादक के इसी कठिन परिश्रम की ओर संकेत करती है। किसी पाठ को पूरी तरह समझे बिना तथा उसे आत्मसात् किए बिना अनुवाद कार्य संभव नहीं है। अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों से गुज़रकर ही अनुवादक पाठकों के समक्ष एक अनूदित पाठ प्रस्तुत कर पाते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो अनुवाद प्रक्रिया की तुलना खूबसूरत कपड़े से की जा सकती है जिसकी बुनाई के अनेक सोपानों से गुज़रकर वह हमारे सामने आ पाता है। इस पूरी निर्माण प्रक्रिया में लगाया गया श्रम तथा बुद्धि दोनों का ही उसके निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है।

अनुवाद प्रक्रिया के सभी महत्वपूर्ण चरणों – पाठ अध्ययन, पाठ विश्लेषण, भाषांतरण, प्रतिस्थापन तथा तुलनात्मक विश्लेषण, इन सभी का अनुवाद में विशेष महत्व है। इन सभी चरणों से गुज़रकर कोई पाठ अंतिम रूप प्राप्त कर पाता है। इसलिए हमारे समक्ष उपलब्ध अनूदित पाठ की संरचना की दृष्टि से अनुवाद प्रक्रिया के ये चरण विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि इसी जटिल प्रक्रिया से गुज़रते हुए और अपनी अदम्य मेहनत, लगन तथा समर्पण से ही अनुवादक हमें अज्ञात की ऐसी दुनिया में ले जाते हैं जो इससे पूर्व हमारे लिए अदेखी और अनजान थी। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के सर्जनात्मक तथा ज्ञानात्मक साहित्य की यह संपदा हम तक पहुँच पाती है और हम व्यापक समाज से जुड़कर न केवल समृद्ध होते हैं अपितु विश्वनागरिक बनने की ओर अग्रसर होते हैं।

3.4 अनुवाद के विविध साधन

अनुवाद वास्तव में एक जटिल कार्य है। मूल में एक भाषा में लिखे गए पाठ को दूसरी भाषा और उसके माध्यम से दूसरे समाज व संस्कृति में लाना अनुवादक का कार्य है। ऐसा करते हुए उसे मूल लेखक की मनःस्थिति तथा उसके सामाजिक–सांस्कृतिक–मानसिक स्तर तक पहुँचना होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो उसे परकाया प्रवेश करना होता है। यूं तो मूल रचनाकार भी सृजन करते समय परकाया प्रवेश की स्थिति से गुजरते हैं किंतु अनुवाद के स्तर पर आकर यह परकाया प्रवेश दोगुना हो जाता है। इसलिए अनुवाद को एक दुसाध्य कार्य कहा गया है।

अनुवाद करते समय अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वे दो भाषाओं के साथ–साथ दो समाज, संस्कृतियों, दो विभिन्न परिवेशों से भी परिचित हों जो वास्तव में असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसीलिए अनुवादक को अनुवाद करते समय विभिन्न ज्ञान स्रोतों की आवश्यकता पड़ती है। अनुवादक के इन सहायकों को ही अनुवाद के विविध साधन या उपकरण कहा जाता है। इन विविध साधनों में

विभिन्न प्रकार के कोश, विभिन्न संस्थाएं, वेबसाइट, कंप्यूटरीकृत कोश – विश्वकोश, शब्दकोश, मशीनी अनुवाद आदि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इकाई के इस भाग में इन विविध साधनों पर चर्चा की जा रही है।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि अनुवादक की मदद के लिए और अनुवाद कर्म को सफल बनाने के लिए अनुवाद के विविध उपकरण बेहद कारगर सिद्ध होते हैं। इन महत्वपूर्ण उपकरणों में सबसे अहम भूमिका विभिन्न प्रकार के कोशों की होती है। यहां हम कोश के विभिन्न प्रकारों पर बात करते हुए अन्य उपकरणों पर भी विचार करेंगे।

कोश की परिभाषा

हिंदी शब्द सागर के अनुसार– कोश वह ग्रंथ है जिसमें अर्थ एवं पर्याय सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार– कोश ऐसे संदर्भ ग्रंथ को कहते हैं जिसमें भाषा विशेष के शब्दादि का संग्रह हो या संग्रह के साथ उनके उसी या दूसरी या दोनों भाषाओं के अर्थ पर्याय, प्रयोग या विलोम हो या विशिष्ट अथवा विभिन्न विषयों की प्रविष्टियों की व्याख्या नामों (स्थान, व्यक्ति आदि) का परिचय या कथनों आदि का संकलन क्रमबद्ध रूप में हो।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने कोशों का विभाजन दो भागों में किया है –

- भाषिक कोश
- भाषेतर कोश

भाषिक कोश के अंतर्गत वे कोश आते हैं जिनका सरोकार सीधा–सीधा भाषा से है। इसके दायरे में एकभाषिक कोश, द्विभाषिक कोश, बहुभाषिक कोश, पर्याय कोश, थिसॉरस, मुहावरा–लोकोक्ति कोश आदि आते हैं।

भाषेतर कोश से तात्पर्य कोश के उन प्रकारों से है जिनका क्षेत्र भाषा तक सीमित नहीं होता। दूसरे शब्दों में कहें तो वे कोश जिनका उपयोग हम शब्द का अर्थ ढूंढने के लिए नहीं अपितु अवधारणा अथवा संकल्पना का अर्थ, उसके मायने और भाषा विशेष में उसका स्थान और उसकी उपयोगिता जानने के लिए करते हैं। भाषेतर कोशों में विश्व कोश, साहित्य कोश, धार्मिक कोश, विषय कोश आदि आते हैं।

आइए, क्रमवार इन कोशों की चर्चा करते हैं।

एकभाषिक कोश

एकभाषिक कोश से तात्पर्य उन कोशों से है जिनमें एक भाषा के शब्दों के उसी भाषा में अर्थ दिए जाते हैं।

उदाहरण :

- Oxford Advanced Learner's Dictionary
- Longman Dictionary of Contemporary English
- Cambridge International Dictionary of English
- डॉ. हरदेव बाहरी द्वारा संपादित हिंदी शब्द कोश
- रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित मानक हिंदी कोश

एकभाषिक कोश का प्रयोग एक ही भाषा के भीतर शब्द की विभिन्न अर्थछवियों को जानने के लिए किया जाता है। कई बार एकभाषिक कोश का प्रयोग कठिन शब्द के सरल अथवा सरलतम अर्थ को जानने के लिए भी किया जाता है। साथ ही, एकभाषिक कोश में कई बार किसी शब्द का तुलनात्मक रूप से विस्तृत अर्थ भी मिल जाता है।

द्विभाषिक कोश

अनुवाद कार्य के लिए द्विभाषिक कोश अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुवादक दो भाषाओं को जानने के कितने भी दावे कर लें लेकिन मनुष्य की निश्चित सीमा होने के कारण वे किसी भी भाषा को पूर्णतः नहीं जान पाते। विदेशी भाषाओं के संदर्भ में तो यह कथन और समीचीन हो जाता है। स्रोतभाषा के पाठ को पढ़ते तथा अनूदित करते समय ऐसी कई समस्याएं पाठक अथवा अनुवादक के सामने आती हैं। द्विभाषिक कोश ऐसी स्थिति में बेहद उपयोगी सिद्ध होता है।

साथ ही, द्विभाषिक कोश में शब्दों के अर्थ के साथ–साथ उनके सही उच्चारण तथा प्रयोग आदि की भी जानकारी मिल जाती है।

उदाहरण :

- अंग्रेजी–हिंदी कोश : फादर कामिल बुल्के
- Oxford English-English-Hindi Dictionary
- संस्कृत–हिंदी शब्दकोश : वामन शिवराव आप्टे
- The Practical Sanskrit-English Dictonary : वामन शिवराम आप्टे

बहुभाषिक कोश

बहुभााषिक कोश से अभिप्राय उस कोश से है जिसमें दो से अधिक भाषाओं में अर्थादि दिए जाते हैं। बहुभाषिक कोश का प्रयोग उस स्थिति में होता है जब अनुवाद करते समय दो भाषाओं के बीच एक सेतु भाषा का भी प्रयोग किया जाए। उदाहरण स्वरूप तमिल से गुजराती में अनुवाद करते समय यदि अनुवादक को इनमें से कोई एक भाषा नहीं आती है तो वे हिंदी अथवा किसी अन्य भाषा के माध्यम से अनुवाद कार्य कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में त्रिभाषिक अथवा बहुभाषिक कोश की आवश्यकता अनुभव होगी। त्रिभाषिक कोश के अतिरिक्त भी कई भाषाओं के कोश उपलब्ध हैं जो अनुवाद की आवश्यकता और भाषा की संप्रेषणीयता को ध्यान में रखते हुए निर्मित किए गए हैं।

उदाहरण :

- संस्कृत–हिंदी–अंग्रेजी शब्दकोश : डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज
- Ajanta French-English-Hindi Dictionary-(e.d) Dinesh Chander Kapoor.

थिसॉरस

थिसॉरस से तात्पर्य एक ऐसे कोश से है जिसमें अवधारणाओं अथवा संकल्पनाओं के आशय के अनुसार शब्दों का संयोजन किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो थिसॉरस के अंतर्गत एक शब्द के साथ उसकी अवधारणा से मिलते अन्य शब्द, मुहावरे, भाषिक प्रयोग आदि एक ही स्थान पर मिल जाते हैं। ऐसे में रचनाकार अथवा अनुवादक को एक अर्थ तथा उससे मिलते अन्य अर्थों की खोज में भटकना नहीं पड़ता। थिसॉरस

तथा पर्याय कोश की अवधारणा में कुछ समानता देखी जाती है। यानी दोनों ही कोशों में एक ही शब्द के विभिन्न पर्याय तथा उनके विस्तृत आशय दिए जाते हैं।

उदाहरणः

- Roget's International Thesaurus
- अरविंद सहज समांतर कोश (संपा) अरविंद कुमार तथा कुसुम कुमार

मुहावरा–लोकोक्ति कोश

मुहावरे तथा लोकोक्तियां समाज, संस्कृति तथा परंपराओं के साथ भाषा के अंतर्गुंफन की परिचायक है। अनुवादक को अनुवाद तथा विशेष तौर पर सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद के दौरान अनेक प्रकार की भाषागत समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भाषा में मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा पर रचनाकार की पकड़ की ओर संकेत करता है। वहीं इनका सही–सही अनुवाद भाषा पर अनुवादक की सही पकड़ का भी द्योतक है। मुहावरे तथा लोकोक्तियों का अनुवाद अपने आप में एक जटिल कार्य है जिसे ध्यान में रखते हुए विभिन्न भाषाओं में मुहावरे तथा लोकोक्ति कोशों का निर्माण किया गया है। मुहावरे तथा लोकोक्ति का अनुवाद करते हुए अनुवादक को बेहद सावधानी रखने की जरूरत पड़ती है। भाषा का लाक्षणिक तथा व्यंजनापरक प्रयोग होने के कारण इनका अनुवाद भी अभिधापरक नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में या तो अनुवादक को समतुल्य मुहावरे–लोकोक्तियों की खोज लक्ष्यभाषा में करनी पड़ती है अथवा मुहावरे–लोकोक्ति का सहीं अर्थ समझते हुए उनका यथासंभव अनुवाद करना होता है।

उदाहरण :

अंग्रेजी	**हिंदी**
To fight with Pope while in Rome	पानी में रहकर मगर से बैर
A bad carpenter quarrels with his tools	नाच न जाने आंगन टेढ़ा
Birds of same feather flock together	चोर–चोर मौसरे भाई
	एक ही थैली के चट्टे–बट्टे
Might is right	जिसकी लाठी उसकी भैंस

मुहावरा–लोकोक्ति कोश के उदाहरण–

1. मुहावरा–लोकोक्ति कोश : डॉ. हरदेव बाहरी
2. अंग्रेजी–हिंदी मुहावरा–लोकोक्ति कोश : डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. Oxford Dictionary of English Idioms (ed.) John Ayto.
4. Cambridge Idioms Dictionary by Cambridge.
5. लोकभारती मुहावरा कोश : बदरीनाथ कपूर

इन महत्वपूर्ण भाषिक कोशों के अतिरिक्त उच्चारण कोश, पर्याय कोश, नाम कोश आदि भी प्रमुख कोश हैं।

भाषेतर कोश

भाषेतर कोश में प्रमुख हैं –विश्वकोश, विषयकोश तथा साहित्यकोश।

विश्वकोश

विश्वकोश का अंग्रेजी पर्याय है एनसाइक्लोपीडिया। विश्वकोश में विश्व के अनेक विषयों की जैसे – धर्म, संस्कृति, दर्शन, कला, इतिहास, भूगोल आदि की विस्तृत जानकारी दी जाती है। विश्वकोश चूंकि एक भाषा अथवा एक भाषा के निश्चित ज्ञान तक सीमित नहीं है इसलिए इसकी गणना भाषेतर कोशों में की जाती है। इसमें कोश के अनुसार वर्णानुक्रम का ध्यान रखा जाता है ताकि किसी भी शब्द अथवा अवधारणा को सरलता से खोजा जा सके। किसी भी शब्दकोश का उद्देश्य दिए गए शब्द के उसी अथवा अन्य भाषा में अर्थ प्रदान करना होता है। इसी कारण वह सीमित भी होता है जबकि विश्वकोश से तात्पर्य ऐसे कोश से है जिसके अंतर्गत किसी एक शब्द अथवा अवधारणा को विभिन्न दृष्टिकोणों से तथा व्यापक रूप में समझाया जाता है। अनुवादक चूंकि दूसरी और कई बार अपनी भाषा की संस्कृति, समाज और उससे जुड़ी विभिन्न अवधारणाओं से पूरी तरह परिचित नहीं होते। ऐसी स्थिति में वे विश्वकोश की मदद से न केवल अर्थ की तह तक पहुँचते हैं अपितु उसका उचित अनुवाद भी संभव हो पाता है।

उदाहरण :

1. Collin's Encyclopedia
2. Encyclopedia Britannica
3. हिंदी विश्वकोश–नागरी प्रचारिणी सभा
4. समाज विज्ञान विश्वकोश–(संपा) अभय कुमार दुबे

विषय कोश

विषय कोश के अंतर्गत संबद्ध विषय तथा उससे जुड़ी विभिन्न संकल्पनाओं, अवधारणाओं आदि की विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है। विषय कोश के अंतर्गत किसी शब्द विशेष का विषय विशेष में क्या अर्थ होता है, इसके बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। भाषा, दर्शन, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि के कोश उस विषय के गहन अध्ययन में बहुत सहायक हैं।

उदाहरण :

- मानविकी परिभाषा कोश–राजकमल प्रकाशन
- गृहविज्ञान परिभाषा कोश–मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी
- गणित परिभाषा कोश–हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली
- रसायन परिभाषा कोश–हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली।

साहित्यकोश

जिस प्रकार विषय कोश किसी विषय के क्षेत्र में गहन अध्ययन हेतु उपयोगी सामग्री उपलब्ध करवाता है, उसी तरह साहित्यकोश साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न कालों, युगों, अवधारणाओं, प्रवृत्तियों, प्रयोगों, महत्वपूर्ण रचनाकारों आदि के विषय में गहन अध्ययन हेतु जानकारी उपलब्ध करवाता है। विश्वसाहित्य में कई अवधारणाएं प्रमुख रही हैं। वे सभी अवधारणाएं किसी एक समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति की देन नहीं है। विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न समाज के साहित्य और साहित्यालोचन में नई अवधारणाओं की शुरुआत हुई जिन्हें समय–समय अन्य भाषाओं के साहित्य में भी अपना लिया गया। साहित्यानुवाद करते समय अनुवादक के लिए अपेक्षित है कि उन्हें इन विभिन्न

अवदानों के विषय में समुचित जानकारी हो। ऐसी स्थिति में साहित्यकोश अनुवादक के सहायक हो सकते हैं।

उदाहरण :

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश–भारतीय भाषा परिषद

संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ–द्वारका प्रसाद शर्मा चतुर्वेदी व पं. तारिणीश झा

हिंदी साहित्य कोश– डॉ. धीरेंद्र वर्मा

इन कोशों के अतिरिक्त परिभाषा कोश, उपभाषा कोश, अपभाषा कोश, सूक्ति कोश, विलोम कोश, उच्चारण कोश, व्युत्पत्ति कोश आदि भी कोश के अन्य महत्वपूर्ण प्रकार हैं। जिनका उपयोग अनुवादक समय–समय पर करते हैं। अनुवादक के सहायकों में महत्वपूर्ण भूमिका इंटरनेट पर उपलब्ध ज्ञान का अकूत भंडार, कंप्यूटरीकृत विभिन्न कोश तथा मशीनी अनुवाद के विभिन्न सॉफ्टवेयर हैं जिनकी सहायता अनुवादक अनुवाद कर्म के दौरान लेते रहते हैं।

3.5 अनुवाद में विविध साधनों की उपयोगिता

जैसा कि हम जानते हैं कि अनुवाद एक बेहद जटिल कार्य है। यह जटिलता विभिन्न प्रकार के पाठों के अनुसार विभिन्न प्रकार की है। उदाहरणतः यदि साहित्य के अनुवाद की बात करें तो साहित्य की भाषा, मुहावरे–लोकोक्तियों आदि का प्रयोग, लेखक तथा रचना का परिवेश, रचना की विधा तथा शिल्प, भाषा शैली आदि ऐसी अनेक विशेषताएं हैं जो साहित्य को ज्ञान की अन्य शाखाओं से अलगाती हैं। साहित्य की ये सभी विशेषताएं ही अनुवादक के लिए चुनौती के रूप में उसके समक्ष होती हैं जिनसे अनुवादक को गुज़रना होता है।

इसी तरह ज्ञानात्मक साहित्य जैसे – इतिहास, दर्शन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासनिक, विधि, बैंकिंग, मीडिया आदि के पाठों की अपनी विशेषताएं हैं जिनमें पाठ विशेष के अनुवाद के दौरान क्षेत्र अथवा विषय विशेष की न केवल जानकारी, अपितु अद्यतन सूचनाएं, भाषा प्रयुक्ति, प्रयोग के क्षेत्र, भाषा की सीमाएं तथा शक्तियां, विषय विशेष से संबंधित कोश तथा पारिभाषिक शब्दावली आदि की जानकारी की अनुवादक से अपेक्षा की जाती है। साहित्य की तुलना में ज्ञानात्मक साहित्य की भाषा अभिधात्मक तथा एकार्थी होती है और यह आवश्यक है कि अनुवादक को न केवल दो भाषाओं की जानकारी हो अपितु विषय विशेष के कोशों, पारिभाषिक शब्दावली और क्षेत्र से संबधित जानकारी भी हो और उनके प्रयोग की सही समझ भी हो।

अनुवाद कार्य में विविध साधनों की उपयोगिता को अनुवाद विषय को ध्यान में रखकर ही समझा जा सकता है। जैसे यदि साहित्य का अनुवाद कर रहे हैं तो उसमें किस प्रकार की समस्याएं आएंगी, यह पाठ पर ही आधारित होता है। वस्तुतः साहित्य अर्थात सर्जनात्मक साहित्य में संस्कृति, समाज, लेखक का अपना परिवेश, भाषा में मुहावरे–लोकोक्तियां, अपभाषा, विशिष्ट प्रयोग आदि कई तरह की समस्याएं आती हैं जिनके समाधान के लिए अनुवादक को विभिन्न प्रकार के कोशों की आवश्यकता पड़ती हैं जिनका अध्ययन हम अगले भाग में करेंगे।

ठीक उसी तरह ज्ञानात्मक साहित्य – इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, आदि के अनुवाद के लिए भाषा की शब्द शक्ति से अधिक मूल भाषा के लक्ष्यभाषा में उचित पर्याय मिलना अधिक महत्वपूर्ण है। जिनके लिए अनुवादक को विषय विशेष के पारिभाषिक कोश और पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है।

इसी तरह विधि साहित्य, कार्यालयी साहित्य, बैंकिंग साहित्य आदि के लिए भी क्षेत्र विशेष की उचित जानकारी, उनकी वेबसाइट पर उपलब्ध नवीनतम सूचना तथा पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है।

स्पष्ट है कि एक अनुवाद को अच्छा अनुवाद बनाने के लिए ये अनुवाद के ये विभिन्न साधन या उपकरण बेहद कारगर साबित होते हैं।

3.6 अनुवाद पुनरीक्षण

अनुवाद की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए तीन मुख्य प्रक्रियाओं पर विस्तार से चर्चा की जाती है – विश्लेषण, अंतरण तथा पुनर्गठन। इसी पुनर्गठन को भाषांतरण तथा पुनर्स्थापन के संदर्भ में समझा जा सकता है। ऊपर हमने इनके अतिरिक्त तुलनात्मक विश्लेषण की भी चर्चा की है जिसका अर्थ होता है अनूदित पाठ और स्रोतपाठ की तुलना करना। इसी क्रम में एक अन्य बेहद महत्वपूर्ण प्रक्रिया है पुनरीक्षण।

पुनरीक्षण शब्द पुनः ईक्षण से मिलकर बना है जिसका अर्थ है पुनः देखना। अनुवाद के संदर्भ में पुनः ईक्षण से तात्पर्य है अनूदित पाठ का पुनःपाठ तथा उसमें अपेक्षित सुधार करना। किसी पाठ के अनुवाद से पूर्व अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे दो भाषाओं के साथ उस विषय विशेष का भी ज्ञान हो जिसका कि वे अनुवाद कर रहे है। स्पष्ट है कि अनुवादक के लिए दो भाषाओं के साथ संबंधित विषय का ज्ञान होना आवश्यक है। इतनी जानकारी होने के बावजूद भी अनुवादक को पाठ का अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन सभी समस्याओं को ही अनुवादक की चुनौतियां कहा जाता है। ये सभी समस्याएं भाषागत, संस्कृतिगत, विषय के ज्ञान से संबंधित अथवा अन्य अनेक कारणों से हो सकती हैं। अनुवादक इसी क्रम में सबसे पहले स्रोतपाठ का विस्तृत अध्ययन करते हैं और फिर उसके पश्चात पाठ का विश्लेषण तथा अंततः अंतरण यानि भाषांतरण किया जाता है। इतनी सब सावधानियां बरतने के बावजूद भी अनुवादक से अनेक त्रुटियां छूट जाती हैं जो संभवतः स्वाभाविक भी है। ऐसी स्थिति में मुद्रण से पूर्व अनूदित पाठ को फिर से पढ़ा तथा आवश्यकता पड़ने पर सुधारा भी जाता है। इसी प्रक्रिया को पुनरीक्षण कहा जाता है। पुनरीक्षण का यह कार्य स्वयं अनुवादक अथवा किसी अन्य व्यक्ति अथवा दोनों का एक समूह भी कर सकता है। पुनरीक्षण कार्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण है निष्ठा, समर्पण एवं तटस्थता। पाठ से स्वयं को पूरी तरह तटस्थ रखकर उसका पुनःपठन तथा पुनरीक्षण किया जा सकता है। अनुवादक से हुई सामान्य भूलों अथवा त्रुटियों को पकड़कर उसमें अपेक्षित सुधार करना और उसे बेहतर पाठ बनाना ही पुनरीक्षक का कर्तव्य है। पुनरीक्षण की इस प्रक्रिया को और बेहतर समझने के लिए कुछ उदाहरणों के माध्यम से बात करना अधिक उचित होगा। उदाहरण के लिए–
मूल : IGNOU's unique strength lies in its self-learning instructional materials in a wide range of disciplines.

अनुवाद : इग्नू की अद्वितीय शक्ति विभिन्न अनुशासनों में उपलब्ध खुद सीखने वाली सामग्री में पड़ी है।

उपयुक्त अनुवाद : इग्नू की अद्वितीय शक्ति उसके विभिन्न अनुशासनों में उपलब्ध स्व–अध्ययन सामग्री है।

ऊपर दिए गए उदाहरण के माध्यम से अनुवाद और पुनरीक्षण के अंतर को समझा जा सकता है। पहला अनुवाद मूल वाक्य में दिए गए शब्दों का सही अनुवाद तो है

लेकिन अर्थ को पूर्णतः संप्रेषित नहीं करता है। अनुवादक का काम केवल अनुवाद कर देना ही नहीं है अपितु यह भी सुनिश्चित करना है कि मूल पाठ में कही गई बात लक्ष्य पाठ में पूर्णतः संप्रेषित हुई या नहीं।

आइए, एक अन्य उदाहरण की सहायता से इसे और बेहतर समझने का प्रयास करें –

मूल : Mass illiteracy is India's sin and shame and must be liquidated.

अनुवाद : जन–साधारण की निरक्षरता भारत का पाप तथा बदनामी है और इसे परिसमाप्त करना चाहिए।

उपयुक्त अनुवाद : व्यापक निरक्षरता भारत के लिए बेहद शर्मनाक है तथा इसका निवारण करना होगा।

अनुवाद की दृष्टि से दोनों ही वाक्य ठीक हैं किंतु संप्रेषण की दृष्टि से देखा जाए तो नीचे वाला अनुंवाद बेहतर होगा। पुनरीक्षक मूल तथा अनूदित पाठ का पुनःविश्लेषण करते हुए एवं वाक्य की आत्मा को पूरी तरह समझते हुए प्रस्तुत अनुवाद को मूल के अनुसार सुधारता है। और पाठ का पुनरीक्षण हो जाते ही मुद्रण के बाद उस पाठ में पाई जाने वाली किसी भी प्रकार की चूक अथवा त्रुटि की जिम्मेदारी अनुवाद पुनरीक्षक की हो जाती है। इस इकाई के अगले भाग में अनुवाद पुनरीक्षक के गुणों अथवा अनुवाद पुनरीक्षक से अपेक्षाओं की चर्चा की जा रही है।

3.7 पुनरीक्षण की प्रक्रिया

आइए, अब पुनरीक्षण की प्रक्रिया को समझते हैं। पुनरीक्षण की प्रक्रिया भी अनुवाद की प्रक्रिया से मिलती जुलती है। पुनरीक्षक सर्वप्रथम मूल पाठ का आद्योपांत अध्ययन करते हैं। इसके बाद मूल पाठ तथा अनूदित पाठ को एक साथ रखकर पढ़ा जाता है। एक साथ पढ़ने के इस क्रम में पुनरीक्षक मूल और अनूदित पाठ में मिलान करते चलते हैं। अनुवाद प्रक्रिया में इसे विश्लेषण कहा जाता है। विश्लेषण की इस प्रक्रिया के तहत पुनरीक्षक अपनी समझ के अनुसार त्रुटियों को रेखांकित कर लेते हैं। ये त्रुटियां विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं जैसे – पाठ के कथ्य के स्तर पर, भाषायी स्तर पर तथा शैलीगत आधार पर। पुनरीक्षक इन त्रुटियों को रेखांकित करते समय कागज़ के हाशिये पर उन शब्दों या प्रयुक्तियों के स्थान पर बेहतर प्रयुक्तियां लिखते चलते हैं। इस तरह क्रमवार पूरे पाठ में सुधार कर लिया जाता है। त्रुटिसुधार की यह प्रक्रिया संपन्न हो जाने पर पुनरीक्षक वाक्यों तथा प्रयोग के आधार पर उसका पठन करके देखते हैं। यह पठन इस आधार पर भी देखा जाता है कि लक्ष्य भाषा की भाषा और संस्कृति के अनुसार अनूदित पाठ संप्रेषित हो पा रहा है या नहीं। पुनरीक्षक का यह दायित्व बनता है कि वे केवल त्रुटिगत शब्दों के स्थान पर बेहतर या नए शब्द मात्र न रख दें अपितु यह भी देखें कि लक्ष्यभाषा की संस्कृति में वे शब्द ठीक से संप्रेषित भी हो पा रहे हैं या नहीं। साथ ही, अनूदित पाठ पढ़ते हुए कोई असुविधा तथा असहजता तो नहीं हो रही।

इन सभी आधारों पर अनूदित पाठ का अध्ययन तथा जांच कर लेने के बाद पुनरीक्षक अंतिम पाठ का निर्माण करते हैं। इस निर्माण प्रक्रिया में वे स्वयं द्वारा किए गए त्रुटि निवारणों को शामिल करते चलते हैं और पाठ को अंतिम प्रारूप देते हैं।

पुनरीक्षण की इस प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए आपने महसूस किया गया होगा कि अनुवाद और पुनरीक्षण की प्रक्रिया समान ही है। अंतर केवल इतना है कि पुनरीक्षण वस्तुतः अनूदित पाठ को फिर से देखना तथा उसमें आवश्यकतानुसार सुधार और परिवर्द्धन करके उसे अंतिम प्रारूप प्रदान करना है।

3.8 अनुवाद पुनरीक्षण का महत्व

अनुवाद प्रक्रिया के विषय में विस्तार पढ़ने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद प्रक्रिया के कई महत्वपूर्ण चरण होते हैं। इसी क्रम में पुनरीक्षण भी अनुवाद प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। विभिन्न चिंतकों ने अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपान गिनवाए हैं। नायडा के प्रारूप के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण हैं – विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन। न्यूमार्क द्वारा बताए गए चरणों में – बोधन, अभिव्यक्तिकरण और पाठनिर्माण। अनुवाद प्रक्रिया के आंतरिक चरण के रूप में अनुवाद पुनरीक्षण को नहीं देखा जाता किंतु अनूदित पाठ प्रकाशित होकर व्यापक समाज तक पहुँचने से पहले जिन अन्य महत्वपूर्ण चरणों से गुज़रता है उनमें पुनरीक्षण तथा मूल्यांकन महत्वपूर्ण हैं। यद्यपि मूल्यांकन अनुवाद प्रक्रिया का एक ऐसा चरण है जो पाठ के प्रकाशन के बाद भी किया जाता है।

अनुवादक के स्तर पर सामान्यतः अनुवाद की प्रक्रिया पुनर्गठन अथवा पाठनिर्माण के स्तर पर पूरी हो जाती है जिसके पश्चात अनुवादक का काम समाप्त हो जाता है। यहां से पुनरीक्षक का प्रवेश होता है और वे पाठ का आद्योपांत अध्ययन तथा तथ्यगत एवं भाषागत विभिन्न स्तरों पर मिलान करते हुए पाठ को अंतिम रूप देते हैं। कभी–कभी अनुवादक स्वयं भी अपने पाठ का पुनरीक्षण करते हैं लेकिन ज़्यादा बेहतर स्थिति तभी होगी जभी पुनरीक्षण का कार्य अनुवादक से इतर कोई अन्य व्यक्ति करे।

कोई भी पाठ जब पाठक के हाथों तक पहुँचता है तो इस पूरी निर्माण प्रक्रिया में वह कई हाथों से होकर गुज़रता है। अनूदित पाठ के संदर्भ में कहा जाए तो अनुवादक, पुनरीक्षक तथा मूल्यांकनकर्ता – सभी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पुनरीक्षक किसी अनूदित पाठ को पढ़ते समय भाषा, शिल्प, वाक्य विन्यास, भाषिक अशुद्धियां, वर्तनी की भूलें, तथ्यगत भूलों आदि की न केवल जांच करते हैं अपितु उसमें सुधार करके उसे इन सभी दृष्टियों से परिष्कृत करने का काम करते हैं। यद्यपि पाठ के अनुवाद के दौरान अनुवादक अपनी तरफ से बेहतर अनुवाद का प्रयास करते हैं और अपनी ओर से अंतिम प्रारूप जमा करने से पूर्व स्रोत तथा लक्ष्य पाठ का मिलान करते हैं किंतु अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक पाठ से इतना अधिक तादात्म्य बना लेते हैं और अनूदित पाठ से इस तरह जुड़ जाते हैं कि कई बार कई गलतियां अदेखी रह जाती हैं। ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक का महत्व बढ़ जाता है क्योंकि वे न केवल तटस्थ दृष्टि से पाठ का अध्ययन तथा विश्लेषण करते हैं अपितु अनुवादक से अलग एक अन्य पाठक के रूप में पाठ की भाषा तथा अन्य अशुद्धियों को देखते, उन्हें सुधारते और एक कसे हुए पाठ को प्रस्तुत करते हैं।

इस दृष्टि से अनूदित पाठ को अंतिम प्रारूप देने में पुनरीक्षक का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

3.9 अनुवाद पुनरीक्षक से अपेक्षाएं

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद पुनरीक्षण का कार्य केवल एक बेहद जिम्मेदारी भरा कार्य है और किसी भी अनूदित पाठ का पुनरीक्षण हो जाने पर उसमें पाई जाने वाली किसी भी त्रुटि के लिए पुनरीक्षक जिम्मेदार है, इसलिए अनुवादक पुनरीक्षक से कुछ अपेक्षाएं रहती हैं। पुनरीक्षक से की जाने वाली ये अपेक्षाएं इस प्रकार हैं –

1. पुनरीक्षक को अनुवादक की ही भांति दोनों भाषाओं की अच्छी समझ होनी चाहिए। पुनरीक्षक में सूक्ष्म विश्लेषण की क्षमता हो।

2. दो भाषाओं के ज्ञान के साथ–साथ पुनरीक्षक को संबंधित विषय की भी अच्छी समझ होना आवश्यक है।
3. पुनरीक्षक पाठ तथा अनुवादक दोनों के प्रति निष्पक्ष तथा तटस्थ हो।
4. पुनरीक्षक में अनूदित पाठ को पढ़कर समझने तथा उसमें रह गई त्रुटियों की पहचान की क्षमता हो।
5. पुनरीक्षक में किसी शब्द, वाक्य अथवा अभिव्यक्ति के सही विकल्प की तलाश करने की समझ हो।
6. पुनरीक्षक में निर्णय लेने की क्षमता हो।
7. पुनरीक्षक में सही शब्द अथवा अभिव्यक्ति का चयन करने की क्षमता हो।
8. पुनरीक्षक को चाहिए कि पुनरीक्षण कार्य करते समय वे न केवल उपलब्ध ज्ञान तक सीमित रहे अपितु पाठ के समुचित अनुवाद के लिए विषय से संबंधित अद्यतन जानकारी भी एकत्रित करें।
9. पुनरीक्षक से अपेक्षित है कि वे पुनरीक्षण कार्य करते समय पाठ के प्रति सजग एवं ईमानदार बने रहें तथा उस पर अतिशय ज्ञान न लादें।
10. पुनरीक्षक से अपेक्षित है कि उनमें पाठ को अंतिम प्रारूप देने की समझदारी और सामर्थ्य हो।

3.10 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह जान पाए कि अनुवाद प्रक्रिया का अनुवाद के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा किसी भी पाठ के मुद्रण से पहले पुनरीक्षण की आवश्यकता क्यों पड़ती है। इस इकाई में आपने अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद प्रक्रिया के महत्व, अनुवाद कार्य में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न साधनों के माध्यम से विभिन्न कोशों तथा उनकी उपयोगिता के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। आपने यह भी जाना कि अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों में एक अन्य महत्वपूर्ण सोपान पुनरीक्षण भी है। पुनरीक्षण करते समय पुनरीक्षक से क्या–क्या अपेक्षाएं रहती हैं, इसकी भी जानकारी इस इकाई के माध्यम से आपको प्राप्त हुई। अगली इकाई खंड में आप साहित्यानुवाद, साहित्यानुवाद का महत्व तथा इससे जुड़े अन्य आयामों के बारे में पढ़ेंगे।

3.11 बोध प्रश्न

1. अनुवाद प्रक्रिया में अच्छे अनुवादक को .... का ज्ञान होना आवश्यक है–

   (i) स्रोत भाषा (ii) लक्ष्य भाषा

   (iii) (i) और (ii) (iv) कूट भाषा

2. डॉ० भोलानाथ तिवारी ने कोशों का विभाजन कितने भागों में किया है?

   (i) एक (ii) दो

   (iii) तीन (iv) चार

3. पुनरीक्षण का अर्थ है–
   (i) पुनः देखना (ii) आलोचना
   (iii) संक्षेपण (iv) उपर्युक्त में से कोई नहीं
4. अनूदित पाठ के संदर्भ में किसकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है–
   (i) अनुवादक (ii) पुनरीक्षक
   (iii) मूल्यांकनकर्ता (iv) उपर्युक्त सभी

3.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपान कौन–कौन से हैं?
2. नाइडा द्वारा बताए गए अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों की चर्चा कीजिए।
3. न्यूमार्क द्वारा बताए गए अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों की चर्चा कीजिए।
3. अनुवाद के विभिन्न साधनों से आपका क्या अभिप्राय है?
4. क्या कोश अनुवाद के साधन हैं? महत्वपूर्ण कोशों की चर्चा कीजिए।
5. भाषिक तथा भाषेतर कोशों के बीच क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए।
6. पुनरीक्षण से आपका क्या अभिप्राय है?
7. पुनरीक्षण प्रक्रिया पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
8. अनुवाद में पुनरीक्षण/पुनरीक्षक के महत्व पर प्रकाश डालिए।
9. एक अच्छे पुनरीक्षक से क्या अपेक्षाएं की जाती हैं?
10. अनुवादक और पुनरीक्षक में क्या अंतर है? संक्षेप में समझाइए।
11. क्या पुनरीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का एक सोपान है? चर्चा कीजिए।
12. अच्छे अनुवादक में क्या–क्या गुण होने चाहिए? वर्णन कीजिए।

3.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- प्रो. हरिमोहन, अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
- नवीन, देवशंकर, अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
- नीता गुप्ता (संपा), अनुवाद शतक विशेषांक 100–101, भारतीय अनुवाद परिषद, अंक जुलाई–दिसंबर 1999
- नीता गुप्ता (संपा), अनुवाद शतक विशेषांक 102–103, भारतीय अनुवाद परिषद, अंक जनवरी–जून 2000

3.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ii)
2. (ii)
3. (i)
4. (iv)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 साहित्यानुवाद : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 साहित्य : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

4.3 'साहित्य' एवं 'काव्य' : समानता–असमानता का संदर्भ

4.4 'साहित्य' (लिटरेचर) के भेद

4.5 साहित्य की विधाएँ

4.6 साहित्यानुवाद : अर्थ और प्रकार

4.7 ज्ञानात्मक और सर्जनात्मक साहित्यानुवाद : समानता और असमानता

4.7.1 समानता के आयाम

4.7.2 असमानता के तत्व

4.8 क्या साहित्य का अनुवाद संभव है?

4.9 साहित्यानुवाद : अर्थ एवं शैली के स्तर पर समतुल्यता का प्रश्न

4.10 साहित्यानुवाद का महत्व

4.11 सारांश

4.12 शब्दावली

4.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- साहित्य के अर्थ, स्वरूप, भेद और विधाओं से परिचित हो सकेंगे;
- 'साहित्य' एवं 'काव्य' शब्द के पारंपरिक अर्थ में समानता और असमानता को समझ सकेंगे;
- 'साहित्यानुवाद' के अर्थ और प्रकार को समझ पाएँगे और ज्ञानात्मक साहित्यानुवाद से इसका अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- साहित्यानुवाद का संभावना तथा इसमें अर्थ एवं शैली के स्तर पर समतुल्यता के प्रश्न के अपेक्षित समाधान जान सकेंगे; और
- साहित्यानुवाद के महत्व के विभिन्न संदर्भों से परिचित हो सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र और प्रकार क्या हैं। साथ ही आप अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद के साधनों से परिचित हो चुके हैं। अनुवाद में पुनरीक्षण की आवश्यकता और महत्व का भी आपको स्पष्ट रूप से बोध चुका है।

प्रस्तुत इकाई 'साहित्यानुवाद' से संबंधित है। इस इकाई में आप साहित्यानुवाद की अवधारणा और आयामों से परिचित हो सकेंगे। इन आयामों में साहित्य का व्युत्पत्तिपरक अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, भेद और विधाओं के साथ–साथ इस प्रश्न पर विचार करना भी शामिल है कि 'साहित्य' एवं 'काव्य' शब्द के पारंपरिक अर्थ में समानता–असमानता क्या है। इसके बाद आपके लिए यह जानना जरूरी हो जाता है कि 'साहित्यानुवाद' का अर्थ और प्रकार क्या है तथा ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद से यह किस प्रकार भिन्न है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साहित्यानुवाद की संभावना तथा अर्थ एवं शैली के स्तर पर समतुल्यता के प्रश्न का संभावित समाधान बता सकेंगे। इकाई के अंत में साहित्यानुवाद के महत्व के विभिन्न संदर्भगत आयामों पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार, इस इकाई में आपको साहित्यानुवाद और उसके विभिन्न आयामों का संक्षेप में परिचय प्राप्त हो सकेगा। आइए, सबसे पहले यह जानें कि 'साहित्य' का अर्थ और स्वरूप क्या है।

4.2 साहित्य : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

'साहित्यानुवाद', 'साहित्य' और 'अनुवाद' से मिलकर बना शब्द है। सबसे पहले इन्हीं दोनों शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करना जरूरी है। 'अनुवाद' के बारे में इकाई 1 में आप यह पढ़ चुके हैं कि अपने प्रचलित अर्थ में अनुवाद, एक भाषा में व्यक्त कथ्य–विचारों को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना है। 'साहित्य' शब्द के संदर्भ में हम सबसे पहले इसके व्युत्पत्तिमूलक अर्थ–परिभाषाओं और स्वरूप पर विचार करेंगे।

व्युत्पत्तिपरक अर्थ :

हिंदी भाषा में 'साहित्य' शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, उसके लिए संस्कृत में 'वाङ्मय' एवं अंग्रेजी के 'Literature' शब्द व्यवहार में लाए जाते हैं। ये तीनों ही शब्द, व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। इस संदर्भ में सबसे पहले 'साहित्य' शब्द पर विचार किया जा सकता है।

'साहित्य' : 'साहित्य' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'धा' धातु में 'सम्' उपसर्ग और 'यत्' प्रत्यय लगने से हुई है। इस तरह, 'साहित्य' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है – 'सहित'। 'सहित' का भाववाचक रूप 'साहित्य' है। 'धा' धातु से बने 'हित' का अर्थ है – धारण करना। इस आधार पर कहा जा सकता है कि साथ रहने अथवा रखने का भाव से युक्त को 'साहित्य' कहा जाता है। डॉ. धीरेंद्र वर्मा द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य कोश' के अनुसार 'साहित्य – सहित्+यत् प्रत्यय; साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव अर्थात् 'साथ होना'। इस प्रकार सार्थक शब्द मात्र का नाम साहित्य है।' (भाग–1, पृ. 920) इसके अलावा, इस शब्द को 'हितेन सह सहितं साहित्यम्' और 'सहितस्य भावः इति साहित्यम्' कहकर भी व्याख्यायित किया जाता है। इन दोनों संदर्भों के अनुसार साहित्य में, किसी न किसी रूप में हित के निहित होने का भाव प्रबल रहता है और यह कल्याणप्रद का अर्थ प्रदान करता है।

'वाङ्मय' : जहाँ तक संस्कृत के **'वाङ्मय'** शब्द का संबंध है, पुल्लिंग अर्थ में यह वाणी के लिपिबद्ध रूप को व्यक्त, करने वाला शब्द है। कोशगत पुल्लिंग अर्थ में यह 'गद्य–पद्य रूप में लिखित वाक्य अथवा 'वाक्य समूह' और 'ग्रंथ', 'ग्रंथ समूह' और 'साहित्य' के लिए प्रयुक्त किए जाने वाला शब्द है। ध्यान देने की बात है कि 'साहित्य' की तुलना में 'वाङ्मय' व्यापक अर्थ–संदर्भ को व्यक्त करने वाला शब्द है। 'वाङ्मय' में सभी का समावेश मिलता है; गद्य–पद्य रूप में लिखित रचना 'वाङ्मय'

है। इस प्रकार, 'वाङ्मय' वह ग्रंथ या ग्रंथ समूह है जिसके समक्ष विषय अथवा विधा की कोई सीमा नहीं है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानविकी आदि ज्ञान के कोई भी विषय अथवा कहानी–कविता आदि साहित्य की किसी विधा में रचित कृतियों को 'वाङ्मय' के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

'लिटरेचर' : अंग्रेजी के 'Literature' शब्द को हिंदी के 'साहित्य' के प्रतिशब्द के रूप में व्यवहार में लाया जाता है। 'Literature' शब्द की व्युत्पत्ति 'अक्षर' अर्थ को व्यक्त करने वाले 'Littera' से व्युत्पन्न लैटिन शब्द 'Literatura/litteratura' से हुई है, जिसका अर्थ है – अक्षर समूह का लिखित रूप। इस प्रकार, 'लिटरेचर' शब्द अक्षरों के समूह को व्यक्त करने वाला शब्द है। किंतु, समय बीतने के साथ–साथ 'लिटरेचर' की अवधारणा में बदलाव हुआ और इसे बोले/गाए (spoken/sung) गए पाठ के साथ–साथ अलिखित मौखिक कला रूपों के लिए भी प्रयुक्त किया जाने लगा। वहीं, मुद्रण प्रौद्योगिकी के विकास के चलते 'लिटरेचर' शब्द को लिखित रचनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में दी गई परिभाषा के अनुसार, 'लिटरेचर' अपने आप में एक व्यापक शब्द है, जो वास्तविक परिभाषा के अभाव में सर्वश्रेष्ठ विचारों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है। विशेष यह भी है कि वह अभिव्यक्ति लिपिबद्ध होती है – the best expression of the best thought reduced to writing। इस परिभाषा से पता चलता है कि पश्चिम–जगत में समस्त लिपिबद्ध रचनाओं के लिए 'Literature' शब्द को प्रयुक्त किया जाता था, किंतु धीरे–धीरे पाश्चात्य विद्वानों की धारणाओं में परिवर्तन होता चला गया और 'लिटरेचर' शब्द को अंततः 'शक्ति के साहित्य' (Literature of Power) के अर्थ के संदर्भ तक ही सीमित मान लिया गया।

'साहित्य' संबंधी विभिन्न परिभाषाएँ :

विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने साहित्य को अपनी–अपनी दृष्टि से परिभाषित किया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य की महत्ता' में कहा है कि 'ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम साहित्य' है। (पृ. 2) बाबू गुलाबराय ने अपनी पुस्तक 'काव्य के रूप' में लिखा है कि 'साहित्य संसार के प्रति हमारी मानसिक प्रतिक्रिया अर्थात् विचारों, भावों और संकल्पों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है और वह हमारे किसी न किसी प्रकार के हित का साधन करने के कारण संरक्षणीय हो जाती है।' (पृ.2) साथ ही उन्होंने 'सिद्धांत और अध्ययन' पुस्तक में यह भी लिखा है कि 'जो हमारे भावों और विचारों को इकट्ठा रखकर या मानव जाति में एकसूत्रता उत्पन्न कर अथवा जो काव्य के शरीर–स्वरूप शब्द और अर्थ को परंपरानुकूलता द्वारा सप्राण बनकर मानव जाति का हित संपादन करे, वही साहित्य है।' (पृ.68)

साहित्य, अर्थ तत्व से युक्त सार्थक शब्द की कला है। साहित्य वह मूर्त अभिव्यक्ति है जिसका शरीर 'शब्द अथवा वाक्य' के रूप में और उसकी आत्मा 'अर्थ' के रूप में अंकित की जा सकती है। इस अंकन में ही साहित्य का रूप साकार होता है। सार्थक शब्द की इस कला को साहित्य के द्वारा जहाँ शब्द और अर्थमयी वाग्जाल के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति होती है, वहीं यह मानव–मन की संतुष्टि, शांति एवं सौंदर्य–भावना की उपलब्धि का साधन भी है।

साहित्य में भावों की अभिव्यक्ति के पक्ष पर बल देते हुए विद्वानों ने साहित्य को जीवन की व्याख्या एवं जीवन की आलोचना माना है। हडसन के अनुसार साहित्य जीवन की व्याख्या है – 'We have said that literature is an interpretation of life as life

shapes itself in the mind of the interpreter.' (An Introduction to the Study of Literature, pg. 66) मैथ्यू आर्नल्ड ने भी काव्य की जीवन की व्याख्या माना है – 'Poetry is at bottom a criticism of life.'

उपन्यास–सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने भी मैथ्यू आर्नल्ड की भाँति, साहित्य को जीवन की आलोचना माना है। 'कुछ विचार' पुस्तक में लिखे उनके ये शब्द ध्यान देने योग्य हैं कि 'साहित्य की बहुत–सी परिभाषाएँ की गई हैं पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है, चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानी के रूप में या काव्य के रूप में, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।' (पृ.6) कॉलरिज ने सर्वोत्तम शब्दों के सर्वोत्तम विधान को काव्य कहते हुए बताया है कि आनंद का प्रदर्शन काव्य का ध्येय है, न कि सत्य का 'Poetry is the anti-thesis of science, having for its immediate object pleasure, not spirit of all knowledge.' वहीं, शैली ने काव्य को भावावेशों और कल्पना की सर्वोत्तम भाषा मानते हुए कहा है – 'Poetry is the language of imagination and the passions.'।

'साहित्य' का स्वरूप

साहित्य (लिटरेचर) के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ और इस बारे में विभिन्न विद्वानों आदि की परिभाषाओं से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि साहित्य शब्द अपने आप में एक व्यापक अर्थ का द्योतक है। इसका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत–व्यापक है। मानव–समाज की संचित आकांक्षाओं–अपेक्षाओं, स्वप्नों तथा संकल्पों की मार्मिक और शाब्दिक अभिव्यक्ति का नाम साहित्य है। इसके द्वारा समष्टि की आंतरिकता, सुख–दुख को वाणी प्राप्त होती है। जिस प्रकार जीवन को परिभाषित करना कठिन है उसी प्रकार साहित्य को भी परिभाषाओं की सीमा में बाँधना कठिन है। वस्तुतः साहित्य समष्टिगत आधार पर मानव–मन की रुचि से संबंधित सहजानुभूति की आनंदप्रद और कलात्मक अभिव्यक्ति है जिसका प्रयोजन मानवीय जीवन को अर्थवत्ता प्रदान करना है।

मानव–जीवन, सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी का जीवन है। मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण समाज में ही संभव है। व्यक्ति के मन–मस्तिष्क पर समाज में घटित घटनाओं का प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। अपने मस्तिष्क पर पड़े इस प्रभाव को साहित्यकार, साहित्य के माध्यम से कृति के रूप में प्रकट करता है। स्पष्ट है कि कृति, भाव का कथ्य अथवा प्रस्तुति है। इस प्रस्तुति में सामाजिक तत्वों का अपने आप ही समावेश हो जाता है और वह सामाजिक जीवन के मानस–व्यापार का प्रतिफल कहलाता है। इस तरह, साहित्य मानवीय संस्कृति का मूर्त रूप है। अपने अस्तित्व के आरंभिक क्षणों से लेकर आज तक मनुष्य और मानव–चेतना की विकास–यात्राओं से प्राप्त अनुभवों एवं उनके सत्यों में जो कुछ भी संरक्षण करने योग्य है – वह साहित्य है।

किसी भी साहित्य की रचना का कोई न कोई आधार अवश्य होता है। साहित्य का प्रयोजन मानवीय जीवन को अर्थवत्ता प्रदान करना है, मानव का हित करना है। जीवन पर आधृत होने के बावजूद यह रचनाकार की कल्पना पर आश्रित होता है। साहित्य के माध्यम से न केवल मनुष्य की ज्ञान–प्राप्ति की इच्छा पूरी होती है, बल्कि यह मानव–जीवन को सरस, सुखी एवं सुंदर बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास भी है। साहित्य का उद्देश्य मानव–कल्याण है। मानव–कल्याण के इस स्वरूप में वैयक्तिक एवं सामाजिक, दोनों तत्वों के सामंजस्य का भाव निहित है। इस प्रकार साहित्य 'स्वांत सुखाय' और 'बहुजन हिताय' की पूर्ति करता है। साहित्य की यह मानवीय सार्थकता जीवन में आस्था रखते हुए विकास–पथ पर निरंतर बढ़ते रहने में ही है।

4.3 'साहित्य' एवं 'काव्य' : समानता–असमानता का संदर्भ

प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा में 'साहित्य' के स्थान पर 'काव्य' शब्द का ज्यादातर प्रयोग देखने को मिलता है। संस्कृत के आचार्यों ने 'काव्य' शब्द का प्रयोग 'साहित्य' के अर्थ में किया है। भारतीय साहित्य का आरंभ, वेदों के रूप में देखने को मिलता है। ये वेद अपने रूप में पद्यबद्ध रचनाएँ अर्थात् काव्य हैं। उपनिषदों की रचना भी काव्य–रूप में ही हुई। शायद इसी कारण संस्कृत के पूर्ववर्ती काव्यशास्त्रियों ने अपने ग्रंथों में 'साहित्य' शब्द के स्थान पर 'काव्य' शब्द का प्रयोग किया है।

सातवीं शताब्दी में सर्वप्रथम भृर्तहरि ने काव्य के अर्थ में 'साहित्य' शब्द का प्रयोग किया। भामह ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार' में काव्य–लक्षण प्रस्तुत करते हुए जब यह लिखा है कि शब्दार्थ का सहित (स+हित) ही काव्य है – 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' – तो उनका 'काव्य' से अभिप्राय 'साहित्य' ही था। भामह की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आचार्य रुद्रट ने भी कहा कि न शब्द काव्य है और न अर्थ काव्य है; जहाँ शब्द और अर्थ अपनी लौकिक सत्ता का त्याग कर देते हैं, वहाँ काव्य होता है – 'ननुशब्दार्थौ काव्यम्'। यहाँ भी 'काव्य' शब्द, 'साहित्य' के अर्थ को ही व्यक्त करता है। 'साहित्य दर्पणकार' और संस्कृताचार्य विश्वनाथ ने रसात्मक वाक्य को साहित्य के रूप में परिभाषित करते हुए जब यह लिखा है कि 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' तो उनका उद्देश्य केवल काव्य ही न होकर नाटक आदि साहित्य में रस (अर्थात आनंदानुभूति) की व्याख्या का भाव था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अपने संकुचित अर्थ में 'साहित्य' एवं 'काव्य' समानार्थक माने गए हैं। किंतु आज के संदर्भ में इन्हें समानार्थी नहीं माना जा सकता। अब साहित्य के अंतर्गत केवल काव्य ही नहीं नाटक, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि अन्य विधाएँ भी शामिल हैं। काव्य, साहित्य के अंग के रूप में ही मान्य है – संपूर्ण साहित्य का पर्याय नहीं।

4.4 'साहित्य' (लिटरेचर) के भेद

समस्त ज्ञान राशि के संचित कोश के व्यंजक 'साहित्य', 'लिटरेचर' और 'वाङ्मय' शब्द स्वयं में व्यापक अवधारणा को लिए हुए हैं। इसके अंतर्गत वस्तुओं आदि के सामान्य परिचय से लेकर सूक्ष्म ज्ञान की समस्त उपलब्धियाँ एवं कल्पना–अनुभूति से अनुप्राणित भाव–प्रधान विचारों की शाब्दिक अभिव्यक्ति शामिल है।

मानव की सभी चेष्टाएँ – भले ही वे लिखित हों अथवा मौखिक – 'वाङ्मय' शब्द के अंतर्गत शामिल हैं। संस्कृत के शास्त्रीय ग्रंथों में समस्त 'वाङ्मय' को दो प्रमुख रूपों में विभाजित किया गया है – 'शास्त्र'; और 'काव्य'। 'शास्त्र' के अंतर्गत (क) अपौरुषेय शास्त्र (अर्थात श्रुति और वेदांग); तथा (ख) पौरुषेय शास्त्र (पुराण, न्याय मीमांसा तथा स्मृति) आते हैं। इसी प्रकार, काव्य के जो दो प्रमुख भेद किए जाते हैं, वे हैं (i) श्रव्य काव्य; और (ii) दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य, सुनकर आनंद लिया जाने वाला काव्य है। वहीं, जिसका आनंद नेत्रों द्वारा लिया जाता है उसे दृश्य काव्य कहा जाता है। नाटक आदि को दृश्य काव्य कहा जाता है और श्रव्य काव्य के अंतर्गत (i) प्रबंध काव्य; और (ii) मुक्तक काव्य शामिल किए जाते हैं। कुल मिलाकर 'वाङ्मय' बहुत व्यापक आधार लिए हुए शब्द नजर आता है, जिसके अंतर्गत 'शास्त्र' और 'काव्य' (साहित्य), दोनों आते हैं।

वहीं, अगर 'लिटरेचर' के संदर्भ में देखें तो यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि इस शब्द को पाश्चात्य चिंतन में समस्त लिपिबद्ध रचनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाता था। 'वाङ्मय' शब्द की ही भाँति, शुरू में 'लिटरेचर' शब्द भी व्यापक आधार लिए हुए था। 'लिटरेचर' को उसका सही अर्थ–संदर्भ देने का श्रेय पाश्चात्य विद्वान 'डि क्विन्सी' को दिया जाता है। उन्होंने लिटरेचर की व्यापकता के महत्व को स्वीकार करते हुए सर्वप्रथम उसे दो वर्गों में विभाजित किया – (क) 'शक्ति का साहित्य' (Literature of Power); और (ख) 'ज्ञान का साहित्य' (Literature of knowledge। वैसे इन दोनों (शक्ति और ज्ञान के साहित्य) का संचित भंडार ही 'लिटरेचर' है, 'संपूर्ण वाङ्मय' है, जिसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य' कहा है। अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध विद्वान आई.ए. रिचर्ड्स ने भी साहित्य के संवेदनात्मक–भावात्मक एवं ज्ञान–प्रधान रूप को भाषा के संदर्भ में रेखांकित करते हुए इसके दो मुख्य प्रयोग बताए हैं – भाषा का वैज्ञानिक प्रयोग और भाषा का भावात्मक प्रयोग।

यहाँ 'शक्ति का साहित्य' और 'ज्ञान का साहित्य' शब्द व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। शक्ति का साहित्य मूलतः रचयिता के भाव, अनुभूति, कल्पना अथवा संवेदना की प्रधानता से संपन्न रसात्मक विषयों वाले कथ्य की सर्जनात्मक प्रस्तुति होता है। सर्जनात्मक विषयों के कारण इसे 'सर्जनात्मक साहित्य' भी कहा जाता है। वहीं, ज्ञानपरक विषय–विशेष से संबंधित जानकारी और तथ्यों आदि को व्यक्त करने वाला ज्ञान–भंडार 'ज्ञानात्मक साहित्य' है। उल्लेखनीय है कि ये विषय, ज्ञान–विज्ञान की किसी भी शाखा–प्रशाखा के हो सकते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि 'सृजनात्मक साहित्य' (अर्थात शक्ति के साहित्य) के अंतर्गत भावों की प्रधानता वाले संचित ज्ञान भंडार को शामिल किया जाता है और 'ज्ञानात्मक साहित्य' (ज्ञान के साहित्य) में विषय–विशेष से जुड़े तथ्यों का भंडार होता है। सर्जनात्मक साहित्य से भिन्नता और ज्ञान के विभिन्न विषयों से संबद्ध होने के कारण ज्ञानात्मक साहित्य को 'साहित्येतर विषय' भी कहा जाता है। इस प्रकार, 'साहित्य' (लिटरेचर) के भेदों का आरेख की सहायता से वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :

साहित्य (लिटरेचर)

शक्ति का साहित्य	**ज्ञान का साहित्य**
(सृजनात्मक साहित्य)	**(ज्ञानात्मक साहित्य)**
(विधा–आधारित)	**(विषय–आधारित)**

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि साहित्य के अंतर्गत सर्जनात्मक साहित्य और ज्ञानात्मक साहित्य शामिल हैं। 'साहित्य' शब्द की परिव्याप्ति को इन्हीं दोनों (सर्जनात्मक साहित्य और ज्ञानात्मक साहित्य) के संदर्भ में देखने–समझने की जरूरत है। ये दोनों आयाम 'साहित्य' शब्द को सीमित और व्यापक अर्थ को व्यक्त करने वाला शब्द बना देते हैं।

अपने व्यापक अर्थ में 'साहित्य' समस्त ज्ञान राशि (सर्जनात्मक साहित्य और ज्ञानात्मक साहित्य) के संचयन के अर्थ को व्यक्त करने वाला शब्द है। जब यह शब्द विविध रूप–विधान वाले भाव–प्रधान 'सर्जनात्मक साहित्य' के संदर्भ में प्रयुक्त होता है तो यह एक सीमित–संकुचित अर्थ का व्यंजक बन जाता है। तब यह कहानी–कविता आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखी भाव–प्रधान रचना के अर्थ को व्यक्त करता है। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि 'साहित्य' शब्द का सीमित और व्यापक

अर्थ–संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। वैसे, आम तौर पर जन–सामान्य 'साहित्य' शब्द को 'शक्ति के साहित्य' अर्थात् 'सर्जनात्मक साहित्य' के संदर्भ में ही व्यवहार में लाता है। इस इकाई में आगे, इसी अर्थ–संदर्भ में 'साहित्य' शब्द को प्रयुक्त किया जा रहा है।

4.5 साहित्य की विधाएँ

यहाँ जब हम 'साहित्य की विधाएँ' शब्द को प्रयुक्त कर रहे हैं तो इसका अभिप्राय यह है कि सर्जनात्मक साहित्य की विभिन्न विधाएँ' कौन सी हैं। प्रत्येक साहित्यकार अपनी कल्पना–अनुभूति से अनुप्राणित विचारों की शब्दों में अभिव्यक्ति के लिए सभी संभव माध्यमों को जरिया बनाता है। माध्यमों की भिन्नता की वजह से वस्तु अथवा कृति का रूप (कार्य) भी भिन्न रूप वाला हो जाता है। इसलिए साहित्यिक रचनाओं के स्वरूप, आकार और शैली आदि में भी भिन्नता हो जाती है। अभिव्यक्ति के माध्यम और अभिव्यक्ति शैली में अंतर के कारण साहित्य में विविध प्रकार की साहित्यिक विधाओं ने अस्तित्व प्राप्त किया। संभवतः यही कारण है कि कतिपय विद्वानों ने साहित्य की विभिन्न विधाओं की चर्चा की है।

साहित्य की विविध विधाओं को साहित्य में रूप–विधान (अर्थात रूपात्मक रचना–प्रक्रिया) के आलोक में देखा जा सकता है। साहित्य के द्वारा व्यक्त भाव अथवा मूल विषय के स्तर पर समानता अथवा भिन्नता हो सकती है। लेकिन, जब रचना के रूप–विधान में भिन्नता नजर आती है तो उसे 'विधा' नाम दिया जाता है। इस विभिन्नता के कारण हमें साहित्य भी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में रचा हुआ देखने को मिलता है। कोई भी साहित्यकार अपनी कल्पना–अनुभूति से प्रेरित होकर अपने विचारों को किसी भी विधा में ढालकर प्रस्तुत कर सकता है।

साहित्य के स्तर पर रूप–विधान की विभिन्नता को विभिन्न वर्गों में विभाजित करके देखा जा सकता है। इस आधार पर साहित्य के जो दो प्रमुख भेद किए जाते हैं, वे हैं – (क) श्रव्य साहित्य; और (ख) दृश्य साहित्य। 'श्रव्य साहित्य', सुनकर आनंद लिया जाने वाला साहित्य है; और जिसका आनंद नेत्रों द्वारा लिया जाता है, वह 'दृश्य साहित्य' है। 'नाटक', 'एकांकी', 'रेडियो रूपक', 'फीचर' आदि को दृश्य काव्य की श्रेणी में शामिल किया जाता है। 'श्रव्य साहित्य' के अंतर्गत (i) पद्य (ii) गद्य; और (iii) चंपू (अथवा मिश्रित) साहित्य शामिल किए जाते हैं।

(1) 'पद्य साहित्य' :

पद्य को 'कविता' अथवा 'काव्य' के नाम से भी संबोधित किया जाता है। कविता को साहित्य की सबसे अधिक सृजनशील विधा स्वीकार किया जाता है। इसमें चरम सीमा पर पहुँचे मानव मन के अनुभूतिजन्य उद्‌गारों का शाब्दिक विस्फोट होता है। कविता की भाषा का व्याकरण–सम्मत होना जरूरी नहीं होता है। कविता, भाव और छंद पर आधारित वह रचना होती है जिसमें वर्ण, मात्रा, पद, लय आदि छंद के निश्चित नियमों में आबद्ध होते हैं। लय, छंद का आधार है, जो मात्राओं, वर्णों आदि की योजनाओं पर निर्भर करती है। पाश्चात्य समीक्षक गद्य से अंतर करते हुए काव्य को जिन शब्दों में परिभाषित करते हैं, उसमें छंद पर ही जोर दिया जाता है – 'Poetry is metrical composition.'। हालाँकि अब काव्य में छंद की नियमबद्धता अनिवार्य नहीं मानी जाती और छंदमुक्त कविता का विधान किया जाता है, किंतु छंदमुक्त कविता में भी आंतरिक लय आदि उसे छंद से जोड़े रखती है।

अगर हम 'कविता' के अर्थ और स्वरूप पर विचार करें तो यह कहा जाएगा कि कविता मनुष्य की वाणी का शब्द विधान है। आत्माभिव्यक्ति इसका मूल तत्व है, जिसे काव्योचित बनाने के लिए व्यक्ति का सृजन प्रतिभा, विचार कौशल, अभिव्यक्ति क्षमता और संयोजन शक्ति से संपन्न होना जरूरी है। काव्य की भाव–प्रबल भाषा, हमारे कल्पना–लोक की भाषा है और इसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं होता है। इसमें मधुरता, वक्रता और अलंकारिकता का होना स्वाभाविक है। हमारे मनोभावों को उद्‌बुद्ध करना इसका उद्‌देश्य है और आनंद प्रदान करना इसका प्रयोजन। पद्य के दो भेद हैं – (i) प्रबंध काव्य; तथा (ii) मुक्तक काव्य।

(i) 'प्रबंध काव्य' में कथा अर्थात घटना विधान का अनिवार्य रूप से समावेश रहता है। परंतु यह घटना विधान का स्वतंत्र नहीं होता है। इसमें 'प्रबंध काव्य' में एक ही कथा का बंध होता है। इसलिए उसे प्रबंध काव्य कहा जाता है। इसकी विशेषता यह होती है कि इस काव्य रचना (प्रबंध काव्य) के प्रत्येक छंद का एक–दूसरे से पूर्वापर संबंध होता है। कथा के बंध के आधार पर 'प्रबंध काव्य' के भी दो उपभेद किए जाते हैं – महाकाव्य; और खंडकाव्य। ये दोनों भेद प्रबंध काव्य के रूपगत वैविध्य के आधार पर किए जाते हैं। 'पृथ्वीराज रासो', 'पद्‌मावत', 'रामचरितमानस', 'रामचंद्रिका', 'प्रियप्रवास', 'साकेत तथा 'कामायनी' आदि हिंदी में लिखे उल्लेखनीय महाकाव्य हैं। वहीं, खंडकाव्यों के रूप में विशेष तौर पर 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', 'पथिक'', सुदामा चरित', 'आत्मोत्सर्ग', 'मौर्यविजय' आदि प्रसिद्ध हैं।

(ii) जिस काव्य रचना में शामिल काव्य रचना का प्रत्येक छंद एक–दूसरे से पूर्वापर संबंधित नहीं होता है (अर्थात मुक्त होता है) उसे 'मुक्तक काव्य' कहा जाता है। 'साहित्य दर्पण' में मुक्तक के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए यह कहा गया है छंद में लिखे गए काव्य को पद्य कहते हैं और यदि यह पद्य अन्य पद्यों के संबंध से मुक्त हो तो उसे मुक्तक कहते हैं – 'छंदोबद्ध पदं पद्यं तेन मुक्तेन मुक्तकम्।' इसमें एक ही कथा का बंधन नहीं होता है और प्रत्येक छंद पूरी तरह से स्वतंत्र या कहें कि एक–दूसरे से मुक्त तथा स्वतःपूर्ण होता है। इसमें विशेष यह भी होता है कि प्रत्येक छंद संपूर्ण अर्थ को व्यक्त करने वाला होता है। प्रबंध और मुक्तक काव्य के बीच के अंतर को आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इन शब्दों के जरिए व्यक्त किया जा सकता है कि यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।

(2) 'गद्य साहित्य' :

साहित्य के अपेक्षाकृत अधिक व्याकरण–सम्मत रूप में लिखी हुई वह रचना 'गद्य साहित्य' कहलाती है, जो छंद से निरपेक्ष होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि जिस रचना में छंद आदि का कोई निश्चित बंधन नहीं होता, वह गद्य साहित्य है। यह साहित्य हमें कथा और कथेतर रूप में उपलब्ध होता है। वैसे काव्य (कविता) की भाँति गद्य में भी व्यक्ति की कल्पना, अनुभूति, भाव विचार और संवेदना आदि तत्व सघन रूप से विद्यमान होते हैं।

गद्य रचनाओं में शब्दों का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग होता है। इनके संदर्भ में विशेष यह भी इनमें शब्द प्रयोग का औचित्य साफ तौर पर ध्वनित होता है। आधुनिक युग में विषयों की अधिकता के कारण गद्य, विभिन्न रूपों में नजर आता है। बल्कि स्थिति यह है कि इनमें प्रयोगात्मकता भी लक्षित की जा सकती है। इसलिए गद्य के भेद–उपभेदों

के स्तर पर अधिकता नजर आती है। किंतु, इसके प्रमुख भेद हैं – कहानी, उपन्यास, लघु कथा, समालोचना, निबंध, ललित निबंध, जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, डायरी, साक्षात्कार (भेंटवार्ता) और पत्र साहित्य आदि।

गद्य साहित्य के इन भेदों–उपभेदों को 'कथा साहित्य' और 'कथेतर साहित्य' उपवर्गों में विभाजित किया जाता है। कहानी और उपन्यास, कथा साहित्य है और अन्य विधाओं में रचित साहित्य को 'कथेतर साहित्य' के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

(3) चंपू :

गद्य और पद्य मिश्रित काव्य अथवा नाटक को 'चंपू' कहा जाता है। जिस काव्य अथवा नाट्य रचना में गद्य एवं पद्य, दोनों का प्रयोग होता है वह 'चंपू' कहलाता है। यह ऐतिहासिक, पौराणिक अथवा सामान्य – किसी भी विषय से संबंधित हो सकता है। प्राचीन संस्कृत काव्य में तो चंपू विधा में साहित्य सृजन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। किंतु आधुनिक हिंदी में इसका प्रयोग बहुत ही कम मिलता है। दिनकर विरचित 'उर्वशी' तथा मैथिलीशरण गुप्त की 'यशोधरा' को चंपू काव्य के अंतर्गत शामिल किया जाता है।

साहित्य की रचना–शैली में (अर्थात् गद्य, पद्य और चंपू) में से प्रथम दो अर्थात 'गद्य साहित्य' और 'पद्य साहित्य' ही मुख्य हैं। साहित्य के भेदोदभेदों को नीचे दिए गए आरेख की सहायता से समझा जा सकता है:

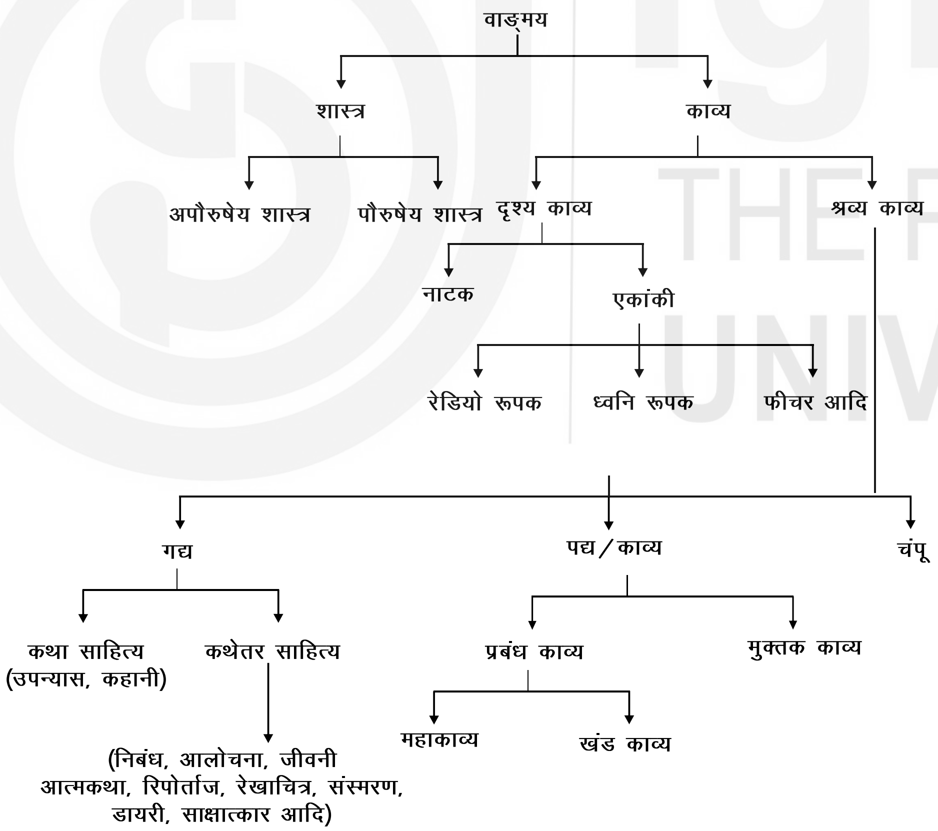

बोध प्रश्न–1

1. 'साहित्य' और 'वाङ्मय' से क्या अभिप्राय है? क्या ये 'लिटरेचर' अर्थ को व्यक्त करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

   ....

....

....

....

....

....

2. साहित्य के स्वरूप से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

3. प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा के आधार पर साहित्य और काव्य में भेद बताइए।

....

....

....

....

....

4. साहित्य को मोटे तौर पर किन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

5. रूप–विधान के आधार पर साहित्य की विधाएँ कौन–सी हैं?

....

....

....

....

....

4.6 साहित्यानुवाद : अर्थ और प्रकार

प्रत्येक साहित्यकार की कल्पना–अनुभूति से अनुप्राणित विचारों की शब्दों में अभिव्यक्ति की शैली में भिन्नता के कारण साहित्यिक रचनाओं के स्वरूप–आकार में अंतर आ जाता है। इस अंतर के कारण विविध प्रकार की साहित्यिक विधाएँ अस्तित्व में आईं। कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध आदि साहित्य की प्रमुख विधाएँ हैं। विभिन्न विधाओं में लिखा जाने वाला साहित्य हमें कविता अथवा गद्य रूप या फिर इन दोनों के मिले–जुले रूप में मिलता है। इनमें से कविता को 'पद्य' तथा अन्य विधाओं में

रचित साहित्य को 'गद्य' कहा जाता है। पद्य और गद्य मिश्रित काव्य को 'चम्पू' कहा जाता है। साहित्य की रचना–शैली में इन तीनों में से प्रथम दो अर्थात 'गद्य' और 'पद्य' ही मुख्य हैं। इसीलिए गद्य–पद्य के आधार पर साहित्य की इन विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य के अनुवाद को 'गद्यानुवाद' और 'पद्यानुवाद' कहा जाता है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में से किसी एक भाषा में रचे गए सर्जनात्मक साहित्य को जब किसी दूसरी भाषा में अंतरित किया जाता है तो वह 'साहित्यानुवाद' कहलाता है। 'साहित्यानुवाद' को 'साहित्यिक अनुवाद' भी कहा जाता है। जिस प्रकार किसी एक भाषा में साहित्य सृजन अलग–अलग विधाओं में किया जाता है, उसी आधार पर सर्जनात्मक साहित्य के दूसरी भाषा में अनुवाद को भी विधावार अलग–अलग नामों से भी संबोधित किया जाता है। इस आधार पर, गद्य साहित्य के अनुवाद को 'गद्यानुवाद', पद्य (कविता) साहित्य के अनुवाद को 'पद्यानुवाद (काव्यानुवाद)' तथा नाटक के अनुवाद को 'नाट्यानुवाद' कहते हैं। साहित्य की कथा और कथेतर (अन्य) विधाओं में रचित साहित्य को भी इसी प्रकार संबोधित किया जा सकता है।

साहित्यानुवाद के संदर्भ में विशेष ध्यान रखने योग्य यह भी है कि साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना अलग वैशिष्ट्य होता है। इसी तरह, विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य का अनुवाद भी अपनी अलग विशिष्टता लिए हुए होता है। साहित्य की प्रत्येक विधा के संदर्भ में भाव और कला पक्ष के स्तर पर भिन्नता होती है। अगर अनुवादक को विधा विशेष की विशिष्टता और उसे लक्ष्य भाषा में ढालकर प्रस्तुत करने की अल्पज्ञता (कम ज्ञान) है तो वह मूलतः अनुवादक की सीमा कही जाएगी, न साहित्यानुवाद कर्म की असंभाव्यता।

वस्तुतः अनुवादक को विधा–विशेष की विषयवस्तु और अंतर्वर्ती भावना को ग्रहण कर कलात्मक अनुभूति तक पहुँचते हुए उसके कथानक, वर्णन, चरित्र, शैली आदि की विशिष्टता को लक्ष्य भाषा में उद्‌बुद्ध कर अभिव्यक्त करने में सफलता प्राप्त करनी होती है। अनुवादक को रचयिता के व्यक्तित्व में प्रवेश कर उसके अनुभवों को स्वयं अनुभूत करने की साधना करनी पड़ती है, 'परमानस प्रवेश' करना पड़ता है। अर्थात उसे मूल रचयिता की मनोभूमि पर निर्वैयक्तिक भाव से उतरकर पाठ को आत्मसात करके अपनी चेतना में रचयिता की सर्जनात्मक मनःस्थिति का उद्‌बोध करते हुए समान कलात्मक अनुभूति को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में प्रस्तुत करना होता है। इसके लिए अनुवादक में पुनःसृजन की ऐसी क्षमता होनी चाहिए जैसी मूल लेखन में सृजन की होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि अनुवादक का सर्जनात्मक प्रतिभा से संपन्न होना जरूरी है। इसकी कसौटी तो यह रहती है कि अनूदित रचना पढ़कर पाठक को ऐसी अनुभूति प्रतीत हो मानो रचनाकार ने अपनी ही कृति को दूसरी भाषा में पुनःसृजित कर दिया है।

यहाँ हमें यह भी ध्यान रखकर चलना होगा कि साहित्य विधा में अंतर के कारण कहीं यह अनुभूति स्थूल होती है और कहीं अपेक्षाकृत सूक्ष्म। अनुभूति की यह सूक्ष्मता, तरलता और अमूर्तता अनुवादक के द्वारा दूसरी भाषा में समांतर उद्‌बुद्ध कर्म (अर्थात साहित्यानुवाद) को अपेक्षाकृत जटिल बना देती है। वैसे, साहित्यिक अनुवाद – चाहे वह गद्यबद्ध हो अथवा पद्यबद्ध – में समांतर अनुभूति को उद्‌बुद्ध करने में सफलता प्राप्त करने में ही साहित्यानुवादक की सफलता है। लेकिन इस सफलता की तभी उपलब्धि हो पाती है, जब अनुवादक को साहित्य की विधा विशेष की विशिष्टता का बोध हो और वह उस वैशिष्ट्य को दूसरी भाषा में साहित्य की विधा विशेष में सार्थक तरीके से प्रस्तुत कर पाए।

4.7 ज्ञानात्मक और सर्जनात्मक साहित्यानुवाद में समानता और अंतर

इस इकाई के भाग 4.2 में यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य के अर्जित एवं संचित ज्ञान–राशि का विपुल वाङ्मय, संवेदना–प्रधान और ज्ञान–प्रधान साहित्य के रूप में उपलब्ध है। काव्य, नाटक और अन्य गद्य विधाओं आदि में रचित साहित्य संवेदना–प्रधान साहित्य होता है जिसे 'सर्जनात्मक साहित्य' (आनंद का साहित्य) कहा जाता है और उसके अलावा अन्य सभी 'ज्ञानात्मक साहित्य' (ज्ञान–विज्ञान का साहित्य) है। इसी आधार पर साहित्यानुवाद के भी दो वर्ग हैं – 'ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद' और 'सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद'। इन दोनों में व्याप्त अंतर को जानने की भी आवश्यकता है। यहाँ प्रश्न यह भी उठता है कि क्या इन दोनों प्रकार के साहित्य में समानताएँ भी हैं? आइए, पहले इसी पक्ष पर विचार करें।

4.7.1 समानता के आयाम

सर्जनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य का अनुवाद दो भिन्न दिशाओं से संबंधित होने पर भी कुछेक समानता के आयाम लिए हुए है। ये आयाम हैः

1. 'एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावों और संवेदनाओं को इतर भाषा में निकटतम सहज समतुल्य अभिव्यक्त करना' अनुवाद की मूल अवधारणा में निहित अर्थ है। यह दोनों प्रकार के अनुवाद पर लागू होता है। 'आनंद के साहित्य' के अनुवाद की जो आवश्यकता, महत्व, प्रासंगिकता, प्रक्रिया, पूर्वापेक्षाएँ, समस्याएँ, सीमाएँ, संभावनाएँ एवं जिन साधन–उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है वही सब कुछ ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद की भी पूर्वापेक्षाएँ हैं। दोनों प्रकार के अनुवादों में जहाँ हूबहू उल्था न तो किया जा सकता है और न ही संभव है, वहीं 'शब्द' और 'अर्थ' के स्तर पर भी दोनों प्रकार के अनुवादों की भाषाओं का विशेष महत्व है। और, साथ ही 'निकटतम सहज समतुल्य' का मानदंड दोनों प्रकार के अनुवादों पर समान रूप से लागू होता है।

2. सर्जनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य का संरचनात्मक ढाँचा समान होता है। जैसे, अंग्रेजी में वाक्य संरचना सामान्यतः कर्ता+कर्म+क्रिया की क्रम–व्यवस्था पर आधारित होती है। यह क्रम–व्यवस्था अंग्रेजी में रचित दोनों प्रकार के साहित्य में देखी जा सकती है। हालांकि काव्य सृजन में इस क्रम–व्यवस्था का पालन करना जरूरी नहीं माना जाता है। फिर भी, अनुवादक, इसे ध्यान में रखते हुए अनुवाद करता है। इसी तरह, वह विरामादि चिह्नों की प्रकृति एवं स्थिति आदि का भी पूरा–पूरा ध्यान रखता है। कहने का अभिप्राय यह है कि दोनों प्रकार के अनुवादों में स्रोत और लक्ष्य भाषा के संरचनात्मक घटकों का एक ही तरह से विश्लेषण किया जाता है, अंतरण के लिए उपयुक्त पर्यायों की तलाश की जाती है और उन्हें दूसरी भाषा में सार्थक तरीके से पुनर्गठित करके प्रस्तुत किया जाता है।

3. 'संप्रेषण, अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य होता है।' यह दोनों प्रकार के साहित्य तथा उनके अनुवाद पर लागू होती है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनुवादक अनूदित सामग्री में अभिव्यक्ति की सहजता को बनाए रखता है। इसके लिए लेखक के अभिप्राय को समझना भी जरूरी होता है ताकि अनुवादक सही पर्याय चुनकर अनुवाद कर सके। अगर अनुवादक मूल अभिप्राय को समझ नहीं

पाता तो वह भूल कर जाता है। यह भूल साहित्यानुवाद में अति–सौंदर्यवादिता (over-astheticized) के रूप में भी नजर आ सकती है और ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में जटिल भाषा के प्रयोग के रूप में।

4. अनुवादक के समक्ष **मूल की शैलीगत विविधता को बनाए रखने की अनिवार्यता** होती है। हालाँकि शैली की दृष्टि से ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद में कम समस्या आती है जबकि सर्जनात्मक साहित्यानुवाद (और विशेष तौर पर काव्यानुवाद) में शैली के अनुवाद की कठिनाई अधिक होती है।

5. पाठक वर्ग को ध्यान में रखना भी दोनों प्रकार की सामग्री के अनुवादकों के लिए आवश्यक होता है। अगर पाठक वर्ग छोटी आयु–वर्ग का है अथवा सामान्य शिक्षित व्यक्ति है और इस तथ्य को ध्यान में रखे बिना ही सामग्री को गहन–गंभीर भाषा शैली में अनूदित करके प्रस्तुत कर दिया जाए तो वह अनूदित पाठ पाठक वर्ग के लिए सहज–संप्रेषणीय नहीं होगा।

सृजनात्मक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के अनुवाद में समानता के इन आयामों के बावजूद दोनों में कुछ अंतर भी हैं। आइए, अब हम इन अंतरों पर भी विचार करें।

4.7.2 असमानता के आयाम

व्यावहारिक धरातल पर देखें तो साहित्यिक एवं ज्ञानात्मक साहित्य तथा उनके अनुवाद में अंतर हैं। चूँकि प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है इसी कारण प्रत्येक विषय के अनुवाद की भी विशिष्ट प्रकृति होती है, महत्व होता है, समस्याएँ–सीमाएँ होती हैं। इसी आधार पर ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद एवं साहित्यानुवाद में जो स्पष्ट विभाजक रेखा खींची जा सकती है, वह इस प्रकार है:

1. सर्जनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य में **तथ्य और भाव के स्तर पर अंतर** पाया जाता है। ज्ञानात्मक साहित्य में सूचनाओं, संकल्पनाओं–तथ्यों आदि के रूप में 'ज्ञान' समाहित होता है। इसलिए इसमें तथ्यों और विचारों की प्रधानता होती है, जो मूर्त एवं निश्चित भी होते हैं। सर्जनात्मक साहित्य 'आनंद का साहित्य' है। हालाँकि इसमें ज्ञान भी एक अंग तो होता है, किंतु आधारभूत अंग नहीं। सर्जनात्मक साहित्य में अनुभूति की प्रधानता होती है। अनुभूति का स्वरूप अमूर्त होता है और साथ ही तरल भी। जिस तरह सूक्ष्म–तरल पदार्थ को स्थानांतरित करना स्वयं में कठिन कार्य है वही स्थिति अनुभूति के दूसरी भाषा में संप्रेषण की भी है। सर्जनात्मक साहित्य के माध्यम से आनंद की उपलब्धि होती है, रस की अनुभूति होती है, इंद्रिय सुख मिलता है। भावनात्मक प्रभाव डालना सर्जनात्मक साहित्य का लक्ष्य होता है। तथ्य और विचार का तो संप्रेषण हो सकता है, किंतु भाव–कल्पना को उद्‌बुद्ध किया जा सकता है, संप्रेषण नहीं। साहित्यकार, पाठक के चित्त में अनुभूति को उद्‌बुद्ध करता है और पाठक, लेखक के अनुभव में साझीदार बनता है।

2. दोनों प्रकार के साहित्य सृजन के लिए **मानसिकता के स्तर पर अंतर** पाया जाता है। सर्जनात्मक साहित्यकार में सर्जनात्मक प्रतिभा की अपेक्षा होती है और ज्ञानात्मक साहित्य सृजन के लिए लेखक की ज्ञानात्मक मानसिकता की। ऐसी ही मानसिकता की पूर्वापेक्षा इनके अनुवादकों के लिए भी अपेक्षित है। ज्ञानात्मक साहित्य अनुवादक में सर्जनात्मक प्रतिभा का होना अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। इसके स्थान पर अनुवादक का विषय–विशेष की ज्ञानात्मक

मानसिकता (यानी विषय का बोध, उसकी पारिभाषिक शब्दावली की समझ आदि) से संपन्न होना सहायक सिद्ध होता है। वहीं, सर्जनात्मक रचना के भाव–पक्ष के साथ कलात्मक सौंदर्य को लक्ष्य भाषा में पहुँचाने के आधार पर अनुवाद सर्जनात्मक प्रक्रिया बन जाता है। साहित्य–अनुवादक इस प्रक्रिया को अपनाते हुए मूल जैसा लालित्य लाता है ताकि अनुवाद सार्थक एवं सौंदर्यपूर्ण हो। इसलिए साहित्यिक अनुवाद और विशेष तौर पर काव्यानुवाद के लिए तो अनुवादक का सर्जनात्मक प्रतिभा से संपन्न होना कमोबेश अनिवार्य ही माना जाता है।

3. साहित्यिक सामग्री का अनुवाद करते समय अनुवादक को **विषय–ज्ञान** कम हो या फिर वह विषय का अज्ञानी हो तो भी वह अनुवाद कर्म कर सकता है; केवल दोनों भाषाओं (अर्थात स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा) का समुचित ज्ञान ही उसके अनुवाद–कार्य में सहायक सिद्ध हो जाता है। लेकिन जहाँ तक ज्ञान–विज्ञान की सामग्री के अनुवाद का संबंध है, अनुवादक को न केवल स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की जानकारी आवश्यक है बल्कि विषय का समुचित, व्यापक एवं सम्यक् ज्ञान होना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। विषय की अज्ञानता के कारण वह कई प्रकार की गलतियाँ कर सकता है। उदाहरण के लिए, रसायन विज्ञान विषय से संबंधित वैज्ञानिक सामग्री में अगर 'salt' शब्द आता है तो विषय का ज्ञान न रखने वाले अनुवादक उसे 'नमक' समझ सकता है। जबकि विषय की व्यापक एवं व्यावहारिक जानकारी रखने वाले अनुवादक को यह पता है कि 'salt' वह लवण है जो 'पूर्ण अथवा आंशिक हाइड्रोजन से मुक्त अम्ल' है। जबकि 'नमक' अन्य लवणों की भांति एक लवण है और जो 'सोडियम' एवं 'क्लोरीन' का यौगिक रूप (अर्थात सोडियम क्लोराइटड) है। और ऐसी स्थिति में वह 'mouse' शब्द का कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के संदर्भ में भी हास्यास्पद अनुवाद 'चूहा' कर सकता है।

4. दोनों प्रकार के **अनुवाद के प्रेरक कारणों के स्तर पर भी भिन्नता** मिलती है। यह स्वीकार किया जाता है कि लेखन के मूल में कोई न कोई कारण अवश्य होता है। 'ज्ञान का प्रसार करना', ज्ञान के साहित्य का मूल उद्देश्य होता है। सर्जनात्मक साहित्यकार की दृष्टि से यह कारण मनोरंजन, स्वांतः सुखाय, यश तथा अर्थ (धनार्जन) की कामना और सामाजिक बदलाव आदि में से कोई भी हो सकता है।

   इसी प्रकार, यह भी माना जाता है कि अनुवाद कार्य के मूल में भी कोई न कोई प्रेरणा अवश्य होती है। ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में सूचना और ज्ञानपरक तथ्यों के विस्तार–प्रसार की आकांक्षा निहित होती है। वहीं, सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद अंतःप्रेरणा से स्फूर्त होता है और अनूदित रचना के माध्यम से अनुवादक लक्ष्य भाषा के पाठक–वर्ग के व्यक्तित्व के संस्कार–परिष्कार का ध्येय रखता है। इस तरह, अनुवाद–प्रेरणा के स्तर पर देखा जाए तो सर्जनात्मक और ज्ञान–विज्ञान साहित्य, विपरीत ध्रुवों पर खड़े नजर आते हैं।

5. अनुवाद में **कुछ जोड़ने–छोड़ने के स्तर पर अंतर** को रेखांकित किया जा सकता है। हालाँकि यह कहा जाता है कि अनुवादक को मूल पाठ में से कुछ भी छोड़ने अथवा उसमें कुछ भी जोड़ने का अधिकार नहीं है। किंतु व्यावहारिक स्तर पर देखा जाता है कि भाषा की संरचनात्मक जरूरत को पूरा करने और लेखक के आशय की अभिव्यक्ति में स्पष्टता लाने और कथ्य को

भली प्रकार से संप्रेषित करने के लिए अनुवादक चाहे तो कोई शब्द, वाक्य अथवा वाक्यांश जोड़ दे अथवा छोड़ दे। जैसे, 'as an exceptional case' वाक्यांश का अनुवाद करते समय 'case' शब्द को छोड़ते हुए शेष वाक्यांश को 'अपवाद के रूप में' अनूदित कर देना। किंतु इस अर्थ यह नहीं कि अनुवादक को मूल में अतिरिक्त भाव अथवा विचार जोड़ने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

ज्ञानात्मक साहित्य अनुवादक का एक ही लक्ष्य होता है – विषयपरक यथार्थता एवं परिशुद्धता को बनाए रखना। वैसे, अनुवादक लक्ष्य भाषा के पाठकों तक मूल सामग्री रूपी विचारों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने के लिए आवश्यक स्थलों पर व्याख्या, पाद–टिप्पणी आदि देकर अर्थ में स्पष्टता ला सकता है। वहीं, सर्जनात्मक अनुवादक मूल का केवल अनुकरण ही नहीं करता; वह लेखक के यथार्थ के सम्मुख स्वयं को समर्पित करते हुए सर्जनात्मक अनुवाद करता है। इस समर्पण के दौरान अनूदित पाठ में कुछ जोड़ने तथा छोड़ने की पर्याप्त गुंजाइश अपेक्षाकृत अधिक रहती है।

सर्जनात्मक साहित्य का प्रकृति के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों में से छायानुवाद, सारानुवाद और अनुकूलन करते समय अनुवादक कुछ जोड़ने–छोड़ने की स्वतंत्रता का आवश्यकता के अनुसार भरपूर प्रयोग करता है। जबकि ज्ञानात्मक सामग्री के सारानुवाद अथवा अनुकूलन में विषयपरकता एवं तथ्यात्मक प्रामाणिकता का बने रह पाना संभव नहीं हो पाता। इस कारण ज्ञानात्मक साहित्यानुवाद में इस विधि द्वारा अनुवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। यदि ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवादक विषय–वस्तु में अभिव्यंजित मूल कथ्यों से विचलित हो जाता है तो उसका यह विचलन गलती है। अनुवाद में इस प्रकार से कुछ जोड़ने या छोड़ने का उसे कोई अधिकार नहीं है। इसके विपरीत, साहित्यानुवादक कहानी–उपन्यास, नाटक, कविता आदि का अनुवाद करते समय छूट लेते हुए उन्मुक्त गगन में विचरण करने की अपनी मौलिक कल्पना की उड़ान भर सकता है।

6. सर्जनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य में **भाषा की कलात्मकता के स्तर पर भिन्नता** नजर आती है। दोनों की भाषाओं में प्रवृत्ति के स्तर पर अंतर होता है। सर्जनात्मक साहित्य बिंबों–प्रतीकों तथा भाषिक क्षमता के विविध उपकरणों से सज्जित सर्जनात्मक अभिव्यक्ति होता है। बिंबों–प्रतीकों आदि के माध्यम से साहित्य की भाषा में लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता का सृजन होता है। इसके माध्यम से जागे इस प्रकार के भाव–चित्र से पाठक, साहित्यकार की अनुभूति से परिचित होता है। अनुवादक को इसी प्रकार के भाव दूसरी भाषा में जाग्रत करने होते हैं। ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवादक, ज्ञान के प्रसार के लिए विषय को अभिधा के माध्यम से व्यक्त कर देता है। जबकि सर्जनात्मक साहित्य के अनुवादक को साहित्यकार की अनुभूति, उसकी जीवन–दृष्टि आदि का केवल अर्थ–बोध ही नहीं कराता, बल्कि लक्ष्य भाषा के सहृदय की कल्पना में भाव–चित्र जगाता है। इसलिए साहित्यानुवादक का दायित्व है कि वह मूल रचना की ही भाँति रसात्मकता उत्पन्न करने का प्रयास करते हुए लक्ष्य भाषा के पाठक वर्ग के मन–मस्तिष्क पर अनूदित रचना वैसा ही प्रभाव डाले जो मूल कृति से संभव हुआ था। इसलिए अक्सर यह दिया जाता है कि साहित्यिक कृतियों का अनुवाद नहीं हो सकता और 'साहित्यानुवाद वास्तव में पुनःसृजन (transcreation) है, मूल कृति का प्रतिबिंब नहीं।'

7. सर्जनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य की भाषा में प्रवृत्तिपरक अंतर के कारण इन दोनों प्रकार के साहित्य में **अर्थ के स्तर पर भिन्नता** आ जाती है। ज्ञानात्मक साहित्य की तथ्यपरकता, अर्थ के स्तर पर एकार्थता को बनाए रखती है। अर्थादेश, अर्थ विस्तार और अर्थापत्ति के रूप में भाषाविज्ञान की प्रक्रियाएँ यहाँ लागू नहीं होतीं। ज्ञानात्मक साहित्य में 'गाय' सीधेपन को नहीं व्यक्त करती, 'कुत्ता' वफादारी अथवा कमीनेपन को नहीं दर्शाता, 'उल्लू' मूर्खता का द्योतक नहीं है और न ही व्यक्ति 'चिंताओं के सागर में डूबता है'। यही कारण है कि ज्ञानात्मक के साहित्य के अनुवादक को अनूदित पाठ में इसी एकार्थता के प्रति विशेष ध्यान देना पड़ता है, इसे बनाए रखना पड़ता है। अगर ज्ञानात्मक साहित्य में द्वि–अर्थकता अथवा अनेकार्थकता झलके तो वह अनुवाद त्रुटिपूर्ण माना जाएगा। जबकि सर्जनात्मक साहित्य की भाषा की लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता अर्थ के अनेक स्तरों की सृष्टि करती है, साहित्य में लालित्य गुण को बढ़ाते हुए अनेकार्थकता लाकर रचना में रसात्मकता उत्पन्न करती है। और यही वास्तव में उसके अनुवाद–कौशल की कसौटी है कि वह मूल लेखक की अभीष्ट अनेकार्थता को किस हद तक शामिल कर पाता है।

8. सर्जनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य में परिव्याप्त अंतर को शब्द प्रयोग के स्तर पर भी रेखांकित किया जा सकता है। ज्ञानात्मक साहित्य की शब्दावली की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं। इसमें शब्दार्थ की सुनिश्चितता है – एक शब्द का एक ही अर्थ। यहाँ विकल्पों की उपलब्धता नहीं होती। वहीं, एक ही शब्द का ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में न केवल भिन्न–भिन्न अर्थ है बल्कि साधारण प्रचलित शब्द तक अपने भिन्न अर्थ रखते हैं। जैसे, अंग्रेजी के साधारण प्रचलित 'cover' शब्द को लिया जा सकता है जो ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में निम्नलिखित प्रकार से भिन्न–भिन्न अर्थ की अभिव्यंजना करता है :

cover diagram (भौतिकी)	:	प्रसारण क्षेत्र आरेख
cover cell (वनस्पति विज्ञान)	:	आवरण कोशिका
cover crop (वनस्पति विज्ञान)	:	भूमि संरक्षण–सस्य
cover pot (रसायन विज्ञान)	:	आवरण
cover set (गणित)	:	आच्छादित पात्र
cover lining map (भूगोल)	:	आवृत्त समुच्चय
cover mass (भूविज्ञान)	:	रेखांकित मानचित्र

जबकि द्विअर्थकता अथवा अनेकार्थता का समावेश सर्जनात्मक साहित्य की भाषा की सफलता की कसौटी सिद्ध होती है। साहित्यिक भाषा में शब्दकोशीय अर्थ से कहीं अधिक अर्थों का प्रतिफलन होता है। साहित्य–अनुवादक इस बहु–अर्थवत्ता को शब्दावली के स्तर पर भी बनाए रखने का प्रयास करता है। उसके सामने शब्दों के विकल्प भी रहते हैं। शैली की आवश्यकता के अनुसार वह लक्ष्य भाषा में उपलब्ध विभिन्न पर्यायों में से किसी भी पर्याय को चुन सकता है।

9. **पारिभाषिक शब्द–प्रयोग के स्तर पर भी दोनों प्रकार के अनुवादों में भिन्नता** पाई जाती है। ज्ञानात्मक साहित्य में विचारों की प्रधानता होती है, जिन्हें स्पष्ट एवं यथातथ्य परिभाषित शब्दों में व्यक्त किया जाता है। इसीलिए इस साहित्य में पारिभाषिक शब्दों का बहुतायत प्रयोग मिलता है। जबकि सर्जनात्मक साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग, प्रतिशतता की दृष्टि से कम होता है। पारिभाषिक शब्द, सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के होते हैं। इन शब्दों को विभिन्न विज्ञानों और शास्त्रों में सुनिश्चित अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। ज्ञानात्मक साहित्य में इनके भरपूर इस्तेमाल करने के कारण अनुवाद में भी उनका सर्वाधिक महत्व है। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली की दृष्टि से लक्ष्य भाषा का संपन्न होना जरूरी है। उदाहरण के तौर पर, अंग्रेजी के 'family' शब्द देखें जिससे जुड़े अनेक पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी में अलग–अलग प्रतिशब्द बनाए गए हैं ताकि उनका सटीक अर्थ निकाला जा सके :

family adjustment	:	पारिवारिक समायोजन, कौटुंबिक समायोजन
family allowance	:	परिवार भत्ता, कुटुंब भत्ता
family feast	:	कुल भोज
family head	:	कर्ता
family of nations	:	राष्ट्रकुल
family of orientation	:	जन्म परिवार, कुटुंब परिवार, प्रभव परिवार
family therapy	:	परिवारपरक चिकित्सा, कुटुंबपरक चिकित्सा
family tree	:	वंशवृक्ष

अनुवाद में हर जगह पारिभाषिक शब्दों के प्रतिशब्दों का प्रयोग किया जाए। लेकिन, जहाँ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अपेक्षित न हो वहाँ उनके प्रयोग से बचना चाहिए। जैसे, 'as a matter of right' का अनुवाद करते समय यहाँ प्रयुक्त 'matter' शब्द को पारिभाषिक मानते हुए अनुवाद नहीं करना चाहिए और इसका अनुवाद 'अधिकार के रूप में', अथवा 'साधिकार' करना होगा।

10. **समीकरणों, संकेतों–प्रतीकों और विशिष्ट चिह्नों आदि के प्रयोग स्तर पर भिन्नता** को रेखांकित किया जा सकता है। सर्जनात्मक साहित्य में इनका प्रयोग विरले ही नजर आता है, जबकि ज्ञानात्मक साहित्य में ये भाषा को विशिष्ट बना देते हैं। ज्ञानात्मक साहित्य और विशेष तौर पर विज्ञान–प्रौद्योगिकी के साहित्य में तर्क–विश्लेषण, परीक्षण–प्रयोगों आदि को सूत्रात्मक रूप से व्यक्त करते हुए इनके माध्यम से भाषा में सूक्ष्मता लाई जाती है। इनसे भावों को संक्षिप्त एवं स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाता है। ®, $<$, $>$, α, β, $\therefore$, $\cong$, λ, ϕ, γ, ϑ, π, $\geq$, और $\neq$ आदि विशेष प्रकार के चिह्नों से वैज्ञानिक तथ्यों को चित्रात्मक विधि द्वारा सूत्र रूप में स्पष्ट किया जाता है। ज्ञानात्मक साहित्य की इस विशिष्टता को अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में बनाए रखना अनुवादक के लिए नितांत आवश्यक होता है।

ज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्यानुवाद में समानता एवं अंतर के अन विभिन्न आयामों को जानने के बाद आइए अब हम इस मूल प्रश्न पर विचार करें कि क्या सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद संभव है?

4.8 क्या सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद संभव है?

अनुवाद, कोई सरल कार्य नहीं है। यह स्रोत भाषा के संदेश की लक्ष्य भाषा में अर्थ और शैली की दृष्टि से निकटतम सहज समतुल्य पुनःसृष्टि करना है। लेकिन, स्रोत भाषा में व्यक्त कथ्य को लक्ष्य भाषा में निकटतम समतुल्य अंतरित करना सरल कार्य नहीं है। कारण, इस अंतरण कार्य को भली प्रकार से संपन्न करने में अनुवादक के समक्ष अनेक चुनौतियाँ और सीमाएँ उपस्थित होती हैं। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में तो ये चुनौतियाँ और भी विकट रूप धारण कर लेती हैं क्योंकि सर्जनात्मक साहित्य मूलतः आनंद का साहित्य होता है, जिसमें सूक्ष्म भाव और कल्पना का समावेश होता है। बिंबों–प्रतीकों आदि के माध्यम से लक्षणा–व्यंजनापरक भाषा में व्यक्त ये भाव–कल्पना तत्व, साहित्यिक रचना के कथ्य को विशिष्ट अर्थगर्भित बना देते हैं और अनुवादक को इस अनुभूति को समांतर रूप में उद्बुद्ध करके संप्रेषित करना होता है। डॉ.नगेंद्र ने 'अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग' शीर्षक संपादित पुस्तक में लिखा है कि 'सर्जनात्मक साहित्य के विधायक तत्व – भाव और कल्पना सर्वथा सूक्ष्म–तरल होते हैं। तथ्य और विचार का तो संप्रेषण हो सकता है और होता है, किंतु भाव और कल्पना का उद्बोध ही किया जा सकता है, संप्रेषण नहीं। वास्तव में, उद्बोध ही उनका संप्रेषण है क्योंकि कवि सहृदय के चित्त में अपनी अनुभूति का स्थानांतरण नहीं वरन उसकी समानांतर अनुभूति को ही उद्बुद्ध करता है।' (पृ.164) इस समांतर अनुभूति को उद्बुद्ध करने के लिए मूल कथ्य को संप्रेषित करना तथा उसके साहित्यिक सौंदर्य को अक्षुण्ण बनाए रखना होता है। इसलिए, कई विद्वानों का तो यहाँ तक कहना है कि सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद हो ही नहीं सकता। वहीं यह भी स्वीकार किया जाता है कि साहित्य का अनुवाद तो किया जा सकता है, लेकिन अपेक्षाकृत जटिल एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है।

वास्तव में देखा जाए तो सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद नहीं, पुनर्सृजन (ट्रांसक्रिएशन) होता है। डॉ. नगेंद्र द्वारा संपादित पुस्तक में शामिल 'कथा साहित्य का अनुवाद : कुछ मुद्दे' शीर्षक अपने आलेख में डॉ. रणवीर रांग्रा लिखते हैं कि 'साहित्यिक कृति के माध्यम से पाठक–रूपी अनुवादक उस तक जो अर्थ पहुँचाना चाहता है और उसके भीतर जो पहले से विद्यमान होता है, उन दोनों का संगम सहज नहीं हो पाता। कृति में से जो अनुवादक की ओर आता है उसे पाने और पचाने में उसकी अपनी भीतरी पूँजी का, उसकी संस्कारिता का भी, योग रहता है। इसके परिणामस्वरूप वह कृति को ग्रहण करते–करते अंजाने में उसे अपने रंग में भी रंगता जाता है। इसलिए यह मानना पड़ता है कि किसी सर्जनात्मक कृति का अनुवाद मात्र अनुवाद नहीं होता, उससे कुछ अधिक होता है। वह लक्ष्य भाषा में एक प्रकार से मूल कृति की पुनःसर्जना (ट्रांसक्रिएशन) जैसा होता है।' (पृ.194)

काव्यानुवाद के संदर्भ में अनुवाद को मूल कृति का पुनःसर्जन मानने की बात तो और भी अधिक सटीक सिद्ध होती है क्योंकि 'कविता, सर्जनात्मक साहित्य का नवनीत है। उसकी संवेद्य अनुभूति 'सांद्र' और बिंब–योजना अत्यंत संश्लिष्ट होती है, इसीलिए उसे अनन्य उक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। ज़ाहिर है कि अनन्य उक्ति को किसी अन्य उक्ति के माध्यम से अनूदित नहीं किया जा सकता।' (वही, डॉ. नगेंद्र, पृ. 164) लेकिन, इसका यह अभिप्राय भी नहीं है कि काव्येतर साहित्य का अनुवाद कोई सरल कार्य है। वास्तव में साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में यह सामान्य कथन स्वीकार नहीं किया जा सकता कि साहित्य की किसी एक विधा की रचना का अनुवाद सरल और दूसरी विधा की रचना का अनुवाद कठिन है।

साहित्य की सभी विधाओं में रचित कृतियों का अनुवाद जटिल होता है क्योंकि 'यहाँ अनुवादक को पाठक और रचयिता की, बल्कि सहृदय और सर्जक दोनों की भूमिका में उतरना होता है। पहले सहृदय पाठक के रूप में कृति को ग्रहण करना होता है और गृहीत रूप की लक्ष्य भाषा में पुनः सर्जना करनी होती है। उसे कृति के अभिधार्थ में न अटक कर उसकी प्रतीकात्मकता को और उसके माध्यम से ध्वनित पात्रों की मानसिकता तक पहुँचना होता है। उसे उस स्थिति से भी जूझना होता है जहाँ शब्दों के अर्थ चुक जाते हैं और पात्रों की आत्मा संकेतों, बिंबों और प्रतीकों के रूप में अभिव्यक्ति पाती है। यही नहीं, उसे सबको संदर्भानुरूप एकसूत्रता में पिरोकर निहितार्थ को ग्रहण करना होता है।' (पृ.193–194) इसलिए किसी भी साहित्यिक कृति का अनुवाद, मात्र दूसरी भाषा में अंतरण (अनुवाद) न होकर उसका लक्ष्य भाषा में पुनर्सृजन होता है।

यहाँ पुनर्सृजन का अर्थ मौलिक रचना कर्म नहीं है। 'पुनर्सृजन' शब्द, इस अर्थ का भी व्यंजक नहीं है कि अनुवादक मूल रचना की आत्मा को ही तिरोहित कर दे और उसके स्थान पर अपने विचार प्रत्यारोपित कर दे। ऐसा अनुवाद सफल अनुवाद नहीं कहा जाता। यह वास्तव में मूल रचना के रूप (भाषा) का अंतरण (रूपांतरण अर्थात भाषांतरण) न होकर मूल कृति का दूसरी भाषा में पुनर्सृजन करना है जिसमें यथासंभव मूल के निकट पहुँचने या बने रहने का प्रयास किया जाता है। यह बात कविता के संदर्भ में विशेष तौर पर सही है। काव्यानुवाद के लिए तो यहाँ तक कहा जाता है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता, वह तो पुनर्सृजन होता है। यह पुनर्सृजन कर्म करते समय अनुवादक को मूल में से कुछ छोड़ने या कुछ जोड़ने की पूरी पूरी–पूरी स्वतंत्रता होती है। हालाँकि अनुवाद कर्म की सैद्धांतिक अवधारणा की दृष्टि से यह स्वीकार्य नहीं, किंतु साहित्यानुवाद में इस आधार–दृष्टि का कड़ाई से पालन करना संभव नहीं है।

वास्तव में यह पुनर्सृजन, 'परकाया–प्रवेश' है, जो असंभव (असाध्य) न होकर स्वयं में दुस्साध्य है। इसलिए सैद्धांतिक रूप से भले ही यह कह दिया जाता है कि साहित्यानुवाद और विशेष तौर पर कविता का अनुवाद नहीं हो सकता। किंतु यह भी वास्तविकता है कि सर्जनात्मक प्रेरणा के कारण साहित्यानुवाद की परंपरा अत्यंत प्राचीन है और जो निरंतर आज भी जारी है। विशेष यह भी है कि साहित्यानुवाद (और खास तौर पर काव्यानुवाद) एक सीमा तक संभव होने के साथ–साथ सार्थक भी है। पुनर्सृजन के लिए अनुवादक को न केवल दोनों भाषाओं–संस्कृतियों का बोध होना चाहिए बल्कि सर्जनात्मक प्रतिभा और कल्पनाशीलता संपन्न भी होना चाहिए। इससे वह मूल कृति के रचनाकार की मनोभूमि से जुड़कर और उसके वैचारिक धरातल में गहन रूप से प्रवेश करके मूल 'असाध्य वीणा' को साधने का प्रयास करता है।

ध्यान देने की बात यह भी है कि अनुवादक से सर्जनात्मकता की यह अपेक्षा किसी भी विधा में रचित मूल कृति की संपूर्ण अभिव्यक्ति भंगिमा पर निर्भर करती है। रचना में अभिव्यक्ति का यह सौंदर्य, भाव और शैली के स्तर पर जितना अधिक महत्वपूर्ण होता है, दूसरी भाषा में उसका पुनःसृजन करना उतना ही कठिन प्रतीत होता है। बेहतर अनुवादक मूल भाव के साथ–साथ मूल लेखक की शैली को भी उसी रूप में पुनर्सृजित करने का सार्थक प्रयास करता है। इसलिए उसी साहित्यिक कृति के अनुवाद को अच्छा माना जाता है जिसमें मूल की पुनःसृष्टि होती है और पुनर्सृजन अनुवादक का दायित्व होता है – 'टू रिक्रिएट द ऑरिजिनल'।

बोध प्रश्न–2

1. साहित्यानुवाद क्या है?

....

....

....

....

....

2. ज्ञानात्मक और सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में समानता के बिंदु कौन से हैं?

....

....

....

....

....

3. ज्ञानात्मक और सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में असमानता के पाँच आयाम लिखिए।

....

....

....

....

....

4. सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की संभावना पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

4.9 साहित्यानुवाद : अर्थ एवं शैली के स्तर पर समतुल्यता का प्रश्न

एक सृजनशील प्राणी होने के नाते मनुष्य, विभिन्न संदर्भों, स्थितियों और उद्देश्यों से अपने मनोगत भावों (कथ्य) को व्यक्त करने के लिए भाषा को विभिन्न प्रकार से व्यवहार में लाता है। भाषा व्यवहार के स्तर पर उसमें जो विविधता आती है, उन्हें भाषा की शैलियाँ कहा जाता है। 'कथ्य' (अर्थात अर्थ) यदि भाषा की आत्मा है तो शैली उसका शरीर। इसलिए अभिव्यक्ति और उसे व्यक्त करने की शैली के लिखित रूप को 'साहित्य' का अभिन्न अंग माना जाता है। यह बात सर्जनात्मक साहित्य के संदर्भ में विशेष तौर पर स्वीकार की जाती है। वहीं अनुवाद, किन्हीं दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाली गतिविधि है। लेकिन, कोई भी दो भाषाएँ पूरी तरह से एकसमान नहीं होती हैं, उनके बीच कुछ न कुछ अंतर रहता ही है। इसलिए अनुवाद में स्रोत भाषा के अर्थ (कथ्य) को लक्ष्य भाषा के यथासंभव निकट बनाए रखना पड़ता

है। अनुवादक से दो भाषाओं के बीच कथ्य (अर्थ) के साथ–साथ शैली के स्तर पर निकटतम समतुल्यता (equivalence) स्थापित करने का प्रयास अपेक्षित होता है।

जिस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव स्वयं में विशिष्ट तथा अन्य व्यक्तियों से भिन्न होता है, उसी प्रकार किसी भी भाषा–विशेष में समानता के बावजूद उसके जरिए व्यक्त किए जाने वाले भाव की प्रस्तुति में साहित्य रचना कर्म करने वालों में से प्रत्येक की कृति में शैली के स्तर पर भिन्नता नजर आती है। 'शैली' शब्द की व्युत्पत्ति 'शील' धातु से हुई है – शीलमेव स्वार्थेश्यङ् डीपिः व लोप। 'शील' शब्द स्वभाव, लक्षण, झुकाव, आदत, चरित्र आदि अनेक अर्थों को व्यंजित करने वाला शब्द है। ये सभी व्यक्ति की विभिन्न विशेषताओं से जुड़े हुए पक्ष हैं, इसलिए 'शील' को व्यक्ति के स्वभाव से भी संबद्ध किया जाता है। साहित्य के क्षेत्र में इसे 'अभिव्यक्ति की शैली' अथवा 'अभिव्यक्ति की रीति' से जोड़कर देखा जाता है।

अंग्रेजी में 'style' शब्द को 'शैली' के समतुल्य शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसे मुख्यतः लेखन की विशेषता के लिए प्रयुक्त किया जाता है। 'style' शब्द लैटिन भाषा के 'Stilus' (स्टीलस) से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ था – 'लौह लेखनी'। प्राचीनकाल में इस लौह लेखनी से मोमचढ़ी पट्टियों पर या कागजों पर लिखा जाता था। किंतु, कालांतर में 'लौह लेखनी' में अर्थ परिवर्तन हो गया और यह 'अभिव्यक्ति' का प्रतीक बन गया। आगे चलकर इस 'स्टाइल' शब्द को 'लिखने की विशिष्ट शैली' अथवा 'स्व की अभिव्यक्ति की रीति' के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'शैली' और 'स्टाइल' का संबंध 'अभिव्यक्ति की पद्धति' से है।

साहित्यकार अपनी मनोगत अनुभूतियों, भावों–विचारों और अभिव्यक्तियों का सामान्यीकरण करके उन्हें दूसरों तक प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करने के लिए भाषा के माध्यम से अपनी विशिष्ट शैली को व्यवहार में लाता है। इसलिए शैली व्यक्ति–वैशिष्ट्य के रूप की द्योतक हो जाती है। शैली, साहित्यकार की अनुभूति और अनुभवजन्य विचार को प्रभावशाली ढंग से प्रकट करने में आवरण का काम करती है। उल्लेखनीय है कि यह आवरण, भाषायी मानक के अतिक्रमण या विचलन से सर्जनात्मक रूप धारण कर लेता है। ये विचलन भाषा की संरचना से संबंधित होते हैं। यही विचलन ही सामान्य या आम बोलचाल या आम जीवन–व्यवहार की भाषा को साहित्य की भाषा से अलग करता है। भाषा के स्तर पर इस विचलन से रचना प्रभावोत्पादक बनती है और पाठक को उससे रसास्वादन होता है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि शैली भाषा का वह विशिष्ट रूप है जिसमें अभिव्यंजना की ऐसी शक्ति निहित रहती है जो सर्जक के सामान्यीकृत मनोगत अनुभूतियों, भावों–विचारों और अभिव्यक्तियों का आस्वादन/बोध कराती सर्जनात्मक अभिव्यंजना को दूसरे के लिए रसानुकूल और प्रभावोत्पादक बनाती है।

शैली, किसी भी रचना को विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। यह विशेष तौर पर साहित्यिक रचनाओं के संदर्भ में कही जा सकती है क्योंकि प्रत्येक साहित्यिक रचना में रचना–शैली का विशेष स्थान है। उदाहरण के लिए, हिंदी में ऐसे कई शब्द मिल जाएँगे जो अर्थ के धरातल पर एक ही अर्थ को व्यक्त करने वाले नजर आते हैं, जबकि उस अर्थ को व्यंजित करने में शब्दों को विभिन्न प्रकार से संजोया जा सकता है। जैसे, अंग्रेजी के 'come' और उसके लिए हिंदी में प्रयुक्त होने वाले 'आ/आओ/आइए' शब्दों का उल्लेख किया जा सकता है। अंग्रेजी में 'come' के साथ 'please' शब्द जोड़ने (अर्थात please come कहने) पर, भाव के स्तर पर नम्रता लाई जाती है। परंतु, हिंदी में 'आओ', 'आ', और 'आइए' के अलावा 'पधारिए', 'तशरीफ रखिए',

'चरणकमलों से कुटिया को पवित्र कीजिए', 'चरण रज का सौभाग्य प्रदान कीजिए' आदि विभिन्न अभिव्यक्तियों के द्वारा नम्रता की इस विशिष्ट भावना को व्यक्त किया जाता है। अर्थ के धरातल पर देखा जाए तो हिंदी में व्यक्त ये सभी भाव एक ही अर्थ के व्यंजक हैं। किंतु लेखक अपनी लेखन–शैली में विशिष्टता लाते हुए उसे भिन्न–भिन्न रूपों में व्यवहार में लाता है।

इसलिए, साहित्य सृजन में रचना–शैली को कई प्रकारों की छटाओं से युक्त किया जा सकता है, जिन्हें व्याकरणिक आधार पर व्यास शैली, समास शैली, अलंकृत शैली, कोमलकांत पदावली युक्त शैली, गुंफित शैली, मुहावरेदार शैली, व्यंग्यात्मक शैली आदि अनेक नाम दिए जाते हैं। इसी प्रकार, रचनाकार अपने लेखन कर्म में संप्रेषण की औपचारिक अथवा अनौपचारिक शैली, संवादात्मक शैली या फिर रचना को आँचलिकता का पुट देना आदि विभिन्न शैलियों को अपना सकता है। इसी संदर्भ में रूढ़िपरक और आत्मीय शैली का भी उल्लेख किया जा सकता है। अगर हम हिंदी भाषा की विभिन्न शैलियों की ही बात करें तो संस्कृतनिष्ठ शैली, अरबी–फारसी मिश्रित शैली (अर्थात उर्दू), सामान्य बोलचाल की शैली (हिंदुस्तानी शैली) और अंग्रेजी मिश्रित शैली (हिंग्लिश) आदि अभिव्यक्ति शैलियाँ विकसित नजर आती हैं। इसके अलावा, भाषा के कार्य–व्यवहार क्षेत्र अथवा विषय क्षेत्र के अनुसार वाणिज्यिक, कार्यालयी, तकनीकी वैज्ञानिक आदि शैलियाँ भी नजर आती हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं के आधार पर उपन्यास, नाटक, कहानी आदि विधापरक शैलियाँ भी देखी जा सकती हैं, जिनमें कविता प्रायः छंदोबद्ध या मुक्त छंद रूप में, नाटक संवाद–शैली में और गद्य रूप में मिलते हैं।

चूँकि विभिन्न प्रकार की विशिष्ट शैली के जरिए किसी भी तरह के लेखन और विशेष तौर पर साहित्यिक रचनाओं में शैली के स्तर पर विशिष्टता पाई जाती है, इसलिए अनुवादक के समक्ष विचारणीय प्रश्न यह होता है कि क्या अनुवाद में स्रोत भाषा के कथ्य को अंतरित किया जाए है या फिर उसमें मूल की शैली का अनुवाद करना भी आवश्यक है?

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो गया है कि अनुवाद, दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाली गतिविधि है। इसलिए अनुवाद करते समय एक भाषा की आत्मा अर्थात 'अर्थ' और उसके शरीर यानी 'शैली' को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना होता है। अनुवादक, मूल भाव को अक्षुण्ण बनाए रखने के साथ–साथ मूल शैली को भी यथासाध्य अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास करता है। इस आधार पर, सैद्धांतिक दृष्टि से देखें तो अनुवाद में स्रोत भाषा की कृति की शैली के स्तर पर बनाए गए शैली वैशिष्ट्य को लक्ष्य भाषा पाठ में भी सुरक्षित रखते हुए अनुसरण करना चाहिए यानी लक्ष्य भाषा में भी मूल पाठ की शैली अपनाई जानी चाहिए। कारण, स्रोत भाषा में जो कुछ और जिस शैली में कहा गया है, उसे लक्ष्य भाषा में किंतु भिन्न शैली में कहने से मूल–सा (समतुल्य) भाव और प्रभाव नहीं आ पाएगा। इस संदर्भ में पाश्चात्य अनुवाद–चिंतक यूजीन ए. नाइडा का यह विचार ध्यान में रखना होगा कि "अनुवाद का आशय स्रोत भाषा के संदेश का अर्थ और शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्यों द्वारा पुनर्सृजन करना है।" ('Translating consists in producing in the receptor language, the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style.')

यही कारण है कि मूल पाठ के अर्थ–भाव और शैली की विशेषताओं को अनुवाद करते समय दूसरी भाषा में यथासाध्य सुरक्षित रखने का प्रयास किया जाता है। अनुवादक

को जहाँ अर्थ के स्तर पर मूलवत प्रति–अर्थ की प्रस्तुति करनी होती है, वहीं शैली को भी मूल के समान प्रभावशाली बनाए रखने की जरूरत होती है। लेकिन, एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में समान रूप से (समतुल्य) प्रस्तुत करना कठिन होता है क्योंकि दो भाषाओं की संरचना, प्रकृति, व्याकरण, शब्द संयोजक पर्याय, सामाजिक–सांस्कृतिक तत्व, और शैलीगत अंतर आदि कठिनाई पैदा करते हैं। इस समस्या के समाधान के रूप में नाइडा ने अनुवाद की अवधारणा पर विचार करते हुए 'natural closest equivalent' (निकटतम सहज समतुल्य) की अवधारण प्रस्तुत की। इसका अर्थ यह है कि अनुवाद मूल के निकट तो हो सकता है, परंतु उसमें मूल की सभी बारीकियाँ नहीं आ सकतीं। यही कारण है कि 'अर्थ' (अर्थात विषय–वस्तु) और 'शैली', दोनों में से अर्थ की प्रधानता को स्वीकार किया जाता है और विषय–वस्तु की तुलना में शैली को गौण माना जाता है।

इस इकाई को भाग–4.7 में आप यह पढ़ चुके हैं कि ज्ञानात्मक साहित्य में तथ्य तथा विचार की प्रधानता को सीधी–सरल भाषा में व्यक्त किया जाता है इसलिए उसमें शैली का स्थान या महत्व नहीं होता। वहीं सर्जनात्मक साहित्य में भाव–कल्पना को बनाए रखने में रचना को शैली का अपना वैशिष्ट्य होता है। यही कारण है कि साहित्येतर अनुवाद (अर्थात ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद) में, मूल की जितनी भी शैलीपरक विशिष्टता हो, उसे किसी सीमा तक बनाए रख पाना संभव हो जाता है, किंतु साहित्यानुवाद और विशेष तौर पर काव्यानुवाद में शैली का अनुवाद, एक महत्वपूर्ण किंतु चुनौतीपूर्ण कार्य है। भाषा को रूपपरक ही नहीं छंद, अलंकार, नाद सौंदर्य आदि जैसे भाषा–सौष्ठव के तत्वों से संयोजित शैली को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करना कठिन होता है। कभी–कभी तो स्थिति यह होती है कि मूल साहित्यिक रचना की समस्त शैलीपरक विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रूप से प्रस्तुत कर पाना असंभव ही हो जाता है। इसका मूल कारण स्रोत और लक्ष्य भाषा की प्रकृति में शैली के धरातल पर असमानता होना है। रचनाकार का विभिन्न शैलियों को व्यवहार में लाना और कभी–कभी एक ही रचना में अनेक शैलियाँ प्रयुक्त करना भी अनुवादक के समक्ष विकट चुनौती खड़ा करता है। इसलिए कथ्य के शैलीगत भेद को लक्ष्य भाषा में अंतरित करना अत्यधिक कठिन कार्य है।

सर्जनात्मक साहित्य में रचनाकार, शब्दों के धरातल पर पर्यायों का प्रयोग करके शैली के स्तर पर भेद ले आते हैं। हिंदी के संदर्भ में देखें तो अगर कोई रचनाकार अपनी भाषा में संस्कृतनिष्ठ और कठिनतर शब्दों का निरंतर प्रयोग करता है तो उसकी भाषा संस्कृतनिष्ठ शैली वाली हो जाती है। इसी तरह, अगर वह अरबी–फारसी आदि शब्दों का बहुलता से प्रयोग करे तो भाषा शैली अरबी–फारसी प्रभाव वाली बन जाएगी और यदि उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया हो तो वह भाषा उर्दूमयी हिंदुस्तानी भाषा शैली का रूप धारण कर लेगी। वहीं, यदि रचनाकार अपनी रचना में सामान्य बोलचाल वाले शब्दों का प्रयोग करता है तो उसकी भाषा सहज–शैली से संपन्न हो जाएगी। शब्दों के धरातल पर शैलीगत आयाम आँचलिक शब्द प्रयोग से भी संबंधित हैं, जो रचना को विशिष्टता (अर्थात आँचलिकता) प्रदान करते हैं। इसी तरह, पात्रानुकूल भाषा निर्मित करने के लिए रचनाकार द्वारा शब्दों से खिलवाड़ करने का कार्य भी किया जाता है। वास्तव में, भाषा में शैलीगत भेद निर्मित करने में शब्दों–पर्यायों का अत्यधिक योगदान होता है और अनुवादक को इसे ध्यान में रखते हुए अनुवाद करना चाहिए, शब्द प्रयोग करने चाहिए।

मूल लेखक की शैली को समान एवं प्रभावपूर्ण ढंग से अनूदित रचना में लाने के लिए अनुवादक को रचनाकार की मानसिकता से जुड़ते हुए और उससे तादात्म्य स्थापित करना होता है। उदाहरण के लिए, इब्सन के नाटकों का अनुवाद करते समय 'प्रतीक शैली' और टी.एस. एलियट के नाटकों का अनुवाद करते समय 'अध्यात्मवाद' (spiritualism) को स्वर प्रदान करती लेखन शैली को ध्यान में रखना जरूरी होगा। इसी प्रकार, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, बाबू गुलाबराय, डॉ. नगेंद्र आदि के निबंधों की शैलीगत विशेषताओं की बारीकियों को समझे–पकड़े बिना सार्थक अनुवाद संभव नहीं हो सकेगा। अनुवादक के द्वारा मूल रचना के शैलीगत वैशिष्ट्य की उपेक्षा करने पर रचना के साथ अन्याय हो जाएगा, मूल की अंतरात्मा की रक्षा नहीं हो पाएगी।

अनुवाद में शैली की यह चुनौती युग–विशेष की भाषा का आयाम लिए हुए भी है कि क्या अनुवाद मूल कृति युगीन भाषा में किया जाए या समकालीन भाषा में? उदाहरण के लिए, मिल्टन की अंग्रेजी कविता या चंदवरदाई के रासो काव्य की दूसरी भाषा में अनुवाद की भाषा कैसी हो? ऐसी स्थिति में (यानी पिछले युगों की रचनाओं के अनुवाद) में शैली और भाषा के चयन में अनुवादक से विशेष सूझबूझ और संवेदनशीलता की अपेक्षा रहती है।

वस्तुतः अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के पर्याप्त ज्ञान के साथ–साथ स्रोत भाषा की शैलीगत भंगिमाओं को लक्ष्य भाषा में समान स्तर पर व्यक्त करने के लिए रचनात्मक क्षमता और सृजन कौशल अपेक्षित होता है। इनके बल पर अनुवादक को लक्ष्य भाषा में समांतर शैली भंगिमा की खोज करना जरूरी हो जाता है। ऐसे में अपनी रचनाधर्मिता और सृजन के आलोक में उसे अनुवाद करते समय पाठ को मूल की शैली के प्रभाव/छाया से संपन्न करना उपयुक्त होगा।

शैली के अनुवाद के संदर्भ में हमें यह स्वीकार करने की जरूरत है कि अर्थ का तो संप्रेषण हो सकता है, किंतु शैली का यथावत संप्रेषण संभव नहीं है। लक्ष्य भाषा के स्तर पर समतुल्यता स्थापित करने अर्थात उसे दूसरी भाषा में व्यक्त करने की कोशिश करने पर वह लक्ष्य भाषा की प्रकृति के प्रतिकूल हो जाएगा। प्रत्येक भाषा–भाषी समाज, उसका पाठक वर्ग अपनी भाषा की प्रकृति और उसकी शैली से ही परिचित होता है। स्वाभाविक है कि इससे उसे लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित शैली हास्यास्पद, अर्थहीन या फिर अनावश्यक विस्तार वाली लगेगी। इसलिए दूसरी भाषा की छाया से लक्ष्य भाषा में परोसी गई शैली पाठक को एक बोझ प्रतीत होगी। ऐसे में स्वीकार्य तथ्य तो यही हो जाता है कि कहीं–कहीं शैली का अनुवाद करना न तो वांछित प्रतीत होता है और न ही आवश्यक भी है। किंतु, इसे चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए अनुवादक यदि शैली का अनुवाद करता है तो अपने सर्जनात्मक प्रतिभा, रचनात्मक क्षमता कौशल को विवेकपूर्ण इस्तेमाल करते हुए स्रोत भाषा से मिलती–जुलती शैली का प्रयोग करे। किंतु उस यह जरूर ध्यान में रखना होगा कि अनूदित पाठ, लक्ष्य भाषा की प्रकृति से भिन्न न लगे।

4.10 साहित्यिक अनुवाद का महत्व

आज का युग 'अनुवाद का युग' है। वर्तमान युग में अनुवाद की माँग और कार्य–क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इससे विभिन्न भाषाओं के बीच की दूरी कम हो रही है। प्रांतीय भाषाओं में रचित साहित्य को राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय महत्व भी मिल

रहा है। इससे एक भाषा की सामग्री से एकाधिक भाषाओं के पाठक लाभान्वित होते हैं। साहित्यानुवाद का महत्व विभिन्न संदर्भ लिए हुए है। जैसे,

1. किसी भी भाषा की श्रेष्ठ/महान साहित्यिक कृतियों के प्रति विश्व–मानव की जिज्ञासा अन्य भाषा–भाषियों को साहित्यिक अनुवाद करने की प्रेरणा का आधार बनती हैं। साहित्यानुवादक अन्य भाषाओं में उपलब्ध **महान साहित्यिक कृतियों को अपनी भाषा के पाठकों तक पहुँचाना** चाहता है ताकि वे भी उत्तम कृतियों के पठन–वाचन का आनंद ले सकें, उनका आस्वादन कर सकें। इसी कारण शेक्सपियर, टॉलस्टॉय आदि विश्व–विख्यात साहित्यकारों की कृतियाँ विश्व की अनेकानेक भाषाओं में अनूदित हुईं। इसी प्रकार, बंकिम चंद्र चटर्जी, रवींद्रनाथ ठाकुर, कालिदास, वाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास, कबीरदास, प्रेमचंद आदि की रचनाएँ केवल भारतीय भाषाओं में ही नहीं, अपितु अनेकानेक विदेशी भाषाओं में भी अनूदित हुईं। इसी का परिणाम रहा था कि महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुंतलम' को पढ़कर जहाँ जर्मन कवि गेटे चमत्कृत थे वहीं शेलिंग, शॉपेनहावर तथा टी.एस. एलियट भारतीय उपनिषदों से साक्षात् कर पाए। पाश्चात्य रोमांटिक कवियों को 'मेघदूत' के एच.एच. विल्सन द्वारा किए गए 'मेघदूत' के पद्यानुवाद से प्रेरणा मिली।

2. **राष्ट्रीय और भावनात्मक एकता के पल्लवन में साहित्यानुवाद की सार्थक भूमिका** है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक विभिन्न भाषा–भाषियों में व्याप्त अनेकताओं के बीच प्रवाहित एकता की धारा की समझ के विकास में अनुवाद की सर्वाधिक उपादेयता है। साहित्यानुवाद, भारतीय जनमानस में एकता और समानता की उच्च भावना का संचार करता है। भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य की परंपरा इस तथ्य का उद्‌घाटन करती है कि सभी भाषाओं में मूलतः भावात्मक एकता ही है। उत्तर भारत में जहाँ गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' लिखी वहीं तमिल में कंबन, मलयालम में एषुत्तच्छन, बंगाल में कृत्तिवास, असमिया में शंकरदेव, ओड़िया में बलरामदास, मराठी में एकनाथ आदि ने रामकाव्य की रचना की। हिंदी में कबीर, पंजाबी में नानकदेव, मराठी में ज्ञानेश्वर, नामदेव, कश्मीरी में लल्लेश्वरी, सिंधी में सामी और तेलुगु में वेमना ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना का जनमानस को संदेश दिया।

3. अनुवाद, **'भारतीय साहित्य' की एकता के उद्‌घाटन में रचनात्मक भूमिका** निभाता है। 'भारतीय साहित्य' वास्तव में विभिन्न भारतीय भाषाओं में सृजित साहित्य का सामूहिक नाम है। यह हिंदी सहित उन सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य है जो इस देश में बोली और लिखी जाती हैं। इसमें भारत की संस्कृति, समाज और उसकी संवेदना की विविध रूपों में अभिव्यक्ति हुई है। संस्कृति और दर्शन के रूप में व्यापक भारतीय आधार एकसमान है। यह आधार, साहित्यिक चेतना को जोड़ता है। इसलिए अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी भारतीय साहित्य एक ही है। उदाहरण के लिए, रामायण और महाभारत का प्रभाव हिंदी, बांग्ला और मराठी आदि विभिन्न आर्य भाषाओं पर ही नहीं बल्कि तमिल–तेलुगु आदि द्रविड़ भाषाओं पर भी है। हालाँकि प्रत्येक भाषा में रचित साहित्य की अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं, संवेदना के अपने–अपने संदर्भ हैं और अभिव्यक्ति की प्रणालियों में भी भिन्नता के बावजूद भीतर से यह मूलभूत एकता का बिंब प्रस्तुत करता है। इससे जो समग्र चित्र उभरता है वही हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान का द्योतक है। इसीलिए गुरुदेव

रवींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय साहित्य की भावना को अपना समर्थन दिया। इस परिप्रेक्ष्य में 'भारतीय साहित्य परिषद' की स्थापना भी की गई जिसके अध्यक्ष थे – राष्ट्रपिता महात्मा गांधी। साहित्य अकादमी की स्थापना के मूल में भी भारतीय साहित्य की भावना को समर्थन देना निहित था।

भारतीय साहित्य को जोड़ने का महत् कार्य अनुवाद से संभव हुआ है। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य को उनकी भाषा में ही पढ़ना और समझना संभव नहीं है। अनुवाद इसका सार्थक समाधान है। अनुवाद के माध्यम से ही सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की विद्रोही कविताओं को बांग्ला में नजरूल इस्लाम की विद्रोही कविता के धरातल पर समानता में देख सकते हैं।

4. अनुवाद **'विश्व साहित्य' की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान करने का** आधार है। जर्मन कवि गेटे ने जहाँ कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुंतलम' के अनुवाद को पढ़कर 'विश्व साहित्य' (World Literature) की संकल्पना विकसित की वहीं गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इस संकल्पना को अपना समर्थन प्रदान किया। 'विश्व साहित्य' की इस संकल्पना में पूरा विश्व और संपूर्ण साहित्य एक हो जाता है – 'When all literature and world become one'। इसके अनुसार साहित्य सर्वप्रथम मानव और समाज–केंद्रित होता है तथा मानवीय संवेदनाओं–अनुभूतियों से उसका जुड़ाव सबसे अधिक होता है। इसकी सार्वभौमिकता ही विश्व–साहित्य में 'एकता' का संचरण करती है।

   विश्व की विभिन्न भाषाओं में, विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य के आस्वादन में अनुवाद की अप्रतिम भूमिका है। रामायण, महाभारत, गीता, पंचतंत्र, उपनिषदों आदि भारत के अनेक दार्शनिक, धार्मिक और ज्ञान–विज्ञान के साहित्य के विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद ने विश्व साहित्यिक संपदा में श्रीवृद्धि की। भारतीय उपनिषदों से अत्यधिक प्रभावित जर्मन दार्शनिक शॉपेनहावर ने उनका जर्मन में अनुवाद किया। एस. पित्रोव ने श्रीमद् भागवदगीता का और वारान्निकोव ने रामचरितमानस का रूसी अनुवाद किया। टी.एस. एलियट की रचनाओं – विशेष तौर पर 'The Waste Land' पर – उपनिषद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इसी प्रकार, विश्व–साहित्य के साथ भारतीय लेखक–पाठक और अध्येता विलियम शेक्सपियर के नाटकों; कामू, सार्त्र, बैकेट, पाब्लो नेरूदा आदि की रचनाओं से अनुवाद के माध्यम से ही परिचित हुए। यह सिलसिला आज भी जारी है।

5. संस्कृति की समृद्धि में भाषा और साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है। साहित्य वह माध्यम है, जिसके द्वारा सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यताओं और विश्वासों की अभिव्यक्ति होती है, जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा होती है। इसलिए **अनुवाद, संस्कृति के विकास का एक बड़ा माध्यम** है। एक भाषा का साहित्य मौखिक अथवा लिखित – किसी भी रूप में दूसरी भाषा में, दूसरी से तीसरी, चौथी आदि भाषा में स्थान पाता चलता है। साहित्यिक यात्रा का निरंतर चलता यह चक्र, संस्कृति और सभ्यता के विकास एवं प्रसार को गति प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, भारतीय ग्रंथों के अनुवाद से पूर्वी एशिया के चीन, जापान, इंडोनेशिया, श्रीलंका, बर्मा (म्याँमार), थाईलैंड, कंपूचिया, लाओस आदि अनेक देशों में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ। अरबों ने गणितशास्त्र, खगोल विज्ञान और आयुर्वेद से संबंधित भारतीय ग्रंथों के अनुवाद किए। भारत–अरब के इस साहित्यिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान के परिणामस्वरूप समूचे यूरोप में भारतीय गणित का प्रचार हुआ।

इतिहास साक्षी है कि अनूदित साहित्य यूरोप में पुनर्जागरण के लिए प्रेरक सिद्ध हुआ है। जैसे, 'एलिजाबेथन युग' में इतालवी और फ्रांसीसी क्लासिकों के अनुवादों ने यूरोपीय पुनर्जागरण से उन्मुक्त मानवीय चेतना की हलचलों ने ब्रिटिश संवेदना को झकझोर कर रख दिया। वहीं, 18वीं–19वीं शताब्दी के यूरोपीय चेतना के दूसरे पुनर्जागरण में संस्कृत और फारसी से किए गए अनूदित साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही। चार्ल्स विल्किन्स द्वारा किए गए गीता के पद्यानुवाद ने विलियम ब्लेक को और 'मेघदूत' के एच.एच. विल्सन कृत पद्यानुवाद ने अन्य रोमांटिक कवियों को प्रेरणा प्रदान की और यूरोपीय समाज–संस्कृति को समृद्ध किया।

6. अनुवाद, **वैश्विक समाज–संस्कृति से परिचित कराता है।** विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की अपनी–अपनी विपुल सांस्कृतिक संपदा है, उनकी अपनी सांस्कृतिक पहचान है। अन्य देशों–भाषाओं की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक धरोहर की गहनता और व्यापकता का परिचय प्राप्त करना और इसका अध्ययन साहित्यानुवाद से संभव होता है। अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और पूर्वी यूरोप महाद्वीपों के विभिन्न देशों आदि की भिन्न–भिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों के अनुवाद के मूल में देशों–समाजों की संस्कृति से परिचय प्राप्ति का भाव निहित है। चूँकि उन देशों की समस्त भाषाओं को जानने वाले विद्वानों की हमारे देश में कमी है, इसलिए उनकी भाषाओं में रचित साहित्य का प्रायः अनुवाद से पुनःअनुवाद किया जाता है यानी अंग्रेजी अनुवाद से अनुवाद किया जाता है।

   विदेशी समाज–संस्कृति से परिचय प्राप्त करने की दृष्टि से साहित्यानुवाद की सुदीर्घ परंपरा नजर आती है। इस संदर्भ में एशिया में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रसार में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। पश्चिमी देशों के साम्राज्यवादी प्रसार से भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य भी प्रभावित हुआ। आज संचार माध्यमों का प्रसार देशों की दूरियाँ दूर कर रहे हैं, विभिन्न देश अपने ज्ञान–विज्ञान से एक–दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं, और आदान–प्रदान में बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में यह कहना अनुचित न होगा कि साहित्यानुवाद, वैश्विक समाज–संस्कृति से परिचित कराने का संकल्प है।

7. अनुवाद, **साहित्यकार की मनोभूमि से जुड़ने तथा उसके आत्म–विस्तार को स्वर देने का आधार** है। साहित्य मानव–जीवन की, उसके भाव एवं विचार की तार्किक अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। रचनाकार अपनी कल्पना शक्ति और सर्जनात्मकता से अपने भावों को भाषा के जरिए व्यक्त करता है, जिन्हें समझने के लिए अनुवादक को अपनी मनोभूमि के तार, साहित्यकार की मनोभूमि से जोड़ने पड़ते हैं, लेखक के वैचारिक धरातल में गहन रूप से प्रवेश करना पड़ता है। वह इस कार्य को 'परकाया प्रवेश' के आधार पर संपन्न करता है।

8. अनुवाद, **तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित** करता है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा को जानने वाले अन्य भाषा–भाषियों की साहित्यिक उपलब्धियों से परिचित होते हैं। इससे तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होता है। इससे साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान के नवीन आयाम, नए संदर्भ और नई दिशाएँ नियंत्रित होती हैं। वस्तुतः तुलनात्मक अध्ययन की आधारभूत धुरी है – अनुवाद। तुलनात्मक

अध्ययन करके मनुष्य के सीमित ज्ञान का विस्तार होता है। अनुवाद के कारण एक भाषा के साहित्य और साहित्यकार की दूसरी भाषा के साहित्य–साहित्यकार से, एक राष्ट्र के साहित्य की अन्य राष्ट्रों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन की परिकल्पना मूर्त हो पाती है। कबीर और बसवेश्वर का साहित्य, सूरदास और नरसी मेहता की कृष्ण भक्ति आदि कितने ही साहित्यकारों या उनकी साहित्यिक कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुसंधान, साहित्यानुवाद का आश्रय लेकर संभव हुआ है। इसी के कारण भारत और विदेशी साहित्यकारों के तुलनात्मक अध्ययन संभव हो पाए हैं। जैसे, निराला और एजरा पाउंड, कबीर और फ्रांस के रैबले, हिंदी के प्रेमचंद और रूस के मैक्सिम गोर्की, वर्ड्सवर्थ और पंत, अज्ञेय और एलियट का तुलनात्मक अध्ययन आदि। वस्तुतः तुलनात्मक अध्ययन को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने की दृष्टि से साहित्यिक अनुवाद का उल्लेखनीय योगदान है।

9. साहित्यानुवाद का **भाषा के विकास की दृष्टि से भी महत्व** है। अनुवाद के प्रसार से विभिन्न देशों की भाषाएँ अन्य भाषाओं से शब्दावली प्राप्त करती हैं ताकि सार्थक अनुवाद का प्रयोजन सिद्ध हो सके। अनुवाद के प्रयोजन से अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करने के मूल में जहाँ अंगीकरण की प्रवृत्ति झलकती है वहीं अनुकूलन की प्रवृत्ति भी नजर आती है। जैसे, हिंदी में प्रयुक्त होने वाले 'मुआवजा', 'कुर्की', 'जुर्माना' आदि उर्दू शब्द; तथा 'कंप्यूटर', 'स्कूल', 'कॉलेज', 'रेलवे', 'मिनट', 'गैस', 'बोनस', 'चैक' आदि अंग्रेजी के शब्द अंगीकरण के प्रमाण हैं। अंग्रेजी भाषा ने 'maya', 'decoit', 'yoga', 'jungle', 'chutney', 'curry' आदि भारतीय शब्दों को अपनाया है। इसी प्रकार, 'फंतासी', 'रपट', 'अपीलीय', 'गोदाम', 'तकनीक', 'कामदी' और 'रिपोर्ताज' आदि शब्दों का प्रयोग क्रमशः 'fantasy', 'report', 'appellate', 'godown', 'technique', 'comedy' और 'reportage' शब्दों की ध्वनियों में थोड़े–बहुत परिवर्तन करके शब्दों का अनुकूलित रूप में प्रयोग किया जा रहा है। इसके अलावा, 'काला धन', 'स्वर्ण जयंती', 'पाँच तारा', 'श्वेत–पत्र' आदि ऐसे ही कुछेक शब्द हैं जो अंग्रेजी के क्रमशः 'black money', 'golden jubilee', 'five star', 'white paper' शब्दानुवाद के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

साहित्य, और विशेष तौर पर सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा में नए विचार–चिंतन और उसकी शब्दावली भी उभरकर सामने आती है। आज हिंदी आलोचना में 'चेतना प्रवाह', 'अस्तित्ववाद', 'स्वच्छंदतावाद', 'व्यक्तिवाद', 'आधुनिकतावाद', 'आदर्शवाद', 'मानववाद', 'द्वंद्व', 'समस्या नाटक', 'समानुभूति' आदि शब्द अंग्रेजी के क्रमशः 'stream of consciousness', 'Existentialism', 'Romanticism', 'Individualism', 'Modernism', 'Idealism', 'Humanism', 'conflict', 'Problem Play', 'empathy' शब्दों के समतुल्य प्रयुक्त हो रहे हैं।

बोध प्रश्न–3

1. शैली से क्या अभिप्राय है?

....

....

....

....

2. अनुवाद में शैली के संप्रेषण में अनुवादक से क्या अपेक्षित होता है?

....

....

....

....

....

3. भारतीय साहित्य की एकता में अनुवाद की क्या भूमिका है?

....

....

....

....

....

4. भाषा के विकास की दृष्टि से साहित्यानुवाद का क्या महत्व है?

....

....

....

....

....

4.11 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि आज 'साहित्य', 'वाङ्मय' और 'लिटरेचर', तीनों ही शब्द समान अर्थ–संदर्भ में व्यवहार में लाए जाते हैं और इनका संबंध विशेष उद्देश्य से प्रेरित होकर ग्रंथ के रूप में तथा किसी भी विधा (गद्य अथवा पद्य) में शब्दार्थों को व्यक्त करती लिखित सामग्री से है। साहित्य को ज्ञानात्मक और सर्जनात्मक साहित्य के रूप में देखा जाता है। वैसे, आम तौर पर जब साहित्य शब्द का इस्तेमाल किया जाता है तो उसे विभिन्न विधाओं में रचे जाने वाले 'सर्जनात्मक साहित्य' से ही जोड़कर देखा जाता है। जितनी विधाओं में साहित्य सृजन किया जाता है, उतनी ही विधाएँ 'साहित्यानुवाद' की बन जाती हैं।

'सर्जनात्मक साहित्य' और 'ज्ञानात्मक साहित्य' का मानव–जीवन के सर्वांगीण विकास में उल्लेखनीय स्थान है। मनुष्य को बेहतर बनाने में विशिष्ट भूमिका निभाने के कारण इन दोनों प्रकार के साहित्य में कुछ समानताएँ नजर आती हैं, वहीं इनका मूल स्वरूप एवं ज्ञान–शाखा की भिन्नता से अनुवाद की प्रक्रिया और उसके प्रति दृष्टिकोण में अंतर है। इस कारण, इनके अनुवाद की जरूरतों में भी अंतर आ जाता है। ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद की तुलना में सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद ज्यादा कठिन होता है और सर्जनात्मक साहित्य की विभिन्न विधाओं की तुलना में काव्यानुवाद का अनुवाद अत्यंत कठिन एवं दुःसाध्य है। किंतु बुनियादी समानताएँ–अंतर के बावजूद, मानव के बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए इन दोनों प्रकार के साहित्य की आवश्यकता–पूर्ति का माध्यम बनता है – अनुवादक।

जहाँ तक सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद का प्रश्न है, यह संभव तो है और किया भी जाता है। इसे संपन्न करने वाले व्यक्ति से सर्जनात्मक प्रतिभा और कौशल की

अपेक्षा रहती है। इसलिए अनुवादक का भाषा के प्रति, लेखक (कवि, नाटककार एवं कथाकार) की भाँति संवेदनशील होना जरूरी है और उसे उसी की तरह सर्जनात्मक रचना प्रक्रिया से गुजर कर अनुवाद कर्म करना होता है। अपने प्रतिभा–कौशल के बल पर ही वह सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश, मूल कृति के अर्थगत (भावगत) एवं शैलीगत सौंदर्य को समतुल्य पुनर्सृजित कर पाने योग्य हो पाता है। वह उसे इस प्रकार पुनर्सृजित करता है कि मूल की पहचान बनी रहे, मूल का भावगत एवं शैलीपरक सौंदर्य यथासंभव नष्ट न हो और अनूदित पाठ मूल पर अनुवाद भारी न पड़े। इसलिए साहित्यानुवाद को 'सर्जनात्मक कार्य' माना जाता है। वैसे, साहित्यानुवाद में अर्थ (भाव) और शैली में से अर्थ की प्रधानता को ही स्वीकार किया जाता है।

कोई भी भाषा–समाज साहित्यानुवाद के महत्व को अस्वीकार नहीं कर सकता। साहित्य के अध्ययन की मानव–अभिरुचि के साथ–साथ अन्य भाषाओं के साहित्य के प्रति जिज्ञासा के भाव आदि विभिन्न कारणों से साहित्यानुवाद की संभावनाएँ बनी रहती हैं। भिन्न भाषाओं में रचित साहित्य के आदान–प्रदान से मानव, समाज और संस्कृति के विकास में साहित्यानुवाद ने अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। भाषा–संस्कृति आदि के धरातल पर भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण देश में साहित्यानुवाद, राष्ट्रीय एकता के सूत्रों को मजबूत करने और भारतीय साहित्य की एकात्मकता को सुदृढ़ करने के साथ–साथ सामासिक संस्कृति के अवगाहन में कारगर सिद्ध होता है। विश्व के किसी भी देश के उत्कृष्ट साहित्य का हम अनुवाद के जरिए आस्वादन कर सकते हैं। सर्जनात्मक प्रेरणा के कारण साहित्यानुवाद प्राचीनकाल से होते चले आ रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। विश्व की असंख्य भाषाओं–बोलियों में वैचारिक और सर्जनात्मक स्तर पर समन्वय भाव स्थापित करने में साहित्यानुवाद अपरिहार्य भी है। यह आज के समय की जरूरत है और भविष्य का सहज–स्वाभाविक विकास उपकरण। इसी अपरिहार्यता ने साहित्यानुवादक के महत्व को भी प्रतिष्ठित किया है।

'साहित्यानुवाद' के विभिन्न आयामों का परिचय प्राप्त करने के बाद साहित्य की गद्य–पद्य आदि विभिन्न विधाओं के संदर्भ में अनुवाद के विविध आयामों पर हम अगली इकाइयों में चर्चा करेंगे।

4.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग, डॉ. नगेंद्र (संपा.), हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1993।

अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, एवं डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1985।

अनुवाद विज्ञान की भूमिका, प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।

अनुवाद : प्रक्रिया एवं परिदृश्य, डॉ. रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।

अनुवाद–साधना, डॉ. पूरनचंद टंडन, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली, 1998।

अनुवाद के विविध आयाम, डॉ. पूरनचंद टंडन एवं डॉ. हरीश कुमार सेठी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998।

अनुवादशास्त्र : व्यवहार से सिद्धांत की ओर, प्रो. हेमचन्द्र पाँडे, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।

अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, डॉ. कुसुम अग्रवाल, साहित्य सहकार, दिल्ली, 1999।

अनुवाद शतक (भाग 1 और 2), संपा. नीता गुप्ता एवं अन्य, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, 2001।

अनुवाद : अवधारणा और आयाम, डॉ. सुरेश सिंहल, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006।

अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य, प्रो. दिलीप सिंह एवं प्रो. ऋषभदेव शर्मा (संपा.), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, 2009।

सर्जनात्मक साहित्य और अनुवाद, संपा. डॉ. सुरेश सिंहल और अन्य, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, 2001।

4.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. भाग 4.2 देखिए।
2. भाग 4.2 देखिए।
3. भाग 4.3 देखिए।
4. भाग 4.4 देखिए।
5. भाग 4.4 देखिए।

बोध प्रश्न–2

1. भाग 4.6 देखिए।
2. भाग 4.7.1 देखिए।
3. भाग 4.7.2 देखिए।
4. भाग 4.8 देखिए।

बोध प्रश्न–3

1. भाग 4.9 देखिए।
2. भाग 4.9 देखिए।
3. भाग 4.10 देखिए।
4. भाग 4.10 देखिए।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 5 : गद्य साहित्य का अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 गद्य साहित्य से तात्पर्य

5.2.1 हिंदी गद्य के उद्भव एवं विकास के कारण

5.3 गद्य साहित्य की मुख्य विधाएं

5.3.1 गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं का विकास

5.4 गद्य साहित्य का अनुवाद

5.5 गद्य साहित्य की विशेषताएं एवं उसके अनुवाद की चुनौतियां

5.5.1 गद्य साहित्य की विशेषताएं

5.5.2 गद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियां

5.6 सारांश

5.7 बोध प्रश्न

5.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह जान पाएंगे कि :

- गद्य साहित्य से क्या अभिप्राय है।
- गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएं कौन–कौन सी हैं।
- गद्य साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता और महत्व क्या है।
- गद्य साहित्य के अनुवाद की विभिन्न चुनौतियां कौन–कौन सी हैं।

5.1 प्रस्तावना

आप पिछली की इकाई 'साहित्यानुवाद : एक परिचय' में यह विस्तार से पढ़कर चुके हैं कि साहित्य और साहित्यानुवाद से क्या अभिप्राय है। पिछली इकाई में आपने यह भी जाना होगा कि साहित्य और ज्ञानात्मक साहित्य में क्या मूलभूत अंतर हैं और दोनों के अनुवाद में अनुवादक को किन विशेष बातों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत इकाई में आगे बढ़ते हुए हम यहां गद्य साहित्य के अनुवाद के विषय में विस्तार से पढ़ेंगे।

गद्य साहित्य के अनुवाद के विषय में पढ़ते हुए हम उससे जुड़े अन्य आयामों, जैसे– गद्य साहित्य की अवधारणा, गद्य साहित्य की विभिन्न विधाएं, उनकी उपयोगिता,

उनके अनुवाद की चुनौतियां और अनुवादक से अपेक्षाओं आदि की भी चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप गद्य साहित्य और उसके अनुवाद की विस्तृत अवधारणा से पूर्णतः अवगत हो सकेंगे।

5.2 गद्य साहित्य से तात्पर्य

क्या आपने कभी उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा आदि पढ़े हैं? क्या आप जानते हैं कि समग्र रूप में इसे क्या कहते हैं? समग्र रूप में इसे गद्य साहित्य कहते हैं।

अब आप समझ ही गए होंगे कि गद्य साहित्य से तात्पर्य ऐसे साहित्य से है जिसे भाषा के व्याकरण के नियमों के अनुसार लिखा जाता है, उसे गद्य कहते हैं।

एक उदाहरण से इस बात को स्पष्ट करते हैं। आपने सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, मीरा, रसखान आदि को पढ़ा होगा। आधुनिककाल की बात करें तो आपने निराला, पंत, महादेवी वर्मा, प्रसाद आदि को अवश्य पढ़ा होगा। ये सभी हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि हैं। इन कवियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए काव्य को माध्यम बनाया। कविता अर्थात काव्य की सर्जना पद्य में होती है। स्पष्ट है कि भावाभिव्यक्ति से परिपूर्ण पद्य साहित्य गेय होता है जिसकी एक विशेष लय तथा छंद होता है। वहीं गद्य साहित्य विचारों के निरूपण का सशक्त माध्यम है।

प्राचीन समय में छापेखाने अथवा मुद्रण की व्यवस्था नहीं होने के कारण मौखिक साहित्य की परंपरा अधिक प्रबल थी जहां साहित्य को याद रखने में गेयता का महत्व बहुत अधिक था। आधुनिक समय में मुद्रण व्यवस्था का प्रादुर्भाव होते ही गद्य साहित्य की मांग में वृद्धि हुई। विज्ञान के प्रसार और नितप्रति होने वाले नए अनुभवों को व्यक्त करने के लिए पद्य उपयुक्त नहीं था। इसी कारण गद्य की मांग बढ़ने लगी।

गद्य साहित्य को मूलतः दो भागों में बांटकर देखा जा सकता है –सर्जनात्मक साहित्य और ज्ञानात्मक साहित्य।

सर्जनात्मक साहित्य से तात्पर्य मानवीय संवेदनाओं से निर्मित वह साहित्य है जिसमें संवेदना, भाषा की लाक्षणिकता, कथातत्व आदि की प्रमुखता होती है। वहीं ज्ञानात्मक साहित्य ज्ञान की विभिन्न शाखाओं पर आधारित है जिसका प्रथम उद्देश्य सीधी–सपाट भाषा में ज्ञान प्रदान करना है। भाषा की अभिधात्मकता सर्जनात्मक साहित्य का गुण नहीं है और तथ्यप्रधानता इसका प्राणतत्व।

चूंकि हमारी चर्चा के केंद्र में यहां सर्जनात्मक साहित्य है इसलिए हम आगे बढ़ते हुए उसी पर विस्तार से चर्चा करेंगे। सर्जनात्मक साहित्य को मूलतः दो भागों में बांटकर देखा जाता है –कथा साहित्य; तथा कथेतर साहित्य।

कथा साहित्य के अंतर्गत कहानी तथा उपन्यास जैसी कथा आधारित विधाएं सम्मिलित हैं जबकि कथेतर साहित्य में कथा से इतर गद्य विधाओं को शामिल किया जाता है। जैसे, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, जीवनी, आत्मकथा आदि। इन विधाओं में इस स्थूल अंतर के बावजूद ये सभी विधाएं साहित्यिक विधाओं के अंतर्गत ही आती है। चूंकि इन सभी विधाओं का मूलतत्व सर्जनात्मकता ही है और ये सभी विधाएं तथ्यों के साथ–साथ मानवीय संवेदनाओं को बहुत अधिक महत्व देती हैं इसलिए इन सभी विधाओं को ज्ञानात्मक साहित्य से अलग रखकर देखा गया है। इसी क्रम में चर्चा को आगे बढ़ाते हुए यहां गद्य की सभी विधाओं पर समग्रता से बात की जाएगी।

5.2.1 हिंदी गद्य के उद्‌भव एवं विकास के कारण

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के साथ ही कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। सबसे उल्लेखनीय परिवर्तनों में थे – विज्ञान की शिक्षा और मुद्रण का प्रादुर्भाव। गद्य के विकास, मुद्रण और ईसाई मिशनरियों द्वारा किए जा रहे धर्म के प्रचार को एक क्रम में रखकर देखा जा सकता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के समय ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म का खूब प्रचार किया। इस प्रचार कार्य में छापेखानों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसी क्रम में बाइबिल का हिंदी गद्यानुवाद प्रकाशित हुआ जिसे छापेखाने की मदद से न केवल बड़ी मात्रा में छापा गया अपितु व्यापक स्तर पर बांटा भी गया। हिंदी गद्य के विकास में इसकी भूमिका को विशेष रूप से आंका जाता है।

साथ ही, लॉर्ड मैकाले की नीति के अनुसार भारत में शिक्षा के प्रसार के लिए अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को मान्यता दी गई। प्राक् ब्रिटिश काल में शिक्षा–दीक्षा आदि के लिए पद्य साहित्य का ही प्रयोग होता था। लेकिन तत्कालीन नई शिक्षा नीति के तहत पद्य में शिक्षा देना संभव नहीं था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए खड़ी बोली को गद्य की भाषा बनाया गया।

ब्रिटिश सरकार के प्रयासों और तत्कालीन नई शिक्षा नीति को लागू करने के उद्‌देश्य से विभिन्न कॉलेजों की स्थापना की गई जिनमें प्रचुर मात्रा में भाषा शिक्षण की व्यवस्था की गई। फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना और जॉन गिलक्राइस्ट द्वारा हिंदी और उर्दू में पुस्तकें लिखवाने और प्रचारित करने के प्रयासों को इस क्रम में देखा जा सकता है।

इसके पश्चात राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद, राजा लक्ष्मण सिंह, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग आदि द्वारा किए गए प्रयास यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जिनके तहत हिंदी के विकास, मानकीकरण और प्रचार–प्रसार की दिशा में अनेक प्रयास किए गए। भारतेंदु और भारतेंदु युगीन अन्य लेखकों ने हिंदी में निबंध लिखकर एवं विदेशी साहित्य से प्रचुर मात्रा में अनुवाद कार्य करके हिंदी के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा द्विवेदी युग में खड़ी बोली के मानकीकरण की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए गए। (यहां इस विषय में केवल संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है क्योंकि इसके विषय में आप विस्तार से अन्य पाठ्यक्रमों में पढ़ चुके हैं।)

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि आधुनिक काल में गद्य के विकास को लेकर अनेक प्रयास किए गए जिनमें तत्कालीन नई शिक्षा नीति, ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म के प्रचार–प्रसार, मुद्रण के प्रादुर्भाव, और प्रचुर मात्रा में हुए अनुवाद कार्य की महत्वपूर्ण भूमिका है।

5.3 गद्य साहित्य की मुख्य विधाएं

जैसा कि हम भाग 5.2 में चर्चा कर चुके हैं कि आधुनिक काल में प्रचुर मात्रा में विदेशी साहित्य का अनुवाद हुआ। प्रचुर मात्रा में हुए इस अनुवाद कार्य का प्रमुख उद्‌देश्य खड़ी बोली की स्थापना एवं कालांतर में मानकीकरण था। भारतेंदु युग को अनुवाद की दृष्टि से विशेष रूप से जाना जाता है।

भारतेंदु न केवल रचनाकार थे अपितु उन्होंने प्रचुर मात्रा में अनुवाद कार्य किया, तथा कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र चंद्रिका जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी किया। उनके प्रमुख अनुवादों में हैं – विद्यासुंदर, मुद्राराक्षस, कर्पूर मंजरी, दुर्लभ बंधु आदि। इन्हीं

पत्रिकाओं के प्रकाशन से अनेक लेखकों ने खड़ी बोली गद्य में हाथ आज़माया। अनुवाद के माध्यम से हिंदी में नई गद्य विधाओं का प्रादुर्भाव हुआ।

इसी क्रम में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका को याद किया जा सकता है। अपनी पत्रिका सरस्वती के माध्यम से आचार्य द्विवेदी ने हिंदी गद्य की सभी विधाओं में लेखन को प्रोत्साहित किया। साहित्य के साथ–साथ साहित्येतर विषयों में भी लेखन करवाकर द्विवेदी ने यह साबित किया कि खड़ी बोली सभी प्रकार के ज्ञान को अभिव्यक्त करने के लिए एक सशक्त भाषा है। हिंदी भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया में द्विवेदी जी की भूमिका अविस्मरणीय है।

5.3.1 गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं का विकास

आधुनिक साहित्य के दो मूलभूत तत्व रहे, गद्य की शुरुआत तथा साहित्य में नए विषयों का प्रवेश। आधुनिक काल भारतीय परिदृश्य में सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक बदलावों का समय था। समाज में जो सुधारवादी कार्य हुए, वे आगे चलकर साहित्य में भी परिलक्षित होने लगे। तत्कालीन लिखे अथवा अनूदित अधिकांश साहित्य के केन्द्र में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार ही थे। राजा राममोहन राय ने भारतीयों को उनकी गौरवपूर्ण परम्परा से परिचित करवाने के लिए उपनिषदों का अनुवाद किया। रामायण, महाभारत और श्रीमदभागवद् के आधुनिक काल में भी कई अनुवाद हुए। संस्कृत के नाटकों–विक्रमोर्वशीयम, मृच्छकटिकम आदि का अनुवाद हुआ।

गद्य की शुरुआत तथा प्रेस के आगमन से भरपूर अनुवाद हुए तथा विदेशी साहित्य भारत में आने लगा। भारतीय स्वयं नई गद्य विधाओं की तलाश कर रहे थे। उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि विधाएं विदेशी अनुकरण पर आधारित थीं, जबकि निबन्ध जैसी नई विधा का जन्म तत्कालीन भारतीय पत्रकारिता ही देन है। भारतेंदु के निबन्ध इसके उदाहरण हैं। नाटक और कविता – ये दो विधाएं भारतीय साहित्य में पहले से मौजूद थीं। लेकिन विदेशी साहित्य के अध्ययन ने इनके स्वरूप में परिवर्तन किया।

नाटक– भारत में नाटक की एक समृद्ध परम्परा संस्कृत काल में रही लेकिन मुगलों द्वारा नाट्य साहित्य को अधिक प्रश्रय न देने के कारण मध्यकाल में यह विधा विकसित न हो सकी। यद्यपि लोक साहित्य में नाटक की कई नई लोक विधाएं जन्मती रहीं जैसे– असम में अंकिया नाटक, मिथिला में कीर्तनिया नाटक, बंगाल का जात्रा, उत्तर प्रदेश में नौंटकी, गुजरात का भवई, तमिलनाडु का तिरबट्टू आदि।

आधुनिक काल में मूलतः संस्कृत काल के नाटकों पर ही विचार किया गया। आधुनिक थियेटर भारत की शास्त्रीय नाट्य परम्परा तथा पश्चिमी ग्रीक परम्परा का मिश्रण था। नाटक में त्रासदी का उदय हुआ। बांग्ला के प्रथम दो नाटक कीर्ति विलास तथा भद्रजन इसी परम्परागत भारतीय तथा पश्चिमी नाट्य विधा के मिश्रण थे। किंतु आधुनिक युग में अंग्रेजी, बांग्ला और संस्कृत से प्रचुर मात्रा में नाटकों के अनुवाद किए गए। नाटकों पर फारसी थियेटर का भी प्रभाव पड़ा। लेकिन फारसी थियेटर के नाटक साहित्यिक दृष्टि से सराहे नहीं गए। प्रसाद तथा कालांतर में मोहन राकेश के नाटकों ने हिंदी नाटकों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

जीवनी, आत्मकथा तथा यात्रा वृत्तांत के कई उदाहरण यहां देखने को मिलते हैं। अन्य भाषाओं की तुलना में बांग्ला, मराठी तथा उर्दू में इन विधाओं की शुरुआत पहले हुई, लेकिन धीरे–धीरे सभी भाषाओं में विभिन्न गद्य विधाओं में साहित्य लिखा जाने लगा।

हिंदी निबंध–हिंदी में निबंध लेखन की एक सुदीर्घ परंपरा देखी गई है। भारतेंदु युग में स्वयं भारतेंदु, बालमुकुंद गुप्त, बालकृष्ण भट्ट आदि राष्ट्र–समाज के हित में महत्वपूर्ण निबंध लिख रहे थे वहीं द्विवेदी युग में स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरदार पूर्ण सिंह, बाबू गुलाब राय तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध साहित्यिक तथा सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं।

उपन्यास– सबसे सशक्त और महत्वपूर्ण गद्य विधा के रूप में यदि कोई विधा प्रचलित हुई, तो वह उपन्यास है। अंग्रेजी के नॉवल के अनुवाद उपन्यास को बांग्ला भाषा में कादम्बरी भी कहा जाता है। लेकिन उपन्यास के रूप में ही यह अधिक चर्चित हुआ।

उपन्यास का विकास–प्रारंभिक दौर में नाटक एक बेहद चर्चित विधा के रूप में विकसित हुआ। लेकिन धीरे–धीरे एक अन्य गद्य विधा पाठकों के बीच चर्चित हुई और वह थी – उपन्यास। और 1885 तक आते–आते उपन्यास ने सबसे अधिक प्रसिद्धि हासिल की।

1858 में टेकचंद ठाकुर का पहला बांग्ला उपन्यास 'अलालेर घरेर दुलाल' प्रकाशित हुआ। यहीं से उपन्यास की शुरुआत हुई। हालांकि यह उपदेश प्रधान उपन्यास है। किन्तु आलोचकों/समीक्षकों ने इसकी भाषा, शैली और प्रस्तुति के कारण विस्तृत चर्चा की। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसका गद्य संस्कृत से लगभग मुक्त था तथा लेखक ने चरित्र गढ़ने में देशज शब्दों, बोली आदि का सुंदर प्रयोग किया। इसी के आसपास मराठी में समकालीन समस्या पर आधारित उपन्यास 'यमुना प्रयत्न' प्रकाशित हुआ। 1861 में लक्ष्मण मोरेश्वर हाल्बे का उपन्यास मुक्तमाला प्रकाशित हुआ, जो अपने पूर्व के उपन्यास से कथा एवं शिल्प दोनों दृष्टियों से भिन्न था। उपन्यास का विषय उपदेशात्मक होने के साथ–साथ कल्पनात्मक स्पर्श लिए हुए था। उपन्यास की भाषा संस्कृतनिष्ठ मराठी थी।

यद्यपि इस समय कई उपन्यास लिखे जा रहे थे, किन्तु बंकिम चंद चटर्जी भारत में उपन्यास विधा के जनक के रूप में उदित हुए। उनके उपन्यास हालांकि अधिक रोमांटिक, उपदेश प्रधान और विदेशी उपन्यासों से प्रभावित थे, किन्तु बंकिम चंद चटर्जी को ही भारत में उपन्यास विधा को स्थापित करने का श्रेय जाता है।

वास्तव में नई गद्य विधाओं में उपन्यास ही एक ऐसी विधा थी, जिसमें पूरे जीवन का चित्रण हो सका। उपन्यास के बड़े कलेवर में ही कहानी, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, रेखाचित्र जैसी अन्य विधाएं सम्मिलित हो जाती थीं। इसके बाद अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपन्यास लिखे गए।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद को उपन्यास का जनक माना जाता है। प्रेमचंद के सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों ने हिंदी उपन्यास विधा को समृद्ध किया।

कहानी–कहानी की दिशा में भी अनेक प्रयास हो रहे थे। लेकिन कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद को मील का पत्थर माना जाता है। प्रेमचंद से पहले इंशा अल्लाह खां की कहानी रानी केतकी की कहानी को हिंदी की प्रथम कहानी का दर्जा तो प्राप्त है लेकिन कहानी की सही शुरुआत प्रेमचंद से मानी जाती है। प्रेमचंद को कहानी का सम्राट माना जाता है। प्रेमचंद के बाद प्रसाद, जैनेंद्र, चंद्रधर शर्मा गुलेरी आदि को हिंदी कहानी में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

इनके अतिरिक्त रेखाचित्र आदि गद्य विधाएं भी इसी युग की देन हैं जिनमें गद्य अपने पूरे निखार के साथ स्थापित हुआ।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

5.4 गद्य साहित्य का अनुवाद

भाग 5.3 में हमने जाना कि गद्य साहित्य किसे कहते हैं तथा भारत में गद्य साहित्य की शुरुआत कब से हुई। मध्यकाल में ब्रजभाषा और खड़ी बोली में लिखे गद्य के उदाहरण मिलते हैं किंतु उस दौर में गद्य का व्यापक प्रचार–प्रसार तथा प्रयोग नहीं होने के कारण गद्य प्रचलित नहीं हो पाया। लेकिन आधुनिक काल की शुरुआत और ब्रिटिश सरकार के आधिपत्य के साथ ही तत्कालीन नई शिक्षा नीति तथा शिक्षा में ज्ञान–विज्ञान के प्रवेश के साथ न केवल गद्य लेखन शुरू हुआ अपितु प्रचुर मात्रा में अनुवाद भी हुए। हम यह चर्चा कर चुके हैं कि आधुनिककाल और साहित्य की सभी गद्य विधाओं की शुरुआत के पीछे अनुवाद की महती भूमिका है।

साहित्य की नई गद्य–विधाओं के प्रादुर्भाव के पीछे अनुवाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। ईसप के फेबल्स, बनयन का द पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद तथा रूपातंरण हुआ। फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा 1803 में प्रकाशित 'द ओरियंटल फेबलिस्ट' ईसप के फेबल्स का ही बांग्ला, हिंदी तथा उर्दू अनुवाद है। मराठी का बाल बोध मुक्तावली (1806) तथा बंगाली नीति कथा (1818) ईसप के फेबल्स का रूपातंरण है।

इस समय में एक महत्वपूर्ण कार्य हुआ विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य का परस्पर अनुवाद। 1815 से 1819 के बीच राजा राममोहन राय ने वेदान्त ग्रंथ तथा पांच उपनिषदों का अनुवाद किया जिसका उद्देश्य तत्कालीन समाज को प्राचीन हिंदू धर्म से परिचित करवाना और समाज सुधार की पृष्ठभूमि तैयार करना था। इसके अतिरिक्त संस्कृत तथा फारसी से विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रचुर अनुवाद कार्य हुआ, जिसका विवरण आगे दिया जाएगा।

अंग्रेजी तथा फ्रेंच की रचनाओं का बांग्ला आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ। डेनियल डेफो के रॉबिन्सन क्रूसो का प्रचुर अनुवाद हुआ। श्यामचरण दास ने 'द फेयर पेनिटेंट' का बांग्ला में अनुतापिनी नभ कामिनी (1856) शीर्षक से अनुवाद किया। फ्रेंच रचना पॉल एट वर्जीनिया का अंग्रेजी के माध्यम से बांग्ला में पाल ओ वर्जीनिया इतिहास शीर्षक से अनुवाद हुआ। शेक्सपीयर और मिल्टन अनुवाद एवं रूपातंरण के माध्यम से भारत में अंगेजी के सर्वप्रिय लेखकों में शुमार किए। शेक्सपीयर के नाटकों के लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद एवं रूपांतरण हुए। हरचंद्र घोष द्वारा मर्चेंट ऑफ वेनिस का भानुमति चित्त विलास (1853) शीर्षक से किया बांग्ला अनुवाद संभवतः पहला भारतीय अनुवाद था। इसी तरह मिल्टन का साहित्य भी अनुवाद के माध्यम से शिक्षित भारतीयों के लिए नया नहीं रह गया था।

अनुवाद के माध्यम ने ही भारत में आधुनिक साहित्य की नींव रखी। गद्य विधा की शुरुआत हुई। ईसाई मिशनरियों द्वारा करवाए गए अनुवाद तथा फोर्ट विलियम कॉलेज में हो रहे अनुवाद व आधुनिक शिक्षा की शुरुआत ने महसूस किया कि अब साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए पद्य काफी नहीं। धीरे–धीरे बहुत से धार्मिक ग्रंथों का गद्यानुवाद हुआ। पाठ्यपुस्तकें गद्य विद्या में लिखी जाती थीं। गद्य के प्रमाण भारत में बहुत पूर्व से मिलने लगते है। अमीर खुसरो के यहां गद्य के नमूने देखे जा सकते है। लेकिन प्रामाणिक रूप से गद्य आधुनिक काल की देन है। राजा राममोहन राय ने वेदान्त और उपनिषदों के अनुवाद में बांग्ला गद्य का परिचय दिया, लेकिन वह गद्य बेहद संस्कृतनिष्ठ है।

भारत में गद्य की ठोस शुरुआत भी मूलतः विदेशी साहित्य के माध्यम से ही होती है। समाचार पत्रों–पत्रिकाओं का प्रकाशन, पाठ्य–पुस्तकें, अनुवाद आदि गद्य के माध्यम से हुए और होते–होते यह विधा आगे इतनी फली–फूली कि भारतीय साहित्य की पूरी तस्वीर ही बदल गई।

उपन्यास एवं उनके अनुवाद

बांग्ला उपन्यासकार विभूतिभूषण बंधोपाध्याय के उपन्यास पाथेर पांचाली (1929) का अंग्रेजी अनुवाद टी. डब्ल्यू क्लार्क एवं तारापद मुखर्जी ने पाथेर पांचाली : सॉंग ऑफ द रोड के नाम से किया। इससे पूर्व सत्यजीत रे ने इसी नाम से 1955 में फिल्म बनाई, जिसने अपार लोकप्रियता हासिल की। हिंदी के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के उपन्यास गोदान का अंग्रेजी अनुवाद हिंदी के ही एक अन्य बड़े रचनाकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय ने किया। गोदान का एक अंग्रेजी अनुवाद गोर्डन सी. रोडरमल ने द गिफ्ट ऑफ अ काव के नाम से अंग्रेजी में किया। अज्ञेय ने अपने अंग्रेजी अनुवाद में गोदान की कथा के केवल उस भाग को लिया जो गांव तक सीमित था। वस्तुतः यदि देखा जाए तो लगभग सभी अनुवादकों ने अपने अनुवादों में स्वायत्तता बरती और पूरे उपन्यास के अनुवाद के स्थान पर उसमें कुछ परिवर्तन किए। मलायलम उपन्यासकार तकषि शिवशंकर पिल्लै के कालजयी उपन्यास चेम्मीन (1956) का अंग्रेजी अनुवाद करते समय अनुवादक वी. के. नारायणन मेनन ने उसके एक–चौथाई भाग को ही कथा रूप में ही लिया। इसी तरह हिंदी के एक बेहद चर्चित एवं स्वतंत्र भारत की राजनीतिक समस्याओं पर लिखे आंचलिक उपन्यास 'राग दरबारी' के अंग्रेजी अनुवाद में भी इसी तरह की छेड़छाड़ की गई। चेम्मीन के डोगरी सहित कई अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुए।

वर्तमान समय में आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए कई संस्थाएं काम कर रही हैं जिनमें से प्रमुख हैं – साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारतीय ज्ञानपीठ आदि। इन संस्थाओं ने प्रचुर मात्रा में भारतीय कालजयी साहित्य की न केवल पहचान की है अपितु उनका विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी करवाया है।

यहां कुछ अनुवादों की सूची दी जा रही है जो मूल भारतीय भाषाओं से हिंदी में किए गए हैं –

पुस्तक	लेखक/संपादक	अनुवादक	मूल भाषा
आकाश	भवेन सैकिया	नवारुण वर्मा	असमिया
आजादी की छांव में	बेगम अनीस किदवई	नूर नबी अब्बासी	उर्दू
अलीक मानव	सैयद मुस्तफा सिराज	मनमोहन ठाकौर	बांग्ला
आदमी और जंगल	उमाकांत शर्मा	सत्यदेव प्रसाद	असमिया
उसने जंगल को जीता	केसव रेड्डी	जे.एल.रेड्डी	तेलुगु
एक घेरे से बाहर	समुत्तिरम	विजयलक्ष्मी सुंदरराजन	तमिल
देशकालपात्र	जे.पी. दास	राजेन्द्र प्रसाद मिश्र	ओड़िया
दवा	पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला	एन.ई. विश्वनाथ अय्यर	मलयालम
किस पहि खोलूं गठरी	कर्तार सिंह दुग्गल	फूलचंद मानव	पंजाबी
नामघरैया	अतुलानन्द गोस्वामी	सत्यदेव प्रसाद	असमिया

पगडंडियां	सी. राधाकृष्णन	विनीता डोगरा	मलयालम
धरती की हंसी	लूमर डाइ	सत्यदेव प्रसाद	असमिया
धान	पी. वत्सला	राकेश कालिया	मलयालम
शहतूतों वाला कुआँ (तूतां वालां खू)	सोहन सिंह सीतल	सुदीप	पंजाबी
देश की बात	सखाराम गणेश देउस्कर	बाबूराव विष्णु पराड़कर	बांग्ला

आधुनिक काल में आधुनिक भारतीय भाषाओं में लिखे साहित्य का परस्पर अनुवाद प्रचुर मात्रा में हुआ। अंग्रेजी में रूपा तथा पेंगुइन पब्लिशर्स ने ऐसी कई रचनाओं के अंग्रेजी में अनुवाद करवाए। अंग्रेजी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में हुए अनुवादों का संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है –

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गोरा के लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए। आशापूर्णा देवी के *प्रथम प्रतिश्रुति* का अंग्रेजी अनुवाद इंदिरा चौधुरी ने किया। बाल विवाह और बालवधू के जीवन के संघर्ष पर लिखा यह उपन्यास बांग्ला साहित्य में बेहद महत्व रखता है। इसी तरह लक्ष्मी हाल्मस्ट्रॉम ने तमिल दलित लेखिका बामा के बेहद चर्चित दो उपन्यासों –*करक्कु* और *संगति* का अनुवाद किया।

भारत के विभाजन और उसकी त्रासदी पर लिखा भीष्म साहनी का उपन्यास *तमस* भी विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से काफी सराहा गया। तमस का असमिया अनुवाद तीर्थ फूकन ने, कश्मीरी में रफ़ीक मसूदी ने, मैथिली में अमरेश पाठक ने, सिन्धी में कृष्ण राही ने, तेलुगु में वाई. लक्ष्मीप्रसाद ने और मराठी में चंद्रकात पाटील ने किया। हिंदी उपन्यासकार अमृतलाल नागर के उपन्यास अमृत और विष का तेलुगु अनुवाद पी, आदेश्वर राव और उर्दू अनुवाद प्रकाश फिक्री ने किया। पंजाबी उपन्यास गुरदयाल सिंह के अध चानणी रात का तेलुगु अनुवाद वेमराजु भानुमूर्ति ने सगम वेननेला रात्रि शीर्षक से किया। बांग्ला उपन्यासकार बिभूतिभूषण उपाध्याय का उपन्यास पाथेर पांचाली द *सॉग ऑफ* द *रोड* के नाम से अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ जिसका अनुवाद टी.डब्ल्यू क्लार्क ने किया। इसी तरह *अपराजितो* का अनुवाद तारापद मुखर्जी ने किया। सत्यजित रे की *पाथेर पांचाली* को सिने दर्शकों ने खूब सराहा। 1930 में गोपीनाथ मोहंती कृत ओड़िया उपन्यास परजा का अंग्रेजी अनुवाद बिक्रम के. दास ने किया। दलित जीवन और उसके दंश पर लिखा यह उपन्यास निश्चित ही कालजयी रचना है। यशपाल का भारत विभाजन पर लिखा उपन्यास *झूठा सच* का अंग्रेजी अनुवाद दिस इज नॉ दैट डॉन शीर्षक से आनंद ने किया। राग दरबारी का अंग्रेजी अनुवाद जिलियन राइट ने किया। कमलेश्वर के हिंदी उपन्यास कितने पाकिस्तान का अंग्रेजी अनुवाद अमीना काज़ी अंसारी ने पार्टिशियन के नाम से किया। भारत–पाक विभाजन पर आधारित यह उपन्यास हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर है। कृष्णा सोबती का मित्रो मरजानी स्त्री विमर्श पर लिखा एक महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें स्त्री को उसकी दैहिक शुचिता से ऊपर उठकर दिखाया गया है जिसका अनुवाद गीता राजन और राजी नरसिम्हम ने टू हैल विद यू मित्रो के नाम से किया है और ऐ लड़की का अंग्रेजी अनुवाद लिसन गर्ल शीर्षक से हुआ। मराठी लेखिका किरण नागरकर का उपन्यास सात सक्कम त्रेचलीस का अंग्रेजी अनुवाद सेवन सिक्सेज़ आर फॉर्टी थ्री नाम से शुभा स्ली ने किया। यू. आर. अनन्तमूर्ति के उपन्यास संस्कार का लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासकारों में फणीश्वर नाथ रेणु का मैला आंचल, राही मासूम रज़ा

का आधा गांव (द विलेज डिवाइडेड – जिलियन राइट), गुरदयाल सिंह का *परसा*, मुल्क राज आनंद का अनटचेबल (अछूत), झुम्पा लाहिड़ी का द *नेमसेक*, अनीता देसाई का *बाय बाय ब्लैकबर्ड*, किरण देसाई का *इनहैरिटेंस ऑफ लॉस*, विक्रम सेठ का द *गोल्डन गेट, अ सूटेबल ब्वॉय (एक अच्छा सा लड़का)*, खुशवंत सिंह का *ट्रेन टू पाकिस्तान (पाकिस्तान मेल)*, अरुंधति राय का *गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स. (मामूली चीज़ों का देवता)*, निर्मल वर्मा का *अंतिम अरण्य*, मराठी उपन्यासकार वी.एस. खांडेकर के ययाति आदि प्रमुख हैं।

कहानी

कहानी के अनुवाद के क्षेत्र में कई उदाहरण देखें जा सकते हैं। भारतीय भाषाओं में रचित कहानियों के परस्पर अनवुाद किए गए। फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों का असमिया अनुवाद तिलक हज़ारिका ने किया। मलयालम रचनाकार वैक्कम मोहम्मद बशीर की कहानियों का बांग्ला अनुवाद निलीना अब्राहम ने, हिंदी रचनाकार निर्मल वर्मा के कहानी संग्रह कव्वे और काला पानी का बांग्ला अनुवाद काक ओ कालापानी के नाम से माया गुप्त ने किया। निर्मलप्रभा बारदोलोई की असमिया कहानियों का बांग्ला अनुवाद सुजीत चौधरी ने किया। उर्दू में कुर्रतुल–ऐन हैदर बेहद पढ़ी जाने वाली लेखिका हैं। उनकी कहानियों पतझड़ की आवाज़ का डोगरी में अनुवाद उषा व्यास ने किया। ओड़िया रचनाकार मनोज दास की कहानियों का गुजराती अनुवाद रेणुका सोनी ने किया। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की कहानियों का संस्कृत अनुवाद बिहारीलाल मिश्र ने किया।

अन्य विधाएं

उपन्यासों के अतिरिक्त अन्य विधाओं में लिखित साहित्य का भी प्रचुर मात्रा में अनुवाद हुआ।

कन्नड़ लेखक गिरीश कर्नाड के नाटकों – हयवदन, तुगलक, नागमण्डल का अंग्रेजी अनुवाद ए.बी. धारवड़कर ने किया। मराठी नाटककार विजय तेंदुलकर जिनके नाटक केवल मराठी ही नहीं अपितु हिंदी तथा अन्य भाषाओं में भी काफी चर्चित रहे, के *खामोश! अदालत चालू आहे* और *घासीराम कोतवाल* के हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए। हबीब तनवीर का चरणदास चोर, धर्मवीर भारती के *अंधायुग*, सुरेन्द्र वर्मा के नाटक आदि के प्रचुर अनुवाद हुए।

जीवनियों के भी बड़ी संख्या में अनुवाद हुए। विष्णु प्रभाकर की जीवनी *आवारा मसीहा* का असमिया सहित विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ। कृष्ण कृपलानी की *गांधी : ए लाइफ* का असमिया अनुवाद कीर्तिनाथ हज़ारिका ने किया। ज्योतिबाराव फुले के मराठी–संवाद गुलामगीरी का बांग्ला अनुवाद वीणा आलासे द्वारा किया गया। महात्मा गांधी की आत्मकथा का राजस्थानी अनुवाद आईदान सिंह भाटी ने किया। जवाहर लाल नेहरू के *डिस्कवरी ऑफ इंडिया* का अनुवाद भी लगभग सभी भारतीय भाषाओं में हुआ।

आलोचना, काव्यशास्त्र, निबंध संग्रह आदि का आधुनिक समय में खूब अनुवाद हो रहा है। नगेन्द्र के रस सिद्धान्त का पंजाबी अनुवाद नवरतन कपूर ने, गोपीचंद नारंग की उर्दू साहित्यिक आलोचना साख्तियात, पस–साख्तियात और मशरिक़ी शेरियात का पंजाबी अनुवाद जगबीर सिंह ने सरंचनावाद, उत्तर–सरंचनावाद अते पूर्वी काव शास्तर शीर्षक से किया। नरेन्द्र यादव के मराठी संस्मरण आमचा बाप एनी अम्मी का पंजाबी अनुवाद दलबीर सिंह ने किया।

परस्पर अनुवादों की यह शृंखला काफी लम्बी है जिसमें से कुछ की यहां चर्चा की गई है। भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद के माध्यम से ये भाषाएं एक–दूसरे की लेखन परम्परा से परिचित हो सकीं।

5.5 गद्य साहित्य की विशेषताएं एवं उसके अनुवाद की चुनौतियां

ऊपर आपने गद्य साहित्य के विकास, विभिन्न विधाओं का उद्‌भव, विदेशी तथा भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद के विषय में विस्तार से पढ़ा। आपने यह भी देखा कि अनुवाद के माध्यम से नई विधाओं का भारतीय साहित्य में प्रादुर्भाव हुआ। अब यह जानना भी उतना ही ज़रूरी है कि गद्य साहित्य की विशेषताएं क्या है एवं उसके अनुवाद में अनुवादकों के समक्ष कौन–कौन सी प्रमुख चुनौतियां हैं।

5.5.1 गद्य साहित्य की विशेषताएं

गद्य साहित्य की विशेषताओं की चर्चा करते हुए यहां स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि गद्य साहित्य से यहां तात्पर्य सर्जनात्मक गद्य साहित्य से है जिसमें ऊपर चर्चित साहित्य की सभी विधाएं शामिल हैं। गद्य साहित्य की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं–

- **कथावस्तु** – सर्जनात्मक साहित्य के चिंतन के केंद्र में सदैव से मानव समाज और उसके मूल्य हैं। मानव समाज, उसका मूल्यबोध, उसका समय, उसकी परिस्थितियों आदि की जटिल और साहित्यिक निर्मिति को ही साहित्य कहते हैं। ऐसे जटिल पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक का भी सह्रदय होना उतना ही आवश्यक होता है।
- **भाषा** – सर्जनात्मक गद्य साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी भाषा है। इकाई 4 में आपने सर्जनात्मक साहित्य एवं ज्ञानात्मक अनुवाद में अंतर के संदर्भ में इस पर विस्तार से अध्ययन किया होगा। सर्जनात्मक साहित्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी भाषा होती है। भाषा की तीनों शब्द शक्तियां – अभिधा, लक्षणा, व्यंजना का प्रचुर मात्रा में उपयोग सर्जनात्मक साहित्य में किया जाता है जिसे अनुवाद करते समय सही अर्थ में समझना, उसके अर्थ की वक्रता को पकड़ना और लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय उसे पूरी तरह संप्रेषित करना आवश्यक होता है।
- **समाजिक–सांस्कृतिक बुनावट** – सर्जनात्मक साहित्य चाहे वह कहानी हो, उपन्यास हो, रेखाचित्र हो, आत्मकथा हो, संस्मरण अथवा जीवनी हो, ये सभी एक विशेष कथातत्व तथा घटना एवं परिस्थितियों से संचालित होते है। इन सभी में किसी समाज एवं संस्कृति विशेष के अंतर्गुंफित तत्व होते हैं।
- **मुहावरे–लोकोक्तियों का प्रयोग** – मुहावरे भाषा के लाक्षणिक प्रयोग से जन्म लेते हैं और भाषा को वक्रता प्रदान करते हैं वहीं लोकोक्तियां किसी समाज की परंपरा और सातत्य का परिणाम होती हैं। लोकोक्तियों में संबद्ध समाज की संस्कृति, आस्थाएं, मान्यताएं और विकासक्रम को देखा जा सकता है। सर्जनात्मक गद्य साहित्य में मुहावरों–लोकोक्तियों आदि का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। भाषा की शब्द–शक्तियों का असली परिचय यहीं देखने को मिलता है। अपने गूढ़तम रूप और परंपरा और संस्कृति से उत्पन्न मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से साहित्य और अधिक विश्वसनीय हो जाता है। भाषा का यह सूक्ष्म प्रयोग रचनाकार के अध्ययन, उसकी समझ और उसकी संवेदनशीलता का भी परिचायक होता है।

- **शैली** – नाटक, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी आदि गद्य साहित्य की विभिन्न विधाएं तथा शैलियां हैं। इनके अतिरिक्त गेय शैली, व्याख्यापरक शैली, आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली आदि अनेक शैलियों में साहित्य रचना की गई है। शैलियों की यह विविधता साहित्य को विश्वसनीय बनाने तथा आमजन तक जोड़ने और उसे संप्रेषणीय बनाने का काम करती है।

ये सभी विशेषताएं मिलकर साहित्य को विशिष्ट बनाती हैं। किंतु यहीं विशिष्टताएं अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष बड़ी चुनौतियों का कार्य करती हैं जिनसे जूझते हुए अनुवादक को अनूदित पाठ तक की यात्रा करनी होती है। आइए, अब अनुवादक की चुनौतियों की चर्चा करते हैं।

5.5.2 गद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

संस्कृत काव्यशास्त्र में आचार्य दंडी ने गद्य को कवियों की कसौटी कहा है। गद्य साहित्य का अनुवाद अनुवादकों के लिए भी वैसी ही एक बड़ी चुनौती है। सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद केवल दो भाषाओं के बीच का संवाद नहीं है अपितु दो संस्कृतियों, दो समाजों, लेखक की संवेदनशीलता, उनकी मनःस्थिति और पाठ के पूर्वपाठ, अंतर्पाठ के बीच भी संवाद है। निश्चित तौर पर ऐसे पाठ का अनुवाद काफी चुनौतीपूर्ण होगा।

जैसा कि आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि गद्य साहित्य का सृजन एक जटिल कार्य है, उसके अनुवाद में अनुवादकों को भी बेहद सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

कथा साहित्य और कथेतर साहित्य के विषय वस्तु की यदि बात की जाए तो उनमें भी अंतर देखा जा सकता है। कथा साहित्य जहां एक ओर संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता और तथ्यों का मिश्रण है वहीं निबंध किसी विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

कथा साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

कथा साहित्य के अंतर्गत कहानी और उपन्यास दोनों शामिल हैं। कथा साहित्य में मूलतः कल्पनाशीलता, भावात्मकता, भाषा की लाक्षणिकता, संवेदनशीलता के साथ–साथ सत्यों एवं तथ्यों का सुंदर सम्मिश्रण है। अक्सर कहा जाता है कि सर्जनात्मक साहित्य कोरी कल्पना पर आधारित है। लेकिन अभी तक का मेरा अनुभव है कि चाहे कोई रचना बाहर से दिखने पर कितनी भी काल्पनिक क्यों न लगे लेकिन उसका उत्स किसी सामाजिक–राजनीतिक यथार्थ से ही होता है। प्रेमचंद के गोदान, रेणु के मैला आंचल, यशपाल का गर्म हवा, भीष्म साहनी का तमस, कृष्णा सोबती का ज़िंदगीनामा, मन्नू भंडारी का आपका बंटी, महाभोज तथा ऐसी अनेक रचनाएं इस कथ्य का प्रमाण है। ऐसे में अनुवादक में भी एक साथ तथ्य, कल्पनाशीलता, भावात्मकता तथा भाषा की लोच को संभालने का गुण होना चाहिए।

यद्यपि भाषा एक ओर केवल बाह्य तत्व दिखती है लेकिन भाषा के भीतर उतरने पर उसकी विभिन्न तहें एक–एक करके खुलने लगती हैं। भाषा की ये विभिन्न तहें हमारी सामाजिक–सांस्कृतिक–धार्मिक आस्थाओं से निर्मित होती हैं। ये आस्थाएं और परंपराएं किसी भाषा का विशेष गुण है। अनुवादक को अनुवाद करते समय सबसे बड़ी चुनौती इसी स्तर पर देखने को मिलती है। इसीलिए अक्सर कहा जाता है कि भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद उतना चुनौतीपूर्ण नहीं है जितना भारतीय भाषाओं और गैर–भारतीय भाषाओं के बीच। इसका मूल कारण दो समाजों के बीच की दूरी है। अनुवादक को भाषा की सूक्ष्मताओं को समझने के लिए भाषा के साथ संस्कृति, उसकी लोक परंपराओं, मुहावरों और लोकोक्तियों आदि की भी समझ होनी चाहिए।

कथेतर साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

आचार्य रामचंद्र शुक्ल आचार्य दंडी के कथन को और विस्तार देते हुए अपनी पुस्तक हिंदी साहित्य का इतिहास में लिखते हैं कि गद्य यदि कवियों या लेखको की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। स्पष्ट है कि निबंध लेखन जितना बौद्धिक कार्य है, उसका अनुवाद भी उतना ही बौद्धिक और जटिल कार्य है। भाषा की छूट होने के कारण अर्थ की सतह तक पहुँचना एक चुनौती होता है। अनुवादक से अपेक्षा है कि वे पाठ का आद्यांत पाठ करें और उसका विश्लेषण करें।

आलोचना या समीक्षा लेखन सर्जनात्मक साहित्य का पुनर्पाठ और उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन होता है। अनुवादक के पास भी आलोचक की तरह भाषा और आलोचना के उपकरणों की गहरी समझ होना आवश्यक है।

अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि उनकी समझ भी अनूद्य पाठ के रचनाकार के समान हो। अर्थात अनुवादक के पास पाठ संबंधी सामाजिक–सांस्कृतिक–ऐतिहासिक स्तर की जानकारी तथा समझ हो।

इसी तरह यदि देखा जाए तो यात्रा वृत्तांत तथा संस्मरण लेखक के साथ–साथ अनुवादक को भी उसी मनोभूमि पर उतरकर पाठ का अध्ययन, विश्लेषण एवं भाषांतरण करना होगा।

नाटक के अनुवाद की चुनौतियाँ

नाट्य साहित्य गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा जाता है लेकिन यहां हम गद्य नाटक के संदर्भ में ही बात करेंगे। कथा साहित्य की तरह ही नाटक में भी कथातत्व, काल्पनिकता, भावप्रधानता, मुख्य चरित्र, सत्य, तथ्य और कल्पना का सुंदर सम्मिश्रण, भाषा की लाक्षणिकता आदि सभी गुण होते हैं। इसलिए कथासाहित्य की तरह ही नाटक का अनुवाद भी उतना ही जटिल तथा चुनौतीपूर्ण है।

कथासाहित्य से भिन्न नाटक में कुछ अन्य तत्व भी हैं जो उसे कथा साहित्य से अलगाते हैं और वे हैं – अभिनेयता, छोटे तथा चुटीले संवाद, मंचीयता, संगीत तथा प्रकाश व्यवस्था। नाटक के ये विशेष तत्व अन्य तत्वों से जुड़कर नाटक को कथा साहित्य से अलग एक विशिष्ट विधा बना देते हैं। अनुवाद करते समय अनुवादक को नाटक के भावपक्ष तथा शिल्प पक्ष, दोनों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नाटक के छोटे तथा चुटीले संवाद उसके प्राणतत्व होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि अनुवादक अनुवाद के समय यह विशेष ध्यान रखें कि संवादों के अनुवाद भी उतने ही छोटे, मारक तथा प्रभावशाली हों।

संगीत तथा प्रकाश व्यवस्था यूं तो शब्दों से परे होते हैं। लेकिन नाटक के मंचन में इनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। संवाद तथा अभिनेयता के साथ–साथ भाषा का कसाव किसी नाटक को सफल बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अनुवादक को इन सभी तत्वों के सुंदर सामंजस्य का भी ध्यान रखना चाहिए और भाषा का अनुवाद करते समय पूरे शिल्प के साथ तादात्म्य बनाना चाहिए।

मुहावरे, लोकोक्तियों आदि का अनुवाद– कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी भाषा की लाक्षणिकता है। लाक्षणिकता की सबसे खूबसूरत झांकी मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग में मिलती है। अनुवादक के सामने इन मुहावरे–लोकोक्तियों का अनुवाद एक बड़ी चुनौती की तरह होता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक अनुवाद करते समय भावानुवाद का सहारा लेते हैं और लक्ष्य भाषा में समतुल्य मुहावरे की खोज करते हैं जैसे –

हिंदी मुहावरा	–	मूसलाधार बारिश होना
अंग्रेजी अनुवाद	–	heavy rain
अंग्रेजी समतुल्य	–	Raining cats and dogs.

निश्चित तौर पर यह शाब्दिक दृष्टि से ठीक अनुवाद नहीं है लेकिन भाव की दृष्टि से एकदम सटीक है। एक अन्य उदाहरण जिसका हम अक्सर अपनी भाषा में प्रयोग करते हैं –

हिंदी मुहावरा	–	भगीरथ प्रयत्न
अंग्रेजी अर्थ	–	very difficult task
अंग्रेजी समतुल्य	–	Herculeon's task

हिंदी और अंग्रेजी में प्रयुक्त इन दो शब्दों को समझने के लिए केवल शब्दकोश ही काफी नहीं है अपितु संस्कृति विशेष की भाषा, परंपरा तथा प्रकृति को भी समझना अत्यंत आवश्यक है।

विषय वस्तु तथा शिल्प

विषय वस्तु तथा शिल्प – दोनों ही किसी रचना के प्राणतत्व हैं। विषय–वस्तु के साथ–साथ मूल पाठ के शिल्प के प्रति भी न्याय होना आवश्यक है। अनुवादक को पाठ के साथ शिल्प के अनुवाद पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्पष्ट है कि अनुवाद मूलतः एक रचना को दूसरी भाषा में पुनः जन्म देना है और इस पुनःजन्म का पूरा श्रेय अनुवादकों को जाता है। अनुवादक की सूझ–बूझ, पाठ को लेकर समझ और अनुवाद की प्रक्रिया का पूर्णतः पालन ही रचना के साथ पूर्ण न्याय कर पाएगा।

5.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने गद्य साहित्य से अभिप्राय, उसके विभिन्न आयामों, गद्य साहित्य का उद्‌भव और विकास के साथ गद्य साहित्य की विशेषताओं तथा गद्य साहित्य के अनुवादक के समक्ष आने वाली चुनौतियों और अनुवादक से अपेक्षाओं के बारे में विस्तार से पढ़ा। भारतीय साहित्य में गद्य साहित्य के उद्‌भव और उससे होने वाले सामाजिक परिवर्तनों के साथ–साथ आपने यह भी जाना कि गद्य साहित्य का अनुवाद एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन अनुवादक की समझदारी से किसी भी रचना का सफल अनुवाद किया जा सकता है। अगली इकाई में हम पद्य साहित्य के अनुवाद तथा उसके विविध आयामों के विषय में विस्तृत अध्ययन करेंगे।

5.7 बोध प्रश्न

1. रेखाचित्र एक महत्वपूर्ण गद्य विधा है। (सही / गलत)
2. विभिन्न गद्य विधाओं का उद्‌भव आधुनिक काल की देन है। (सही / गलत)
3. गद्य साहित्य के विकास में .... की महत्वपूर्ण भूमिका रही। (मुद्रण / टंकण)
4. हिंदी के मानकीकरण में .... की भूमिका महत्वपूर्ण है। (भारतेंदु युग / द्विवेदी युग)
5. लोकोक्तियां हमारी सामाजिक–सांस्कृतिक–भाषिक परंपरा की परिचायक हैं। (सही / गलत)

6. साहित्य के दो प्रमुख तत्व हैं .... एवं शिल्प। (विषयवस्तु/भाषा)
7. साहित्य की भाषा अधिकांशतः .... होती है। (अभिधात्मक/लाक्षणिक)

5.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. गद्य साहित्य से क्या अभिप्राय है?
2. गद्य साहित्य और पद्य साहित्य में क्या अंतर है?
3. कथा साहित्य और कथेतर साहित्य से आप क्या समझते हैं? चर्चा कीजिए।
4. गद्य साहित्य के उद्भव में अनुवाद की क्या भूमिका है?
5. गद्य साहित्य की विभिन्न विधाएं कौन–कौन सी हैं?
6. गद्य साहित्य के अनुवाद की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. गद्य साहित्य के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।
9. कथा साहित्य के अनुवाद पर एक निबंध लिखिए।
10. कथेतर साहित्य के अनुवाद पर एक निबंध लिखिए।
11. नाट्य साहित्य के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।
12. अपनी पसंद की किसी एक गंद्य रचना का अनुवाद कीजिए और उसकी अनुवाद प्रक्रिया की चर्चा कीजिए।

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अनुवाद : प्रक्रिया एवं परिदृश्य, डॉ० रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।

अनुवाद के विविध आयाम, डॉ० पूरनचंद टंडन एवं डॉ० हरीश कुमार सेठी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998।

सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद, संपा डॉ. सुरेश सिंहल और अन्य, भारतीय अनुवाद परिषद नई दिल्ली।

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सही
2. सही
3. मुद्रण
4. द्विवेदी युग
5. सही
6. विषय–वस्तु
7. लाक्षणिक

इकाई 6 : पद्य साहित्य का अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 पद्य साहित्य से तात्पर्य

6.2.1 गद्य और पद्य में अंतर

6.3 पद्य साहित्य की मुख्य विधाएं

6.3.1 काव्य नाटक

6.3.2 कविता

6.4 पद्य साहित्य का अनुवाद

6.5 पद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियां

6.6 काव्यानुवाद पुनःसृजन भी है

6.7 काव्यानुवाद का उद्देश्य और अनुवाद की पद्धतियाँ

6.8 सारांश

6.9 बोध प्रश्न

6.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

6.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप जान पाएंगें:

- पद्य साहित्य क्या है और इसकी मुख्य विधाएं कौन–कौन सी हैं।
- कविता और काव्य नाटक में क्या अंतर है।
- पद्य साहित्य और अनुवाद में क्या संबंध है तथा इसके अनुवाद का स्वरूप क्या है।
- पद्य साहित्य के अनुवादक के समक्ष कौन–कौन सी प्रमुख चुनौतियां हैं।

6.1 प्रस्तावना

लगभग संपूर्ण विश्व का प्रारंभिक साहित्य पद्य में लिखा गया। कविता सदैव साहित्य की सर्वाधिक प्रमुख विधा रही है। वस्तुतः लंबे समय तक साहित्य शब्द काव्य का पर्याय रहां। इसका कारण भी यही था कि साहित्य अधिकांशतः काव्यात्मक ही लिखा जाता रहा। भारत में गद्य विधाओं की शुरुआत आधुनिक काल की देन है। इस विषय में विस्तार से आप इकाई 5 में पढ़ चुके हैं। आधुनिक काल में आकर ही साहित्य शब्द का विस्तार हुआ। चूंकि व्यापक स्तर पर कविता लिखी गई इसीलिए व्यापक स्तर पर इसके अनुवाद भी हुए। होमर, मिल्टन, कीट्स, भौले, वर्ड्सवर्थ, रॉबर्ट फ्रॉस्ट

से लेकर वर्तमान में आधुनिक विश्व कविता तक प्रचुर मात्रा में काव्यात्मक साहित्य लिखा गया और उनका अनुवाद भी हुआ। अनुवाद की विस्तृत सैद्धांतिकी के पीछे भी अधिकांशतः कविता का अनुवाद और अनुवाद में आने वाली समस्याओं, और अनुवादकों द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की ही चर्चा है।

पिछली इकाई में आपने गद्य साहित्य के अनुवाद, उसके महत्व तथा उसके समक्ष आने वाली चुनौतियों के रूप में विस्तार से पढ़ा। प्रस्तुत इकाई में आप पद्य साहित्य के अनुवाद के विभिन्न पक्षों के अध्ययन के माध्यम पद्य साहित्य के अनुवाद से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अंतर्गत पद्य साहित्य से तात्पर्य, पद्य साहित्य के प्रकार, उनकी विशेषताएं और साहित्य में उनका महत्व तथा पद्य साहित्य में अनुवाद के समक्ष आने वाली विभिन्न चुनौतियों तथा विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न अनुवादकों द्वारा अपनाई गई अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों के विषय में पढ़ेंगे तथा उससे जुड़ विभिन्न आयामों को समझेंगे।

6.2 पद्य साहित्य से तात्पर्य

पद्य साहित्य का अर्थ है ऐसा साहित्य जो गेय हो, जिसमें नाद सौंदर्य हो, लय का आरोह–अवरोह हो, कल्पना की उड़ान हो, और थोड़े शब्दों में ज़्यादा भाव पिरोए गए हों।

6.2.1 गद्य और पद्य में अंतर

- गद्य से अलग पद्य का सबसे बड़ा गुण उसकी गेयात्मकता है। गद्य में सीधी–सपाट पंक्तियां होती हैं जिन्हें अनुच्छेद रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- गद्य जहां विस्तार से भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, वहीं पद्य में कम शब्दों में अधिक भावात्मक तरीके से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है।
- गद्य और पद्य दोनों में भाषा की तीनों शब्द शक्तियों का प्रयोग किया जाता है। किंतु इसका अधिक प्रयोग पद्य में दिखाई देता है।
- गद्य अधिक विचार प्रधान होता है, पद्य में भावों की प्रधानता देखी जाती है।
- पद्य में लय का आरोह–अवरोह महत्वपूर्ण होता है।
- गद्य साहित्य में ज्ञानात्मक साहित्य लिखा जाता है, पद्य साहित्य चूंकि अधिक भावप्रधान होता है और उसमें शब्द प्रयोग की निश्चित सीमा भी होती है, इसलिए उसमें ज्ञानात्मक साहित्य लिखना संभव नहीं है।
- गद्य आख्यान तथा तथ्यात्मकता दोनों के लिए उचित है। इसी आधार पर गद्य का विभाजन भी किया जाता है जैसे – सर्जनात्मक गद्य साहित्य तथा गैर–सर्जनात्मक अथवा ज्ञानपरक साहित्य। किंतु पद्य में मूलतः सर्जनात्मक साहित्य की ही अभिव्यक्ति होती है।
- आधुनिक युग और ब्रिटिशकालीन नई शिक्षा नीति के प्रादुर्भाव के साथ ही गद्य की उपयोगिता बढ़ती गई जबकि पद्य केवल काव्यात्मक अभिव्यक्ति तक ही सीमित रह गया।

इस तरह आपने देखा कि गद्य की तुलना में पद्य भावप्रधान होता है, उसकी भाषिक सीमा होती है लेकिन उसमें व्यक्त भावों की कल्पना की उड़ान की कोई सीमा नहीं होती। पद्य में कई बार शब्दों के बीच का मौन भी काफी प्रभावशाली होता है। पद्य चुप्पियों में भी अपनी बात कहता है और सहृदय पाठक, श्रोता अथवा अनुवादक उसमें

अनेक अर्थछवियों की खोज कर सकते हैं। पद्य, साहित्य का सबसे जटिल और चुनौतीपूर्ण रूप है जिसे साधना इतना सरल नहीं।

6.3 पद्य साहित्य की मुख्य विधाएं

भाग 6.2 में आपने पढ़ा कि पद्य किसे कहते हैं और पद्य और गद्य में क्या मूलभूत अंतर हैं। इकाई के इस भाग में आप जानेंगे कि पद्य साहित्य की मुख्य विधाएं कौन–कौन सी हैं।

गद्य साहित्य की तुलना में पद्य साहित्य की विधाएं बेहद सीमित हैं। यूं तो आपको यह भी पढ़ने को मिल सकता है कि अमुक रचनाकार का गद्य बेहद पद्यात्मक है किंतु ऐसा वास्तव में होता नहीं है। जब हम किसी गद्य को पद्यात्मक या तरल कहते हैं तब उसका उद्देश्य उस गद्य की तरलता से होता है, उसकी गेयता से नहीं।

काव्य की कई विधाएँ हैं। महाकाव्य खंडकाव्य, प्रगीत आदि, सभी का मूल गुण काव्यात्मकता है, इसलिए यहाँ इन सभी की चर्चा कविता के संदर्भ में ही की जाएगी। इस प्रकार, पद्य साहित्य की मूलतः दो ही विधाएं देखी जाती हैं – काव्य नाटक; एवं कविता।

6.3.1 काव्य नाटक

काव्य नाटक से तात्पर्य ऐसे नाटक या नाट्य साहित्य से है जो गेय हो, जिसमें छोटे–छोटे तथा चुटीले संवाद हों, जहां भावप्रवणता अधिक हो तथा संवादों में तुकांत संवाद अधिक हों। काव्य नाटक को ही गीति नाट्य, गीति रूपक आदि भी कहा गया है। भारत भूषण का अग्निलीक और धर्मवीर भारती का अंधायुग इसके सटीक उदाहरण हैं।

काव्य नाटक की प्रमुख विशिष्टताएं इस प्रकार हैं :

- काव्य नाटक गेय होता है।
- इसके संवाद छोटे तथा भावप्रवण होते हैं।
- काव्य नाटक में अनुभूतियों का नाटकीय प्रस्तुतीकरण होता है।
- काव्य नाटक में नाटक के सभी महत्वपूर्ण तत्व जैसे – प्रस्तावना, कथा, संवाद, प्रकाश व्यवस्था आदि के साथ–साथ गीत एवं नर्तन भी होता है।
- काव्य नाटक के संवाद अधिकांशतः तुकांत होते हैं।
- काव्य नाटक में भावों का सघनीकरण होता है।
- काव्य नाटक में छंदबद्ध तथा छंदमुक्त दोनों प्रकार के संवादों और गीतों का प्रयोग होता है।
- काव्य नाटक में बिंब तथा प्रतीक विधान की प्रधानता होती है।
- काव्य नाटक में काव्य चित्रों, प्रतीकों एवं रूपकों की सहायता से सूक्ष्म भावों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है।
- काव्य नाटक में कथातत्व की अनिवार्यता होती है।

6.3.2 कविता

पाश्चात्य काव्यशास्त्र की बात की जाए तो अरस्तू के अनुसार काव्य प्रकृति का अनुकरण होता है और प्रकृति के पुनःसृजन के लिए वह अनुभूति और कल्पना का सहारा लेता है।

पाश्चात्य कवि और चिंतक वर्ड्सवर्थ भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक लिरिकल बैलेड्स में कविता को मानव मन की बलवती भावनाओं का सहज उच्छलन मानते हैं।

प्रसिद्ध चिंतक सेमुअल टेलर कॉलरिज अपनी पुस्तक बायोग्राफिया लिटरेरिया में कविता को बेहतरीन शब्दों का सर्वोत्कृष्ट क्रम कहते हैं। अपने कल्पना सिद्धांत में वे कविता के लिए भाव और विचार दोनों को महत्वपूर्ण बताते हैं।

कविता के विषय में हिंदी के मूर्धन्य आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने निबंध कविता क्या है? में कहते हैं –जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द–विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। स्पष्ट है कि कविता का सीधा संबंध हृदय से है।

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि कविता हृदय की मुक्तावस्था है जिसमें भावों, विचारों और अनुभूतियों का सहज सम्मिश्रण होता है।

कविता के इन अंतर्तत्वों के अतिरिक्त कविता के कुछ बाह्यतत्व भी हैं जिनके अनुसार कविता में नाद सौंदर्य, छंद, लय का आरोह–अवरोह, ध्वनियों के विशिष्ट रूप, भाषा का सौम्य रूप तथा शब्द शक्तियों की अद्भुत छटा होती है।

कविता की प्रमुख विशिष्टताएं इस प्रकार हैं :

- कविता भावों का सहज उच्छलन है।
- कविता में कल्पना, भावों और विचारों का सुंदर सम्मिश्रण होता है।
- कविता हृदय की मुक्तावस्था से उत्पन्न होती है।
- कविता में भाषा अपने सबसे सौम्य रूप में उपस्थित होती है।
- कविता में भाषा की वक्रताएं और भंगिमाएं देखी जा सकती हैं।
- कविता का अपना नाद सौंदर्य होता है।
- कविता लयबद्ध तथा छंदबद्ध होती है।
- कविता में बिंब तथा प्रतीक विधान की प्रधानता होती है।
- कविता में प्रतीकों एवं रूपकों की सहायता से सूक्ष्म भावों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति होती है।
- कविता की भाषा समाज विशिष्ट की परंपराओं, संस्कृतियों, स्मृतियों, आस्थाओं आदि की प्रतिबिंब है।
- कविता में शब्दों के साथ ही मौन का भी महत्व होता है।
- कविता में कथातत्व हो, यह अनिवार्य नहीं है।

6.4 पद्य साहित्य का अनुवाद

चूंकि पद्य साहित्य की दोनों विधाओं मे काव्य तत्व की प्रधानता है इसलिए हम यहां आगे की चर्चा काव्यानुवाद अथवा कविता के अनुवाद के संदर्भ में करेंगे। कविता के अनुवाद को हमेशा से सर्वाधिक जटिल माना गया है। यदि कविता के अनुवाद को लगभग असंभव कार्य कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। विभिन्न अनुवादको एवं अनुवाद चिंतकों ने कविता के अनुवाद को लगभग असंभव कार्य माना है।

रॉबर्ट फ्रॉस्ट के अनुसार, कविता वह है, जो अनुवाद में खो जाती है। रूसी कवि जोसेफ ब्रॉडस्की के अनुसार, कविता वह है, जो अनुवाद के बाद भी बची रहती है।

तमिल भाषा में लिखे कालजयी साहित्य संगम साहित्य के अनुवादक, चिंतक और मूलतः कवि ए.के. रामानुजन के अनुसार, कविता का अनुवाद असंभव कार्य है।

वस्तुतः कविता के अनुवाद को असंभव मानने वाले अनुवादकों के लिए कविता का अनुवाद इसलिए भी असंभव कार्य है क्योंकि वे अनुवाद को शुद्ध अनुवाद के रूप में देखते हैं, पुनःसृजन तथा नवसृजन के रूप में नहीं। भाषा, शिल्प तथा अभिव्यक्ति के प्रति जड़ता ही इसका कारण है।

भक्तिकालीन भारतीय साहित्य को देखा जाए तो रामकथा, श्रीमद्‌भागवद् आदि के विभिन्न भाषाओं में हुए रूपांतरण शुद्ध अनुवाद नहीं हैं अपितु मूल कथा की आत्मा का सहारा लेकर रचना का पुनःनवीकरण है जिसे उत्तर आधुनिक अनुवाद चिंतक लेफेवेयर के शब्दों में rewriting यानी पुनःसृजन तथा सुजित मुखर्जी के शब्दों में new writing यानी नवसृजन कहा जाता है।

ऑक्टोवियो पॉज़ के अनुसार अनुवाद रचना को मूल पाठ के बंधन से मुक्त करता है। वे कहते हैं कि कविता वह है जो रूपांतरित हो गई।

वॉल्टर बेंजामिन के बहुचर्चित लेख The task of a translator में अनुवाद को रचना का उत्तर जीवन यानी after life कहा गया है। रचना को यह उत्तर जीवन अनुवादक देते हैं जब वे किसी रचना को किसी देश–काल की सीमा से बाहर ले जाकर नए समय और समाज में पुनर्जीवित कर देते हैं।

आठवीं सदी के चीनी कवि ली पो की कविताओं के अनुवादक एज़रा पाउंड भी ऐसा ही करते हैं जब वे 19वीं सदी में उनकी कविताओं का अनुवाद करके दुनिया के सामने रख देते हैं। कविता के अनुवाद को लेकर एज़रा पाउंड का दृष्टिकोण बेहद सकारात्मक है। अपने निबंध हाउ टू रीड ए पोएम में कविता की भाषा के तीन मुख्य भेद बताते हैं – मेटापोइया, अर्थात कविता का वह तत्व जो रूपक से संबंधित है। फोनापोइया अर्थात कविता का ध्वनि तत्व तथा लोगोपोइया अर्थात कविता के भीतर का बुद्धितत्व। एज़रा पाउंड के अनुसार यदि अनुवादक कविता के इस तीसरे तत्व को भी संरक्षित कर लेते हैं तो अनुवाद सार्थक हो जाता है।

इनके अतिरिक्त अनुवाद के उत्तर आधुनिक चिंतक आंद्रे लेफेवेयर कविता के अनुवाद के संदर्भ में अनुवाद की विभिन्न पद्धतियां बताते हैं जो इस प्रकार हैं –ध्वनिगत अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, पद्य का गद्य में अनुवाद, छंदबद्ध अनुवाद, लयबद्ध अनुवाद और पद्य का पद्य में अनुवाद।

आंद्रे लेफेवेयर द्वारा सुझाए गए अनुवाद के ये प्रकार कविता के अनुवाद के संबंध में हैं के अनुसार कविता का अनुवाद करते समय कविता का ध्वनिगत अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, छंदबद्ध अनुवाद, लयबद्ध अनुवाद,पद्य से पद्य में अथवा पद्य से गद्य में – किसी भी प्रकार से अनुवाद किया जा सकता है। एज़रा पाउंड की तरह आंद्रे लेफेवेयर का भी मानना है कि कविता का अनुवाद यद्यपि एक जटिल कार्य है किंतु अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों द्वारा जटिल से जटिल कविता का भी अनुवाद किया जा सकता है। कविता के लिए उनके द्वारा बताई गई 6 अनुवाद पद्धतियां इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं कि वे कविता की निर्मिति, विभिन्न समयों में उसकी उपयोगिता तथा अनुवाद के उद्‌देश्य के आधार पर अनुवाद की अलग–अलग पद्धतियां सुझाती हैं।

जिस प्रकार एज़रा पाउंड 8वीं सदी के चीनी कवियों के अनुवाद की प्रक्रिया में इस मत पर पहुँचते हैं कि मेटापाइया, फोनोपोइया तथा लोगोपोइया तीनों का अनुवाद हो जाए या फिर अननुवाद्यता की स्थिति में लोगोपोइया अर्थात कविता का बुद्धिपक्ष भी संप्रेषित हो जाए तो भी अनुवाद सफल है। लेफेवेयर द्वारा कविता के अनुवाद के लिए सुझाई गई पद्धतियां भी कुछ इसी ओर संकेत करती हैं। इकाई में आगे विभिन्न कविताओं के अनुवाद के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया गया है।

वॉल्टर बेंजामिन के अनुसार अनुवाद किसी रचना को पुनर्जीवन देने का काम करता है। कविता के संदर्भ में यह और अधिक सटीक बैठता है जहां अनुवाद की विभिन्न तकनीकों अथवा पद्धतियों के माध्यम से किसी रचना को एक नई अथवा अचीन्ही भाषा में पुनर्जीवित किया जाता है।

आपने जाना कि कविता का अनुवाद एक जटिलतम कार्य है। लेकिन सदियों से कविता के अनुवाद होते आए हैं और सभ्यताएं उनसे लाभान्वित होती और ज्ञान अर्जित करती रही हैं।

6.5 पद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियां

अब तक आप पद्य साहित्य और उसके अनुवाद के विषय में सैद्धांतिक रूप से समझ चुके हैं कि पद्य साहित्य किसे कहते हैं, पद्य और गद्य में क्या अंतर है, पद्य साहित्य में कौन–कौन सी प्रमुख विधाएं आती हैं और उनकी क्या–क्या विशेषताएं हैं और उनका अनुवाद क्यों आवश्यक है। इकाई के इस भाग में हम पद्य साहित्य के अनुवाद में आने वाली चुनौतियों के विषय में चर्चा करेंगे।

कविता के अनुवाद को लेकर विभिन्न विद्वान विभिन्न विचार व्यक्त करते रहे हैं। जहां आधुनिक समय में ग्रीक रचनाकार होमर के अनुवादक मैथ्यू ऑर्नल्ड मानते थे कि अनुवादक को मूल के प्रति पूरी तरह से निष्ठावान होना चाहिए और कविता का अनुवाद करते समय कवि के पूरे मानस, उसकी सामाजिक–मानसिक परिस्थिति, उसकी शैली आदि को पूरी तरह से अनुवाद में उतार देना चाहिए वहीं उत्तर आधुनिक समय के अनुवाद चिंतक लेफेवेयर कविता के अनुवाद के समय अपवर्तन अथवा rewriting की बात करते हैं और सुजित मुखर्जी नवसृजन यानी new writing की। वहीं एजरा पाउंड के अनुसार कविता के अनुवाद में यदि उसका मूल उत्स भी बच जाए तो अनुवाद को सफल माना जाना चाहिए।

मैथ्यू ऑर्नल्ड अपनी पुस्तक On Translating Homer में लिखते हैं union of the translator with his original, which alone can produce a good translation". अर्थात अनुवादक का मूल रचना के साथ एकीकरण ही एक अच्छे अनुवाद को जन्म दे सकता है। और इसी आधार पर उन्होंने होमर के अनुवादकों – चैपमेन, पोप, न्यूमैन आदि की आलोचना की। कविता के अनुवाद में कवि की निष्ठा कविता के अनुवाद के समय, शैली, उसके अनुवाद के महत्व आदि विभिन्न बिंदुओं पर निर्भर करती है।

1. शिल्प और शैली के स्तर पर

मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार अनुवादक को कवि के विषय, नाद, शैली, शिल्प आदि हर स्तर पर निष्ठावान होना चाहिए। फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की प्रसिद्ध पंक्तियां भारतीय स्वाधीनता संग्राम में नारे की तरह इस्तेमाल हुईं। ऐसी कविता में तुकबंदी और लय का बहुत अधिक महत्व होता है। ऐसी कविता के अनुवाद के समय उसके कथ्य के साथ शिल्प का महत्व बहुत अधिक हो जाता है। उदाहरण के लिए–

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे

बोल ज़बां अब तक तेरी है

तेरा सुतवां जिस्म है तेरा

बोल कि जां अब तक तेरी है। (फैज़ अहमद फैज़)

अनुवादक ने अनुवाद में कथ्य के साथ शिल्प को महत्व देते हुए कविता की लय और तुकांत वृत्ति दोनों का ध्यान रखा है –

Speak, for your lips are free

Speak, for your tongue is still yours

Your upright body belongs to you

Speak, for your soul is still yours.

यहां कविता के अनुवाद की मैथ्यू ऑर्नल्ड द्वारा बल दी गई रणनीति को समझा जा सकता है जहां अनुवाद में कथ्य के साथ–साथ शिल्प का भी बेहद महत्व है तथा शिल्प के अभाव में कविता का अच्छा अनुवाद संभव नहीं। अनुवाद में रस और भाव के साथ छंद, लय, ध्वनि और नाद का भी उतना ही महत्व है।

2. **शीर्षक के स्तर पर**–कविता में शीर्षक का महत्व बहुत अधिक होता है। शीर्षक से ही कविता के स्वरूप का भान होता है। कविता के अनुवाद में शीर्षक के अनुवाद पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

आइए, एक अन्य उदाहरण देखते हैं। अमेरिकन कवयित्री एमिली डिकिंसन की कविता Hope is the thing with feathers का हिंदी अनुवाद देखते हैं। इस कविता का अनुवाद रजनीश मंगा ने किया है जिसका शीर्षक है आशा एक चिड़िया का नाम है।

Hope Is The Thing With Feathers
by Emily Dickinson

'Hope' is the thing with feathers—

That perches in the soul—

And sings the tune without the words—

And never stops—at all—

And sweetest—in the Gale—is heard—

And sore must be the storm—

That could abash the little Bird

That kept so many warm—

I've heard it in the chillest land—

And on the strangest Sea—

Yet, never, in Extremity,

It asked a crumb—of Me.

आशा एक चिड़िया का नाम है

आशा एक चिड़िया का नाम है–
जो हमारी आत्मा में बसती है–
और गाती है निःशब्द गीत–
और कभी रुकती नहीं– पल भर भी–
गीत मधुरतम–तुंद हवाओं में सुनिएगा–
और तब भी जब तूफान भयंकर सम्मुख हो–
उस नन्हीं सी चिड़िया को न कर पाया पस्त
जिसने सब में प्यार व गर्मजोशी बांटी हो–
मैंने देखा–सुना हुआ है प्रचंड ठंड के स्थानों में–
और धुर अपरिचित समुद्र में भी–
या घोर विपत्ति आ जाने पर भी,
ठसने मेरे लिए कभी द्वार न अपने बंद किए

कविता के शीर्षक में ही अनुवाद द्वारा ली गई छूट देखी जा सकती है। जहां मूल कविता का शीर्षक है Hope is the thing with feathers वहीं हिंदी में इसका अनुवाद किया गया है – आशा एक चिड़िया का नाम है। अनुवादक चाहते तो इसका शब्दानुवाद कर सकते थे और कह सकते थे कि 'आशा एक पंखों वाली शय का नाम है' लेकिन कवि ने कविता के पूरे भाव ओर संदेश को समझते हुए इसका अनुवाद करने का प्रयास किया है हमें यह समझना होगा कि कविता के अनुवाद में निष्ठा के मायने बेहतर अनुवाद से है जिसके तहत अनुवादक आवश्यकता पड़ने पर छूट ले सकते हैं।

3. **शब्दों के स्तर पर**–इसी कविता से दो पंक्तियाँ लेकर यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है–

And sings the tune without the words—
And never stops—at all—

इन दो पंक्तियों के अनुवाद को ध्यान से देखिए–

और गाती है निःशब्द गीत–
और कभी रुकती नहीं– पल भर भी–

अंग्रेजी कविता की इन पंक्तियों में जहां कवयित्री ने tune without the word कहा है, वहीं उसका अनुवाद करते हुए अनुवादक 'निःशब्द गीत' शब्द का प्रयोग करते है। स्पष्ट है कि अनुवाद करते समय अनुवादक का मूल उद्देश्य शब्द के स्थान पर शब्द रख देना नहीं अपितु कविता के प्रति पूरी तरह न्याय करना था। अनुवाद में अनुवादक ने न केवल कविता की आत्मा को बचाया है वहीं कविता के स्थायी भाव उदासी को पूरी तरह सहेजा है जो कविता की शाब्दिक पंक्तियों के भीतर छिपा है। शिल्प की दृष्टि से भी अनुवादक ने बहुत सावधानी बरती है। एमिली डिकिंसन (1830–1886) के काव्यशिल्प के बारे में कहा जाता है कि वे बेहद छोटी–छोटी पंक्तियों में कविता

लिखती थीं। अनुवादक ने अनुवाद करते समय कवयित्री के शिल्प के साथ भी पूरा न्याय किया है। मूल रूप से 12 छोटी पंक्तियों की कविता का 12 छोटी पंक्तियों में ही अनुवाद किया गया है।

6.6 काव्यानुवाद पुनःसृजन भी है

इसके अतिरिक्त कविता के छायानुवाद का अद्‌भुत उदाहरण है उमर खैयाम की रुबाइयों का फिट्ज़ेराल्ड द्वारा किया गया रूपांतरण। हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला भी उमर खैयाम की रुबाइयों का छायानुवाद ही है जहां कवि ने मूल कविता के शिल्प और सीमाओं से मुक्त होकर लगभग एक नई रचना ही रच दी है। एक उदाहरण देखिए–

Here with, loaf of bread beneath the Bough,

A flask of wine, a Book of verse–and Thou

Beside me singing in the wilderness–

And wilderness is paradise e now.

(Quatrain XI "The Rubaiyat of Omar khayyam" (1859) translated by Edward Fitzerald)

फिट्जेराल्ड द्वारा अनूदित इस पुस्तक के पाँच संस्करण प्रकाशित हुए। 1859, 1868, 1872,1879 और 1889 में प्रकाशित इन पाँच संस्करणों में रूबाइयों की संख्या भी बढ़ती–घटती रही।

1889 में प्रकाशित पाँचवे संस्करण में ऊपर चर्चित रूबाई के स्वरूप में भी बदलाव देखा गया, जो इस प्रकार है–

A book of Verses underneath the Bough,

A jug of wine, a loaf of bread–and Thou

Beside me singing in the wilderness–

Oh, wilderness were paradise e now!

मैथिलीशरण गुप्त ने 1859 के संस्करण के आधार पर अनुवाद किया है, जो मूल के काफी निकट है–

इस तरु तले कहीं खाने को रोटी का टुकड़ा हो एक,

पीने को मधु पात्र पूर्ण हो करने को हो काव्य–विवेक

तिस पर इस सन्नाटे में तुम बैठ बगल में गाती हो,

तो नंदन–सम इसी विजन में मुझे स्वर्ग का हो अभिषेक।

ई.बी. कॉवेल को लिखे अपने पत्र में फिट्ज़ेराल्ड स्वीकार करते हैं कि उन्होंने उमर खैयाम की रुबाइयों के अनुवाद में छेड़छाड़ की है–

'My translations will interest you from its form and also in many respects in its detail : very un-literal as it is. Many quatrains are mashed together and something lost, I doubt, of Qmar's simplicity, which is so much a virtue in him.'

स्पष्ट है कि अनुवाद में ली गई यह छूट कविता के अनुवाद में पुनःसृर्जन की ओर संकेत करती है, जिसे फिट्ज़ेराल्ड उचित मानते हैं और लिखिते हैं–

'But at all cost, a Thing must live with a transfusion of, one's own worse life if one can't retain the Original's better. Better live sparrow than a stuffed eagle'

उनका मानना है कि कविता अपने अनुवाद के बाद भी कपड़े के बाज की तुलना में जिंदा चिड़िया से फुदकती और जीवंत दिखें।

उमर खैयाम की रुबाइयों का फिट्ज़ेराल्ड द्वारा किए गए अनुवाद को लेफेवेयर की rewriting अर्थात पुनर्लेखन की पद्धति के माध्यम से समझा जा सकता है जहां अनुवाद करते समय अनुवादक ने मूल में इतना अधिक परिवर्तन किया कि वह मूल से भिन्न एक रचना बन गई। अनुवाद के उत्तर औपनिवेशिक सिद्धांत में इसे manipulation अर्थात मूल से अनचाही छेड़छाड़ कहा गया है जिसका उद्देश्य शासित समाज के साहित्य को विश्व दृष्टि में अपनी इच्छानुसार प्रस्तुत करना है।

कविता के अनुवाद की कोई एक रणनीति नहीं हो सकती। कविता के अनुवाद के लिए सबसे आवश्यक है कवि के मानस में उतरकर कविता के मूल भाव को ठीक से समझना और कविता की बुनावट को गहराई तक आत्मसात करना। इकाई 3 में आप अनुवाद प्रक्रिया के विषय में विस्तार से पढ़ चुके हैं। अनुवादक अनुवाद करते समय सर्वप्रथम रचना को पढ़ते हैं तथा उसका विश्लेषण करते हैं, उसके बाद लक्ष्यभाषा में उसका अंतरण किया जाता है और अंतरण के पश्चात रचना का पुनर्गठन होता है। इसी क्रम में रचना का पुनरीक्षण होता है। एक बार ठीक से रचना समझ में आ जाने के पश्चात ही अनुवादक को यह तय करना होता है कि यह अनुवाद उसके लिए संभव है या नहीं और यदि है तो उसके लिए उसे कौन सी रणनीति अपनानी होगी। हमने ऊपर पढ़ा कि जैसा कि इकाई के भाग 6.4 में बताया जा चुका है कि अंग्रेजी कवि एज़रा पाउंड कविता की संरचना को तीन स्तर पर बांटते हैं और उसके अनुवाद में यदि तीसरा तत्व यानी बुद्धितत्व भी बच जाए तो उस अनुवाद को सफल मानते हैं।

6.7 काव्यानुवाद का उद्देश्य और अनुवाद की पद्धतियाँ

कविता के अनुवाद में यह समझना भी उतना ही ज़रूरी होगा कि अमुक कविता का अनुवाद किस उद्देश्य से किया जा रहा है। यदि उसका उद्देश्य उसके कथ्य को बचाना है तो अनुवाद की रणनीति उसके अनुसार होगी और यदि अनुवाद का उद्देश्य समय या समाज विशेष में अपनाई गई शैली का भी संरक्षण है तो अनुवादक की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

आइए, एक बहुप्रसिद्ध कविता के अनुवाद के आधार पर कविता के अनुवाद की अन्य बारीकियों को समझते हैं। माया एंजेलो अमेरिका की बहुप्रसिद्ध रचनाकार है जिनकी कविता है Phenomenal Woman। इस कविता का हिंदी अनुवाद किया है रजनीश मंगा ने जिसका शीर्षक है – संपूर्ण स्त्री। उसके एक अंश की बानगी देखिए –

Now you understand
Just why my head's not bowed.
I don't shout or jump about
Or have to talk real loud.

When you see me passing
It ought to make you proud.
I say,
It's in the click of my heels,
The bend of my hair,
the palm of my hand,
The need of my care,
'Cause I'm a woman
Phenomenally.
Phenomenal woman,
That's me.

Source: https://www.familyfriendpoems.com/poem/phenomenal-woman-by-maya-angelou

अब आपकी समझ में आया
कि क्यों नहीं झुकता कहीं भी शीश मेरा
न मैं चिल्लाती हूँ न उछलकूद ही करती रहती
या सचमुच ही बड़े जोर से बातें करती.
जब तुम मुझे यहाँ से गुजरते देखो
तुम्हे गर्व का अनुभव होना चाहिए.
मैं कहती हूँ,
यह तो मेरी एड़ियों की आवाज में है,
मेरे बालों की लहरों में,
मेरे हाथों की हथेलियों में,
मेरी सुश्रुषा की आवश्यकता में,
क्योंकि मैं एक स्त्री हूँ
सर्वगुण–संपन्न.
सम्पूर्ण स्त्री,
यानि कि मैं.

अनुवाद की दृष्टि से देखा जाए तो यह एक बेहतरीन अनुवाद होगा। आइए, कविता के शीर्षक से ही अपनी बात शुरू करते हैं। phenomenal शब्द का शाब्दिक अर्थ है – अद्भुत, असाधारण, अभूतपूर्व, प्रतीयमान आदि। जबकि अनुवादक ने इसका अनुवाद किया है – संपूर्ण। इस शब्द का यह अनुवाद किसी भी तरीके से सही नहीं ठहराया जा सकता है। लेकिन फिर सवाल उठता है कि कविता के अनुवाद में ज़्यादा आवश्यक क्या है। और वह है सहृदयता। यदि अनुवादक मशीन की तरह अनुवाद

करने लगे तो संभव है कि शाब्दिक रूप से अनुवाद सही हो लेकिन भावात्मक दृष्टि से वह अनुवाद न केवल अशुद्ध होगा, अपितु असंप्रेषणीय भी होगा। कविता में कवयित्री द्वारा प्रयुक्त शब्द phenomenal का संभवतः वही अर्थ है जो अनुवादक ने किया है। इस अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक ने सर्वप्रथम प्रस्तुत शब्द का अर्थ शब्दकोश में खोजा होगा। शब्दकोश में प्राप्त अर्थ कवयित्री द्वारा प्रकट किए गए भावों को संप्रेषित करने में असमर्थ लगे होंगे और ऐसी स्थिति में अनुवादक ने कविता के मर्म को एक सहृदय की तरह समझते हुए इस शब्द के लिए संपूर्ण शब्द का प्रयोग उचित समझा होगा। प्रस्तुत कविता में जब अनुवादक ने प्रस्तुत शब्द के लिए संपूर्ण का प्रयोग किया तो कविता के आलोक में यह उचित ही प्रतीत होता है क्योंकि कवयित्री का आशय संभवतः यही है।

4. शब्द–प्रयोग के स्तर पर–

इसी कविता के एक उदाहरण के माध्यम से कविता के अनुवाद को समझने का प्रयास करते हैं –

'Cause I'm a woman

Phenomenally.

Phenomenal woman,

That's me.

क्योंकि मैं एक स्त्री हूँ

सर्वगुण–संपन्न.

सम्पूर्ण स्त्री,

यानि कि मैं

यहां अनुवादक ने phenomenally शब्द के लिए सर्वगुण–संपन्न शब्द का इस्तेमाल किया है। पूरी कविता को यदि पढ़ा जाए तो इस शब्द का अंग्रेजी प्रयोग अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करता है। एक ऐसी स्त्री जो शायद सौदंर्य के बाहरी पैमानों पर खरी नहीं उतरती लेकिन फिर भी दुनिया के समक्ष एक चुनौती है। ऐसी स्त्री के गुणों को उभारने के लिए कवयित्री अपने लिए phenomenal शब्द का प्रयोग करती हैं लेकिन हिंदी में कविता का खूबसूरत अनुवाद करते समय अनुवादक कहीं भावावेग में आ जाते हैं और तथाकथित आदर्श भारतीय स्त्री के लिए उपयोग किए जाने वाले पदबंध संपूर्ण स्त्री तथा सर्वगुण संपन्न का प्रयोग कर बैठते हैं। किंचित यह सही भी प्रतीत होता है लेकिन भावानुवाद करने और लक्ष्यभाषा की आत्मा और समाज के नजदीक पहुँचने के लिए अनुवादक का यह प्रयोग अधिक भावुक प्रतीत होता है। संभवतः phenomenal शब्द के लिए असाधारण शब्द कवयित्री के मानस के अधिक निकट होता।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि कविता के अनुवाद की रणनीतियां अनुवाद के उद्देश्य के साथ बदलती रहती हैं। यदि कविता के अनुवाद का उद्देश्य केवल कथ्य को रूपांतरित करना हो तो उसका **व्याख्यापरक अनुवाद** भी किया जा सकता है। अल्लामा इकबाल की कविताओं का अनुवाद हिंदी के प्रसिद्ध कवि शमशेर बहादुर सिंह ने कुछ इस प्रकार किया है –

मूल : आह ! किसकी जुस्तजू आवारा रखती है तुझे ?–

राह तू, रहरौ भी तू, रहबर भी तू, मंजिल भी तू !

अनुवादः तू किसकी खोज में भटक रहा है? अरे, पथ और पथिक,

पथ–प्रदर्शक और लक्षित स्थान, सबकुछ तू ही तो है!

स्पष्ट है कि अनुवादक–कवि का उद्देश्य यहां कविता का कविता के लिए अनुवाद न होकर कविता के कथ्य का अनुवाद है। अपनी गद्य कृति दोआब के लिए एक लेख में उपयोग के लिए कवि शमशेर ने इकबाल की कविताओं का अनुवाद किया था। अपने इस अनुवाद के माध्यम से अनुवादक–कवि इकबाल को हिंदी पाठकों की व्यापक दुनिया तक पहुँचा रहे थे।

जर्मन कवि बर्तोल्त ब्रेख्त की चर्चित कविता 'Future Generations' का अनुवाद उदाहरण के रूप में सटीक होगा कि कविता का अनुवाद वास्तव में केवल तर्जुमा या भाषांतरण नहीं है, अपितु वह दूसरी भाषा और दूसरी संस्कृति तक विचारों और भावों की वह यात्रा है, जो एक नए भाषा समाज व संस्कृति में जाकर उनकी अपनी हो जाती है तथा मूल की तरह ही असर छोड़ती है। यह तभी संभव है जब कविता की इस यात्रा के पड़ाव में भाषायी अड़चने न पैदा की जाएं और उन्हें सीमाओं से आर–पार जाने–आने की वैसी ही आज़ादी हो, जैसी परिंदों को होती है। इस अनुवाद में अनुवादक स्वीकार कर रहे हैं कि यह उर्दू जबान में उनके द्वारा किया गया भावानुवाद का एक प्रयास है। यहाँ अंग्रेजी को मूल भाषा के रूप में देखा जा रहा है। बानगी देखिए–

मूल कविता (अंग्रेजी में)–

I Confess this :
I have no hope.
The blind talk about an escape.
I see.
When the errors are consumed
The nothing will sit next to us.
as our last companion

उर्दू/हिंदी अनुवाद :

आने वाली नस्लों के लिए
मुझे ये ऐतराफ़ है
कि अब मफर की राह भी नहीं बची
मुझे ये ऐतराफ़ है
कि दिल में अब उम्मीद तक नहीं रही
मुझे ये ऐतराफ़ है
मैं अपनी गलतियाँ भी खर्च कर चुका
मुझे ये ऐतराफ़ है

मैं मर चुका मैं मर चुका मैं मर चुका
सो मेरी ओर से बयाँ है आख़िरी
ख़ला हमारा हमकिराँ है आख़िरी

इस कविता का अनुवाद बकुल देव (साभार : सदानीरा) ने किया है। यद्यपि वे इसे भावानुवाद कह रहे हैं परन्तु अनुवाद में यह कविता मूल सी बन पड़ी है। अंग्रेजी कविता की अंतिम तीन पंक्तियों को अनुवाद के जिस प्रकार अनुवादक ने विस्तार दिया है, वह जहाँ एक ओर अनुवाद की काव्य क्षमता की ओर संकेत करता है, वहीं दूसरी ओर मूल रचना के साथ अनुवादक की तादात्मयता व उर्दू/हिंदी में उसकी प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इकाई के इस भाग में आपने अनुवादकों के समक्ष विभिन्न चुनौतियों के बारे में जाना और यह भी जाना कि इन चुनौतियों का सामना विभिन्न अनुवादकों ने अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से किस तरह किया। साथ ही में हमने कविताओं और उनके अनुवादों के माध्यम से यह भी जाना कि अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों की सहायता से व्यावहारिक रूप में किस प्रकार अनुवाद किया जाता है।

6.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने पढ़ा कि पद्य साहित्य की दो प्रमुख विधाएं हैं – काव्य नाटक तथा कविता। आपने दोनों विधाओं में समानता–असमानता के विभिन्न बिंदुओं का भी अध्ययन किया और पाया कि प्राचीन साहित्य मुख्यतः पद्यात्मक ही लिखा जाता था। इस इकाई के अध्ययन के माध्यम से आपने यह भी पाया कि कविता साहित्य की जटिलतम विधा है और उसका अनुवाद भी उतना ही जटिल है लेकिन प्राचीनकाल से ही काव्य साहित्य का विभिन्न विधाओं तथा पद्धतियों की सहायता से अनुवाद होता रहा है। कविता के अनुवाद को लगभग असंभव कहने वाले अनुवादको–चिंतकों ने प्रचुर मात्रा में कविता का अनुवाद किया और विश्व को विश्व कविता से अवगत करवाया। आज हमारे मानस के निर्माण में इस विश्व कविता और इसके माध्यम से फैली वैचारिकता की महत्वपूर्ण भूमिका है। कविता के अनुवाद को लेकर विभिन्न अनुवादकों ने विभिन्न प्रकार की समस्याएं बताने के साथ–साथ उनके अनुवाद के लिए रास्ते भी तलाशे हैं। प्रस्तुत इकाई में हमने विभिन्न कविताओं और उनके अनुवाद के उदाहरणों के माध्यम से इन विभिन्न रणनीतियों को समझा। आशा है इस इकाई की सहायता से पद्य साहित्य के अनुवाद के विभिन्न आयामों को समझने में सहायता मिलेगी।

6.9 बोध प्रश्न

1. प्राचीन साहित्य अधिकांशतः गद्य में लिखा गया। (सही/गलत)
2. पद्य में लय का आरोह–अवरोह महत्वपूर्ण होता है। (सही/गलत)
3. काव्य नाटक पद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है। (सही/गलत)
4. कविता एक विचारप्रधान विधा है। (सही/गलत)
5. कविता के अनुवाद के लिए अनुवादक का .... होना आवश्यक है। (कवि/सहृदय)

6. भाषा की तीन प्रमुख शब्द शक्तियां अभिधा, ... और व्यंजना है। (लक्षणा / अभिव्यक्ति)
7. कविता अपने समाज की .... में रची बसी होती है। (संस्कृति / प्रयुक्ति)
8. ऑन ट्रांसलेटिंग होमर एज़रा पाउंड की महत्वपूर्ण पुस्तक है। (सही / गलत)
9. हाउ टू रीड ए पोएम के रचनाकार .... हैं। (मैथ्यु अर्नाल्ड / एज़रा पाउंड)
10. अनुवाद में पुनर्लेखन के सिद्धांत के प्रवर्तक .... हैं। (कैटफर्ड / आंद्रे लेफेवेयर)

6.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पद्य साहित्य से क्या अभिप्राय है? पद्य साहित्य की प्रमुख विधाएं कौन–कौन सी हैं?
2. काव्य नाटक और कविता में क्या अंतर है?
3. काव्य नाटक की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. कविता की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. कविता के अनुवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
6. क्या कविता का अनुवाद संभव है? विभिन्न चिंतकों के विचारों के आलोक में चर्चा कीजिए।
7. अपनी किसी एक प्रिय कविता का अनुवाद कीजिए।
8. कविता के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।
9. आंद्रे लेफेवेयर द्वारा बताई गई कविता के अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों का वर्णन कीजिए।
10. आपके अनुसार किस पद्धति से कविता का बेहतर अनुवाद संभव है? अपनी राय व्यक्त कीजिए।

6.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, भोलानाथ एवं चतुर्वेदी, महेंद्र (सं.), काव्यानुवाद की समस्याएं, दिल्ली, शब्दकार प्रकाशन
- कुमार, विजय, क्या कविता का अनुवाद संभव है? www.abhivyakti-hindi.org/rachanaprasang/2012/kya_kavita.htm
- https://www.familyfriendpoems.com/poem/phenomenal-woman-by-maya-angelou
- Benjamin,Walter,The task of translator, http://www.enl.auth.gr/staff/apostolou/the_Translator's_Task.pdf
- Arnold, Matthew: On Translating Homer
- Prosperosisle. org/spip.php? article 903, retrieved on 21 sep.2020.
- www.sadaneera.com retrieved on 21 sep. 2020.

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. गलत
2. सही
3. सही
4. सही
5. सहृदय
6. लक्षणा
7. संस्कृति
8. गलत
9. एजरा पाउंड
10. आंद्रे लेफेवेयर

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY